७

श्री धनमुनि 'प्रथम'

वक्तृत्वकला के बीज

७

वक्तृत्व-कला के बीज

श्री धनमुनि "प्रथम"

[सर्वाधिकार सुरक्षित—प्रबन्ध-संपादक के लिए]

वक्तृत्वकला के बीज

भाग ७

समन्वय-प्रकाशन

सम्पादन-सहयोग :
स्व० श्री भैंरुदानजी बैंद (भादरा)

प्रबन्ध-सम्पादक :
मोतीलाल पारख

प्रकाशक :
श्रीमती मनोहरीदेवी नाहटा,
C/o **जेसराज शोभाचंद**
१६, **जमनालाल बजाज स्ट्रीट**
कलकत्ता—७

संस्करण :
वि० सं० २०३० चैत्र सुदि १३
महावीर जयंती
अप्रेल १९७३
२१०० प्रतियां

मूल्य :
~~चार रुपया पचास पैसे~~
५) ५०

मुद्रक :
संजय साहित्य संगम, आगरा—२ के लिए—
रामनारायन मेड़तवाल
श्री विष्णु प्रिंटिंग प्रेस
राजा की मंडी, आगरा—२ ।

उन जिज्ञासुओं को

जिनकी उर्वर-मनोभूमि में

ये बीज

अंकुरित

पुष्पित

फलित हो

अपना विराट्‌रूप प्राप्त कर सकें !

●

प्राप्तिकेन्द्र :

- जेसराज शोभाचंद
  १६, जमनालाल बजाज स्ट्रीट
  कलकत्ता–७

●

- श्री मोतीलाल पारख
  C/o दि अहमदाबाद लक्ष्मी काटन मिल्स, कं० लि०
  पो० बा० नं० ४२
  अहमदाबाद–२२

●

- श्री सम्पतराय बोरड़
  C/o मदनचंद संपतराय बोरड़
  ४०, धानमंडी,
  श्रीगंगानगर (राजस्थान)

प्राक्कथन

मानव-जीवन में वाचा की उपलब्धि एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। हमारे प्राचीन आचार्यों की दृष्टि में वाचा ही सरस्वती का अधिष्ठान है, **वाचा सरस्वती भिषग्**[1]—वाचा ज्ञान की अधिष्ठात्री होने से स्वयं सरस्वती-रूप है, और समाज के विकृत आचार-विचाररूप रोगों को दूर करने के कारण यह कुशल वैद्य भी है।

अन्तर के भावों को एक दूसरे तक पहुँचाने का एक बहुत बड़ा माध्यम वाचा ही है। यदि मानव के पास वाचा न होती तो, उसकी क्या दशा होती? क्या वह भी मूकपशुओं की तरह भीतर-ही-भीतर घुटकर समाप्त नहीं हो जाता? मनुष्य जो गूँगा होता है, वह अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए कितने हाथ-पैर मारता है, कितना छटपटाता है, फिर भी अपना सही आशय कहां समझा पाता है दूसरों को?

बोलना वाचा का एक गुण है, किंतु बोलना एक अलग चीज है, और वक्ता होना वस्तुतः एक अलग चीज है। बोलने को हर कोई बोलता है, पर वह कोई कला नहीं है, किंतु वक्तृत्व एक कला है। वक्ता साधारण से विषय को भी कितने सुन्दर और मनोहारी रूप से प्रस्तुत करता है कि श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। वक्ता के बोल श्रोता के हृदय में ऐसे उतर जाते हैं कि वह उन्हें जीवन भर नहीं भूलता।

कर्मयोगी श्रीकृष्ण, भगवान्‌महावीर, तथागतबुद्ध, व्यास और भद्रबाहु आदि भारतीय प्रवचन-परम्परा के ऐसे महान् प्रवक्ता थे, जिनकी वाणी का

---

१ यजुर्वेद १६।१२

नाद आज भी हजारों-लाखों लोगों के हृदयों को आप्यायित कर रहा है। महाकाल की तूफानी हवाओं में भी उनकी वाणी की दिव्य ज्योति न बुझी है और न बुझेगी।

हर कोई वाचा का धारक, वाचा का स्वामी नहीं बन सकता। वाचा का स्वामी ही वाग्मी या वक्ता कहलाता है। वक्ता होने के लिए ज्ञान एवं अनुभव का आयाम बहुत ही विस्तृत होना चाहिए। विशाल अध्ययन, मनन-चिंतन एवं अनुभव का परिपाक वाणी को तेजस्वी एवं चिरस्थाई बनाता है। बिना अध्ययन और विषय की व्यापक जानकारी के भाषण केवल भषण (भोंकना) मात्र रह जाता है, वक्ता कितना ही चीखे-चिल्लाये, उछले-कूदे ; यदि प्रस्तावित विषय पर उसका सक्षम अधिकार नहीं है, तो वह सभा में हास्यास्पद हो जाता है, उसके व्यक्तित्व की गरिमा लुप्त हो जाती है। इसलिए बहुत प्राचीनयुग में एक ऋषि ने कहा था—**वक्ता शतसहस्रेषु**', अर्थात् लाखों में कोई एक वक्ता होता है।

शतावधानी मुनिश्री धनराजजी जैनजगत् के यशस्वी प्रवक्ता है। उनका प्रवचन, वस्तुतः प्रवचन होता है। श्रोताओं को अपने प्रस्तावित विषय पर केन्द्रित एवं मन्त्रमुग्ध कर देना उनका सहज कर्म है। और यह उनका वक्तृत्व—एक बहुत बड़े व्यापक एवं गंभीर अध्ययन पर आधारित है। उनका संस्कृत-प्राकृत आदि प्राचीन भाषाओं का ज्ञान विस्तृत है, साथ ही तलस्पर्शी भी ! मालूम होता है, उन्होंने पांडित्य को केवल छुआ भर नहीं है, किन्तु समग्रशक्ति के साथ उसे गहराई से अधिग्रहण किया है। उनकी प्रस्तुत पुस्तक **'वक्तृत्वकला के बीज'** में यह स्पष्ट परिलक्षित होता है।

प्रस्तुत कृति में जैन आगम, बौद्धवाङ्मय, वेदों से लेकर उपनिषद् ब्राह्मण, पुराण, स्मृति आदि वैदिक साहित्य तथा लोककथानक, कहावतें, रूपक, ऐतिहासिक घटनाएँ, ज्ञान-विज्ञान की उपयोगी चर्चाएँ—इस प्रकार शृंखला-बद्धरूप में संकलित हैं कि किसी भी विषय पर हम बहुत कुछ विचार-सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। सचमुच वक्तृत्वकला के अगणित बीज इसमें सन्निहित हैं। सूक्तियों का तो एक प्रकार से यह रत्नाकर ही है। अंग्रेजी

साहित्य व अन्य धर्मग्रंथों के उद्धरण भी काफी महत्वपूर्ण हैं। कुछ प्रसंग और स्थल तो ऐसे हैं, जो केवल सूक्ति और सुभाषित ही नहीं है, उनमें विषय की तलस्पर्शी गहराई भी है और उसपर से कोई भी अध्येता अपने ज्ञान के आयाम को और अधिक व्यापक बना सकता है। लगता है, जैसे मुनिश्री जी वाङ्मय के रूप में विराट् पुरुष हो गए हैं। जहाँ पर भी दृष्टि पड़ती है, कोई-न-कोई वचन ऐसा मिल ही जाता है, जो हृदय को छू जाता है और यदि प्रवक्ता प्रसंगतः अपने भाषण में उपयोग करे, तो अवश्य ही श्रोताओं के मस्तक झूम उठेंगे।

प्रश्न हो सकता है—'वक्तृत्वकला के बीज' में मुनिश्री का अपना क्या है ? यह एक संग्रह है और संग्रह केवल पुरानी निधि होती है; परन्तु मैं कहूंगा—कि फूलों की माला का निर्माता माली जब विभिन्न जाति एवं विभिन्न रंगों के मोहक पुष्पों की माला बनाता है तो उसमें उसका अपना क्या है ? बिखरे फूल, फूल हैं, माला नहीं। माला का अपना एक अलग ही विलक्षण सौन्दर्य है। रंग-बिरंगे फूलों का उपयुक्त चुनाव करना और उनका कलात्मक रूप में संयोजन करना—यही तो मालाकार का काम है, जो स्वयं में एक विलक्षण एवं विशिष्ट कलाकर्म है। मुनिश्री जी वक्तृत्वकला के बीज में ऐसे ही विलक्षण मालाकार हैं। विषयों का उपयुक्त चयन एवं तत्सम्बन्धित सूक्तियों आदि का संकलन इतना शानदार हुआ है कि इस प्रकार का संकलन अन्यत्र इस रूप में नहीं देखा गया।

एक बात और—श्री चन्दनमुनिजी की संस्कृत-प्राकृत रचनाओं ने मुझे यथावसर काफी प्रभावित किया है। मैं उनकी विद्वत्ता का प्रशंसक रहा हूं। श्री धनमुनि जी उनके बड़े भाई हैं—जब यह मुझे ज्ञात हुआ तो मेरे हर्ष की सीमाओं का और भी अधिक विस्तार हो गया। अब कैसे कहूं कि इन दोनों में कौन बड़ा है और कौन छोटा ? अच्छा यही होगा कि एक को दूसरे से उपमित कर दूं। उनकी बहुश्रुतता एवं इनकी संग्रह-कुशलता से मेरा मन मुग्ध हो गया है।

मैं मुनिश्री जी, और उनकी इस महत्वपूर्णकृति का हृदय से अभिनन्दन करता हूं। विभिन्न भागों में प्रकाशित होनेवाली इस विराट् कृति से प्रवचन-कार, लेखक एवं स्वाध्यायप्रेमीजन मुनि श्री के लिए ऋणी रहेंगे। वे जब भी चाहेंगे, वक्तृत्वकला के बीज में से उन्हें कुछ मिलेगा ही, वे रिक्तहस्त नहीं रहेंगे—ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रवक्तृ-समाज—मुनिश्रीजी का एतदर्थ आभारी है और आभारी रहेगा।

जैन भवन
आश्विन शुक्ला-३
आगरा

—उपाध्याय अमरमुनि

मंगल-संदेश

मनुष्य विभिन्न शक्तियों का स्रोत है। नहीं, वह अनन्तशक्तियों का स्रोत है।

पर, जिन-जिन शक्तियों को अभिव्यक्त होने का समय और साधन मिल पाता है वही हमारे सामने विकसित रूप से प्रगट होती है, शेष अनभिव्यक्त रूप में अपना काम करती रहती हैं।

संग्राहक शक्ति भी उन्हीं में से एक है, जो अन्वेषण-प्रधान है और दूसरों के लिए बहुत उपयोगी बन जाती है।

मक्खन का आस्वादन करना एक बात है, पर उसे दही में से मथकर निकालकर संग्रहीत करना एक विशिष्ट शक्ति है।

मुनिश्री धनराजजी (सिरसा) में यह शक्ति अच्छी विकसित हुई है। शुरू से ही उनकी यह धुन रही है, आदत रही है, वे बराबर किसी न किसी रूप में खोज करते रहते हैं और फिर उसको संग्रहीत कर एक आकार दे देते हैं। वह साहित्य बन जाता है, जन-जन की खुराक बन जाता है।

"वक्तृत्वकला के बीज" एक ऐसी ही कृति हमारे समक्ष प्रस्तुत है जो मुनि धनराजजी की संग्राहकशक्ति का एक विशिष्ट उदाहरण है। उसमें प्राचीन, अर्वाचीन अनेक ग्रन्थों का मन्थन है, अनेक भाषाओं का प्रयोग है। मूल उद्धरण के साथ हिन्दी अनुवाद देकर और सरसता उसमें लाई गई है। बड़ा सुन्दर प्रयास है। अपनी वक्तृत्वकला का विकास चाहनेवाले वक्ता के लिए बहुत उपयोगी है यह ग्रन्थ, जो अनेक भागों में विभक्त है। मेरा विश्वास है—यह प्रयत्न बहुजन हिताय—बहुजन सुखाय सिद्ध होगा।

चूरू

११ सितम्बर १९७२

—आचार्य तुलसी

सम्पादकीय

वक्तृत्वगुण एक कला है, और वह बहुत बड़ी साधना की अपेक्षा करता है। आगम का ज्ञान, लोकव्यवहार का ज्ञान, लोकमानस का ज्ञान और समय एवं परिस्थितियों का ज्ञान तथा इन सबके साथ निस्पृहता, निर्भयता, स्वर की मधुरता, ओजस्विता आदि गुणों की साधना एवं विकास से ही वक्तृत्वकला का विकास हो सकता है, और ऐसे वक्ता वस्तुतः हजारों लाखों में कोई एकाध ही मिलते हैं।

तेरापंथ के अधिशास्ता युगप्रधान आचार्य श्रीतुलसी में वक्तृत्वकला के ये विशिष्ट गुण चमत्कारी ढंग से विकसित हुए हैं। उनकी वाणी का जादू श्रोताओं के मन-मस्तिष्क को आन्दोलित कर देता है। भारतवर्ष की सुदीर्घ पदयात्राओं के मध्य लाखों नर-नारियों ने उनकी ओजस्विनी वाणी सुनी है और उसके मधुर प्रभाव को जीवन में अनुभव किया है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक मुनिश्री धनराजजी भी वास्तव में वक्तृत्वकला के महान गुणों के धनी एक कुशल प्रवक्ता संत हैं। वे कवि भी हैं, गायक भी हैं, और तेरापंथ शासन में सर्वप्रथम अवधानकार भी है; इन सबके साथ-साथ बहुत बड़े विद्वान् तो हैं ही। उनके प्रवचन जहां भी होते हैं, श्रोताओं की अपार भीड़ उमड़ आती है। आपके विहार करने के बाद भी श्रोता आपकी याद करते रहते हैं।

आपकी भावना है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी वक्तृत्वकला का विकास करे और उसका सदुपयोग करे, अतः जनसमाज के लाभार्थ आपने वक्तृत्व के योग्य विभिन्न सामग्रियों का यह विशाल संग्रह प्रस्तुत किया है।

बहुत समय से जनता की विद्वानों की और वक्तृत्वकला के अभ्यासियों की मांग थी कि इस दुर्लभ सामग्री का जनहिताय प्रकाशन किया जाय तो बहुत लोगों को लाभ मिलेगा। जनता की भावना के अनुसार हमने मुनिश्री की इस सामग्री को धारना प्रारंभ किया। इस कार्य को सम्पन्न करने में श्री डूंगरगढ़, मोमासर, भादरा, हिसार, टोहाना, उकलाना, कैथल, हांसी, भिवानी, तोसाम, ऊमरा, सिसाय, जमालपुर, सिरसा और भटिंडा आदि के विद्यार्थियों एवं युवकों ने अथक परिश्रम किया है। फलस्वरूप लगभग सौ कापियों में यह सामग्री संकलित हुई है। हम इस विशाल संग्रह को विभिन्न भागों में प्रकाशित करने का संकल्प लेकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हुए है।

परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर ने पुस्तक के लिए अपना **मंगल-संदेश** देकर इस प्रयत्न को प्रोत्साहित किया—उनके प्रति मैं हृदय की असीम श्रद्धा व्यक्त करता हूं। तथा पुस्तक की महत्ता और उपयोगिता के अनुसार ही इसकी भूमिका लिखी है जैनसमाज के बहुश्रुत विद्वान् तटस्थ विचारक उपाध्याय श्री अमर-मुनि जी ने। उनके इस अनुग्रह का मैं हृदय से आभारी हूं।

इसके प्रकाशन का समस्त भार श्रीमती मनोहरीदेवी नाहटा, C/o जेसराज शोभाचंद १६, जमनालाल बजाज स्ट्रीट कलकत्ता ने वहन किया है, इस अनुकरणीय उदारता के लिए हम उनके अत्यंत आभारी हैं। इसके प्रकाशन एवं प्रूफ संशोधन-मुद्रण आदि की समस्त व्यवस्था 'संजय-साहित्य-संगम' के संचालक श्रीचन्द जी सुराना 'सरस' ने की है, तथा अन्य सहयोगियों का जो हार्दिक सहयोग प्राप्त हुआ है—उसके लिए भी हम हृदय से कृतज्ञता-ज्ञापित करते हैं। आशा है यह पुस्तक जन-जन के लिए, वक्ताओं और लेखकों के लिए एक संदर्भग्रंथ (बिब्लोग्राफी) का काम देगी और युग-युग तक इसका लाभ मिलता रहेगा।....

●●

आत्म निवेदन

'मनुष्य की प्रकृति का बदलना अत्यन्त कठिन है'—यह सूक्ति मेरे लिए सवा सोलह आना ठीक साबित हुई। बचपन में जब मैं कलकत्ता—श्री जैनश्वेताम्वर-तेरापंथी-विद्यालय में पढ़ता था, जहाँ तक याद है, मुझे जलपान के लिए प्रायः प्रति-दिन एक आना मिलता था। प्रकृति में संग्रह करने की भावना अधिक थी, अतः मैं खर्च करके भी उसमें से कुछ न कुछ बचा ही लेता था। इस प्रकार मेरे पास कई रुपये इकट्ठे हो गये थे और मैं उनको एक डिब्बी में रखा करता था।

विक्रम संवत् १९७९ में अचानक माताजी की मृत्यु होने से विरक्त होकर हम (पिता श्री केवलचन्द जी, मैं, छोटी बहन दीपांजी और छोटे भाई चन्दनमल जी) परमकृपालु श्रीकालुगणीजी के पास दीक्षित हो गए। यद्यपि दीक्षित होकर रुपयों-पैसों का संग्रह छोड़ दिया, फिर भी संग्रहवृत्ति नहीं छूट सकी। वह धनसंग्रह से हटकर ज्ञानसंग्रह की ओर झुक गई। श्री कालुगणी के चरणों में हम अनेक बालक मुनि आगम-व्याकरण-काव्य-कोष आदि पढ़ रहे थे। लेकिन मेरी प्रकृति इस प्रकार की बन गई थी कि जो भी दोहा-छन्द-श्लोक-ढाल-व्याख्यान-कथा आदि सुनने या पढ़ने में अच्छे लगते, मैं तत्काल उन्हें लिख लेता या संसार-पक्षीय पिताजी से लिखवा लेता। फलस्वरूप उपरोक्त सामग्री का काफी अच्छा संग्रह हो गया। उसे देखकर अनेक मुनि विनोद की भाषा में कह दिया करते थे कि "धन्नू तो न्यारा में जाने की [अलग विहार करने की] तैयारी कर रहा है।" उत्तर में मैं कहा करता—क्या आप गारंटी दे सकते हैं कि इतने (१० या १५) साल तक आचार्य श्री हमें अपने साथ ही

रखेंगे ? क्या पता, कल ही अलग विहार करने का फरमान करदें ! व्याख्यानादि का संग्रह होगा तो धर्मोपदेश या धर्म-प्रचार करने में सहायता मिलेगी।

समय-समय पर उपरोक्त साथी मुनियों का हास्य-विनोद चल ही रहा था कि वि० सं० १९८६ में श्री कालुगणी ने अचानक ही श्रीकेवलमुनि को अग्रगण्य बनाकर रतननगर (थेलासर) चातुर्मास करने का हुक्म दे दिया। हम दोनों भाई (मैं और चन्दन मुनि) उनके साथ थे। व्याख्यान आदि का किया हुआ संग्रह उस चातुर्मास में बहुत काम आया एवं भविष्य के लिए उत्तमोत्तम ज्ञानसंग्रह करने की भावना बलवती बनी। हम कुछ वर्ष तक पिताजी के साथ विचरते रहे। उनके दिवंगत होने के पश्चात् दोनों भाई अग्रगण्य के रूप में पृथक्-पृथक् विहार करने लगे।

विशेष प्रेरणा—एक बार मैंने 'वक्ता बनो' नाम की पुस्तक पढ़ी। उस में वक्ता बनने के विषय में खासी अच्छी बातें बताई हुई थीं। पढ़ते-पढ़ते यह पंक्ति दृष्टिगोचर हुई कि "कोई भी ग्रन्थ या शास्त्र पढ़ो, उसमें जो भी बात अपने काम की लगे, उसे तत्काल लिख लो।" इस पंक्ति ने मेरी संग्रह करने की प्रवृत्ति को पूर्वापेक्षया अत्यधिक तेज बना दिया। मुझे कोई भी नई युक्ति, सूक्ति या कहानी मिलती, उसे तुरन्त लिख लेता। फिर जो उनमें विशेष उपयोगी लगती, उसे औपदेशिक भजन, स्तवन या व्याख्यान के रूप में गूंथ लेता। इस प्रवृत्ति के कारण मेरे पास अनेक भाषाओं में निबद्ध स्वरचित सैकड़ों भजन और सैकड़ों व्याख्यान इकट्ठे हो गए। फिर जैन-कथा साहित्य एवं तात्त्विकसाहित्य की ओर रुचि बढ़ी। फलस्वरूप दोनों ही विषयों पर अनेक पुस्तकों की रचना हुई। उनमें छोटी-बड़ी लगभग २० पुस्तकें तो प्रकाश में आ चुकीं, शेष ३०-३२ अप्रकाशित ही हैं।

एक बार संगृहीत-सामग्री के विषय में यह सुझाव आया कि यदि प्राचीन संग्रह को व्यवस्थित करके एक ग्रन्थ का रूप दे दिया जाए, तो यह उत्कृष्ट उपयोगी चीज बन जाए। मैंने इस सुझाव को स्वीकार किया और अपने प्राचीन-संग्रह को व्यवस्थित करने में जुट गया। लेकिन पुराने संग्रह में कौन-सी सूक्ति, श्लोक या हेतु किस ग्रन्थ या शास्त्र के हैं अथवा किस कवि,

वक्ता या लेखक के हैं—यह प्रायः लिखा हुआ नहीं था। अतः ग्रन्थों या शास्त्रों आदि की साक्षियां प्राप्त करने के लिए—इन आठ-नौ वर्षों में वेद, उपनिषद्, इतिहास, स्मृति, पुराण, कुरान, बाइबिल, जैनशास्त्र, बौद्धशास्त्र, नीतिशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, स्वप्नशास्त्र, शकुनशास्त्र, दर्शन-शास्त्र, संगीत शास्त्र तथा अनेक हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, राजस्थानी, गुजराती, मराठी एवं पंजाबी सूक्तिसंग्रहों का ध्यानपूर्वक यथासम्भव अध्ययन किया। उससे काफी नया संग्रह बना और प्राचीन संग्रह को साक्षी सम्पन्न बनाने में सहायता मिली। फिर भी खेद है कि अनेक सूक्तियां एवं श्लोक आदि बिना साक्षी के ही रह गए। प्रयत्न करने पर भी उनकी साक्षियां नहीं मिल सकीं। जिन-जिन की साक्षियां मिली हैं, उन-उनके आगे वे लगा दी गई हैं। जिनकी साक्षियां उपलब्ध नहीं हो सकीं, उनके आगे स्थान रिक्त छोड़ दिया गया है। कई जगह प्राचीन-संग्रह के आधार पर केवल महाभारत, वाल्मीकिरामायण, योग-शास्त्र आदि महान् ग्रन्थों के नाममात्र लगाए हैं, अस्तु!

इस ग्रन्थ के संकलन में किसी भी मत या सम्प्रदाय विशेष का खण्डन-मण्डन करने की दृष्टि नहीं है, केवल यही दिखलाने का प्रयत्न किया गया है कि कौन क्या कहता है या क्या मानता है? यद्यपि विश्व के विभिन्न देशनिवासी मनीषियों के मतों का संकलन होने से ग्रन्थ में भाषा की एकरूपता नहीं रह सकी है। कहीं प्राकृत-संस्कृत, पारसी, उर्दू एवं अंग्रेजी भाषा है तो कहीं हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, पंजाबी और बंगाली भाषा के प्रयोग हैं, फिर भी कठिन भाषाओं के श्लोक, वाक्य आदि का अर्थ हिन्दी भाषा में कर दिया गया है। दूसरे प्रकार से भी इस ग्रन्थ में भाषा की विविधता है। कई ग्रन्थों, कवियों, लेखकों एवं विचारकों ने अपने सिद्धान्त निरवद्यभाषा में व्यक्त किए हैं तो कई साफ-साफ सावद्यभाषा में ही बोले हैं। मुझे जिस रूप में जिसके जो विचार मिले हैं, उन्हें मैंने उसी रूप में अंकित किया है लेकिन मेरा अनुमोदन केवल निर्वद्य-सिद्धान्तों के साथ है।

ग्रन्थ की सर्वोपयोगिता—इस ग्रन्थ में उच्चस्तरीय विद्वानों के लिए जहाँ जैन-बौद्ध आगमों के गम्भीर पद्य हैं, वेदों, उपनिषदों के अद्भुत मंत्र हैं,

स्मृति एवं नीति के हृदयग्राही श्लोक हैं, वहाँ सर्वसाधारण के लिए सीधी-सादी भाषा के दोहे, छन्द, सूक्तियां, लोकोक्तियां, हेतु, दृष्टान्त एवं छोटी-छोटी कहानियाँ भी हैं। अतः यह ग्रन्थ निःसंदेह हर एक व्यक्ति के लिए उपयोगी सिद्ध होगा—ऐसी मेरी मान्यता है। वक्ता, कवि और लेखक इस ग्रन्थ से विशेष लाभ उठा सकेंगे, क्योंकि इसके सहारे वे अपने भाषण, काव्य और लेख को ठोस, सजीव, एवं हृदयग्राही बना सकेंगे एवं अद्भुत विचारों का विचित्र चित्रण करके उनमें निखार ला सकेंगे, अस्तु !

ग्रन्थ का नामकरण—इस ग्रन्थ का नाम 'वक्तृत्वकला के बीज' रखा गया है। वक्तृत्वकला की उपज के निमित्त यहां केवल बीज इकट्ठे किए गए हैं। बीजों का वपन किसलिए, कैसे, कब और कहां करना—यह वप्ता [बीज बोनेवालों] की भावना एवं बुद्धिमत्ता पर निर्भर करेगा। फिर भी मेरी मनोकामना तो यही है कि वप्ता परमात्मपदप्राप्तिरूप फलों के लिए शास्त्रोक्तविधि से अच्छे अवसर पर उत्तम क्षेत्रों में इन बीजों का वपन करेंगे। अस्तु !

यहां मैं इस बात को भी कहे बिना नहीं रह सकता कि जिन ग्रन्थों, लेखों, समाचार पत्रों एवं व्यक्तियों से इस ग्रन्थ के संकलन में सहयोग मिला है—वे सभी सहायकरूप से मेरे लिए चिरस्मरणीय रहेंगे।

यह ग्रन्थ कई भागों में विभक्त है एवं उनमें सैकड़ों विषयों का संकलन है। उक्त संग्रह बालोतरा मर्यादा-महोत्सव के समय मैंने आचार्यश्री तुलसी को भेंट किया। उन्होंने देखकर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की एवं फरमाया कि इसमें छोटी-छोटी कहानियाँ एवं घटनाएँ भी लगा देनी चाहिये ताकि विशेष उपयोगी बन जाएं। आचार्यश्री का आदेश स्वीकार करके इसे संक्षिप्त कहानियाँ तथा घटनाओं से सम्पन्न किया गया।

मुनि श्री चन्दनमलजी, डूंगरमलजी, नथमलजी, नगराज जी, मधुकरजी, राकेशजी, रूपचन्दजी आदि अनेक साधु एवं साध्वियों ने भी इस ग्रन्थ को विशेष उपयोगी माना। बीदासर महोत्सव पर कई संतों का यह अनुरोध रहा कि इस संग्रह को अवश्य धरा दिया जाए !

सर्व प्रथम वि० स० २०२३ में श्री डूँगरगढ़ के श्रावकों ने इसे धारना शुरू किया। फिर थली, हरियाणा एवं पंजाब के अनेक ग्रामों-नगरों के उत्साही युवकों के तीन वर्षों के अथकपरिश्रम से धारकर इसे प्रकाशन के योग्य बनाया।

मुझे दृढ़ विश्वास है कि पाठकगण इसके अध्ययन, चिन्तन एवं मनन से अपने बुद्धि वैभव को क्रमशः बढ़ाते जायेंगे—

वि० सं० २०२७, मृगसर बदी ४
मङ्गलवार, रामामंडी, (पंजाब)

—धनमुनि 'प्रथम'

अनुक्रमणिका

पहला कोष्ठक : पृष्ठ १ से ६५ तक

१ भावना, २ भावना की प्रमुखता, ३ भावनानुसार फल, ४ भावना से लाभ, ५ भावना के भेद, ६ अनित्य-भावना, ७ अशरणभावना, ८ एकत्व-भावना, ९ भाषा-वाणी, १० देशी-विदेशी भाषा, ११ विश्व की भाषाओं के विषय में ज्ञातव्य, १२ भाषा के प्रकार, १३ वाणी का फल, १४ वाणी की महिमा, १५ वाणी का प्रभाव, १६ 'किन्तु' शब्द की करामात, १७ वाणी-वाणी में अन्तर, १८ मीठी वाणी, १९ सुभाषित-सूक्ति, २० बोलनेयोग्य वाणी, २१ विचारयुक्त वाणी, २२ समयोपयोगी वाणी, २३ संक्षिप्तवाणी, २४ परित्याग करने योग्य वाणी, २५ कटुवाणी, २६ कटुवाणी-निषेध, २७ मर्मघातक-वाणी, २८ वाद, २९ वाद के प्रकार, ३० विवाद, ३१ विवाद-निषेध, ३२ वाचालता, ३३ वाचाल, ३४ गप्पी और गप्पें, ३५ हाँ में हाँ मिलानेवाले।

दूसरा कोष्ठक : पृष्ठ ६६ से ११८ तक

१ वक्ता, २ वक्ता बनने के उपाय, ३ वक्ता को ध्यान देने योग्य बातें, ४ वक्ताओं की तरकीबें, ५ प्रभावशाली वक्ता, ६ लम्बा भाषण करनेवाले वक्ता, ७ यश के भूखे वक्ता, ८ मूर्ख वक्ता, ९ वक्तृत्वकला, १० वक्तृत्वकला की सामग्री, ११ भाषण, १२ बात, १३ हंसी आनेवाली बातें, १४ बात करते समय सावधानी, १५ बात का निर्वाह, १६ कहावतें, १७ मौन, १८ मौन की प्रेरणा, १९ मौन की महिमा, २० मौन से लाभ, २१ श्रवण-सुनना, २२ श्रवण का असर, २३ श्रोता, २४ योग्य श्रोता, २५ अयोग्य श्रोता, २६ मूर्ख श्रोता, २७ निद्रालु श्रोता।

तीसरा कोष्ठक : पृष्ठ ११६ से १६५

१ शरीर, २ शरीर के अन्दर, ३ शरीर का महत्व, ४ शरीर की अनित्यता, ५ शरीर की निन्दनीयता, ६ शरीर की उपमाएं, ७ शरीर का व्यायाम, ८ शरीर का वेग, ६ वस्त्र-आभूषण, १० स्वास्थ्य-आरोग्य, ११ स्वस्थ-नीरोग, १२ रोग, १३ रोग के प्रकार, १४ रोगी, १५ रोगी की सेवा, १६ औषधि, १७ कतिपय औषधियाँ, १८ उत्तम औषधियाँ, १६ पथ्य, २० वैद्य, २१ वैद्यों के प्रकार, २२ श्रेष्ठ-वैद्य २३ निकृष्ट-वैद्य, २४ चिकित्सा, २५ आयुर्वेद एवं नाड़ी-विज्ञान आदि, २६ जन्म, २७ जन्म-सम्बन्धी अनोखी-प्रथाएं, २८ पुर्नजन्म की वास्तविकता, २६ गर्भ, ३० सोलह-संस्कार, ३१ बालक, ३२ बालकों के गुण और दोष, ३३ बालकों के निर्माण की कुछ विधियाँ, ३४ जन्म-मृत्यु एवं बाल-मृत्यु, ३५ बालकों को बिगाड़ने एवं सुधारनेवाले अभिभावक, ३६ बालकों की सरलता, ३७ बालकों की उच्छृंखलता, ३८ आश्चर्यकारी बालक-बालिकाएं ।

चौथा कोष्ठक : पृष्ठ १६६ से २५६ तक

१ यौवन, २ यौवन का अनर्थकारित्व. ३ जरा-वृद्धावस्था, ४ वृद्ध, ५ वृद्धों का सम्मान, ६ वृद्धों के प्रकार, ७ वृद्ध ऐसा चिन्तन करें, ८ जीवन, ६ जीवन के हेतु आदि, १० जीवन की अस्थिरता, ११ जीवन से लाभ, १२ श्रेष्ठ-जीवन, १३ निकृष्ट-जीवन, १४ आयु १५ लम्बी आयुवाले व्यक्ति, १६ कतिपय देशों की औसत आयु, १७ आयुक्षय, १८ मरण, १६ मृत्यु की निर्दयता, २० मृत्यु की अप्रियता, २१ मृत्यु-विज्ञान, २२ मृत्यु का भय, २३ मरते समय भी निर्भय, २४ उत्ताम-मरण, २५ अमरत्व, २६ मरने के बाद, २७ मरण के भेद आदि, २८ आत्महत्या, २६ अन्तिम-संस्कार की अनोखी प्रथाएं ।

चारों कोष्ठकों में कुल १२६ विषय तथा दस भागों में लगभग १५०० विषय-उपविषय हैं ।

वक्तृत्वकला के बीज

[भाग ७]

अकारादि क्रम-विषयानुक्रमणिका

अमरत्व	२४३
अन्तिम-संस्कार की अनोखी-प्रथाएं	२५२
अनित्यभावना	८
अशरणभावना	११
अयोग्यश्रोता	११४
आत्महत्या	२५०
आयु	२२२
आयुर्वेद एवं नाड़ी विज्ञान आदि	१६४
आयु-क्षय	२३१
आश्चर्यकारी बालक-बालिकाएं	१६२
औषधि	१५०
उत्तम-औषधियां	१५३
उत्तम-मरण	२४२
एकत्व-भावना	१४
कटुवाणी	४८
कटुवाणी-निषेध	४६
कतिपय औषधियां	१५१
कतिपय देशों की औसत-आयु	२२६
कहावतें	६७
'किन्तु' शब्द की करामात	२६
गप्पी और गप्पें	६१
गर्भ	१७३
चिकित्सा	१६१
जन्म	१६६
जन्म-सम्बन्धी अनोखी-प्रथाएं	१६७
जन्म-मृत्यु एवं बाल-मृत्यु	१८३
जरा-वृद्धावस्था	१६८
जीवन	२११
जीवन की अस्थिरता	२१४
जीवन के हेतु आदि	२१३
जीवन से लाभ	२१६
देशी-विदेशी भाषा	१७
निकृष्ट-जीवन	२२०
निकृष्ट-वैद्य	१५६
निद्रालु-श्रोता	११८
पथ्य	१५४
परित्याग करने योग्य वाणी	४६
प्रभावशाली वक्ता	७१
पुनर्जन्म की वास्तविकता	१७०
बात	८६
बात करते समय सावधानी	६३

बात का निर्वाह	६६	मीठी-वाणी	३३
बालक	१७६	मूर्ख-वक्ता	७८
बालकों की उच्छृंखलता	१६१	मूर्ख-श्रोता	११६
बालकों की सरलता	१८८	मौन	६८
बालकों के गुण और दोष	१७८	मौन की प्रेरणा	६६
बालकों के निर्माण की कुछ विधियां	१८०	मौन की महिमा	१०१
		मौन से लाभ	१०३
बालकों को बिगाड़ने एवं सुधारनेवाले अभिभावक	१८५	यश के भूखे वक्ता	७६
		योग्य-श्रोता	११२
बोलने योग्य वाणी	३८	यौवन	११६
भावना	१	यौवन का अनर्थकारित्व	१६८
भावना के भेद	७	रोग	१४३
भावना की प्रमुखता	३	रोग के प्रकार	१४५
भावनानुसार फल	४	रोगी	१४७
भावना से लाभ	६	रोगी की सेवा	१४६
भाषण	८७	लम्बा भाषण करनेवाले-वक्ता	७४
भाषा के प्रकार	२१	लम्बी आयुवाले व्यक्ति	२२५
भाषा-वाणी	१६	वक्ता	६६
मरण	२३४	वक्ताओं की तरकीबें	७०
मरण के भेद आदि	२४८	वक्ता के ध्यान देने योग्य बातें	६६
मरते समय भी निर्भय	२४१		
मरने के बाद	२४४		
मर्मघातक वाणी	५०	वक्तृत्वकला	७६
मृत्यु का भय	२४०	वक्तृत्वकला की सामग्री	८०
मृत्यु की अप्रियता	२३८	वक्ता बनने के उपाय	६८
मृत्यु की निर्दयता	२३६	वस्त्र-आभूषण	१३५
मृत्यु-विज्ञान	२३६	वाचाल	५६

वाचालता ५७
वाणी का प्रभाव २४
वाणी का फल २२
वाणी की महिमा २३
वाणी-वाणी में अन्तर ३२
वाद ५१
वाद के प्रकार ५२
विचारयुक्त वाणी ४०
विवाद ५४
विवाद-निषेध ५६
विश्व की भाषाओं के विषय में ज्ञातव्य १८
वृद्ध २०२
वृद्ध ऐसा चिन्तन करें ! २०६
वृद्धों का सम्मान २०५
वृद्धों के प्रकार २०३
वैद्य १५५
वैद्यों के प्रकार १५७
शरीर ११६
शरीर का महत्व १२६
शरीर का व्यायाम १३२
शरीर का वेग १३४
शरीर की अनित्यता १२८
शरीर की उपमाएं १३१
शरीर की निंदनीयता १३०
शरीर के अन्दर १२२
श्रवण-सुनना १०४
श्रवण का असर १०६
श्रेष्ठजीवन २१७
श्रेष्ठ-वैद्य १५८
श्रोता ११०
स्वस्थ-नीरोग १४०
स्वास्थ्य-आरोग्य १३८
समयोपयोगी वाणी ४२
सुभाषित-सूक्ति ३६
सोलह-संस्कार १७५
संक्षिप्तवाणी ४५
हंसी आनेवाली बातें ६१
हां में हां मिलानेवाले ६४

भाग सातवाँ

वक्तृत्वकला के बीज

पहला कोष्ठक

१ भावना

१ भाव्यतेऽनयेति भावना ।
जिससे आत्मा भावित होती है, उसे भावना कहते हैं ।

२ चेतो विशुद्धये मोहक्षयाय स्थैर्यापादनाय,
विशिष्टं संस्कारापादनं भावना ।

—मनोनुशासन ३।२०

चित्तशुद्धि, मोहक्षय तथा अहिंसा-सत्य आदि की वृत्ति को टिकाने के लिए आत्मा में जो विशिष्ट संस्कार जागृत किए जाते हैं, उसे भावना कहते हैं ।

३ येन-येन यथा यद्-यद्, यथा संवेद्यतेऽनघ !
तेन-तेन तथा तत्तात्, तथा समनुभूयते ।।

—योगवाशिष्ठ

जिसका, जिस प्रकार से जो-जो संवेदन होता है, उसको उसी प्रकार से वैसा ही अनुभव होने लगता है ।

४ अमृतत्वं विषं याति, सदैवामृतवेदनात् ।
शत्रुर्मित्रत्वमायाति, मित्रसंवित्तिवेदनात् ।।

—योगवाशिष्ठ

सदा अमृतरूप में चिन्तन करने से विष भी अमृत बन जाता है, तथा मित्रदृष्टि से देखने पर शत्रु भी मित्ररूप में परिणत हो जाता है ।

५ जे जत्तिया य हेउ भवस्स, ते चेव तत्तिया मुक्खे ।

—ओघनिर्युक्ति ५२

राग-द्वेषयुक्त गमन-निरीक्षण-जल्पन आदि जितने भी काम संसार के हेतु हैं, वे ही राग-द्वेष रहित हों तो मुक्ति के हेतु बन जाते हैं।

६ यत्र-यत्र मनो देही, धारयेत् सकलं धिया।
स्नेहाद् द्वेषाद् भयाद् वापि, याति तत्तत्स्वरूपताम्॥

—श्रीमद्भागवत

प्राणी स्नेह, द्वेष या भय से अपने मन को बुद्धि द्वारा जहां-जहां लगाता है, मन वैसा ही—अर्थात् स्नेही, द्वेषी व भयाकुल बन जाता है।

●

२ भावना की प्रमुखता

१ वित्तेन दीयते दानं, शीलं सत्त्वेन पाल्यते।
तपोऽपि तप्यये कष्टात्, स्वाधीनोत्तमभावना ।।

दान धन से दिया जाता है, शील सत्त्व से पाला जाता है, तप भी कष्ट से तपा जाता है, किन्तु उत्तम भावना स्वतन्त्र है ।

२ न देवो विद्यते काष्ठे, न पाषाणे न मृन्मये।
भावेषु विद्यते देव-स्तस्माद् भावो हि कारणम् ।।

—**चाणक्यनीति ८।११**

भगवान् न तो काष्ठ में है, न पत्थर में है और न मिट्टी में है। भगवान् का निवास पवित्रभावना में है, अतः भगवत्प्राप्ति का मुख्यकारण भावना ही है ।

३ मूर्खो वदति विष्णोय, धीरो वदति विष्णवे ।
उभयोस्तु समं पुण्यं, भावग्राही जनार्दनः ।।

मूर्ख **'नमो विष्णोय'** कहता है, और विद्वान् **'नमो विष्णवे'** कहता है, लेकिन दोनों को समान पुण्य होता है। क्योंकि विष्णुभगवान् मुख्यतया भावना के भूखे हैं।

४ जे आसवा ते परिसवा, जे परिसवा ते आसवा।

—**आचारांग ४।२**

जो आस्रव-कर्मप्रवेश के हेतु हैं, वे भावना की पवित्रता से परिस्रव-कर्म रोकनेवाले हो जाते हैं और जो परिस्रव हैं, वे भावना की अपवित्रता से आस्रव हो जाते हैं।

५ परिणामो बन्धः परिणामो मोक्षः ।

परिणाम ही बन्ध है एवं परिणाम ही मोक्ष है।

३ भावनानुसार फल

१ यादृशी भावना यस्य, सिद्धिर्भवति तादृशी ।
याद्दशास्तन्तवः कामं, तादृशो जायते पटः ।।
जिसकी जैसी भावना होती है, वैसी ही सिद्धि होती है । जैसे तंतु (तार) होते हैं, वैसा ही कपड़ा बनता है ।

२ मन्त्रे तीर्थे द्विजे देवे, दैवज्ञे भेषजे गुरौ ।
यादृशी भावना यस्य, सिद्धिर्भवति तादृशी ।।

—स्कन्दपुराण

मन्त्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, नैमित्तिक, औषधि और गुरु—इन सबमें जिसकी जैसी भावना होती है, प्रायः वैसी ही सिद्धि-फलप्राप्ति होती है ।

३ दुग्धं देयानुसारेण, कृषिर्मेघानुसारतः ।
लाभो द्रव्यानुसारेण, पुण्यं भावानुसारतः ।।
खुराक के अनुसार गाय-भैंस का दूध होता है, मेह के अनुसार खेती होती है माल के अनुसार लाभ होता है और भावना के अनुसार पुण्य होता है ।

४ अन्ते मतिः सा गतिः । —संस्कृत कहावत
मरते समय जो भावना होती है, वैसी ही गति होती है ।

५ दानत जैसी बरकत ।
• जिसकी दानत बुरी, उसके गले छुरी ।

—हिन्दी कहावतें

६ तालीम का शोर इतना, तहजीब का गुल इतना ।
बरकत जो नहीं होती, नीयत की खराबी है ।

—अकबर

७ वृत्त-सुवृत्त दो भाई प्रयाग गए, वृष्टि आई। एक वेश्या के घर एवं दूसरा माधव के मन्दिर गया। पहला वेश्या के यहाँ गीत-नृत्य में ध्यान न लगा कर, भगवान् को स्मरता रहा और दूसरा मन्दिर में बैठा-बैठा वेश्या को याद करता रहा। वापिस आते समय दोनों पर बिजली पड़ी एवं मरे। दोनों को लेने क्रमशः विष्णुदूत और यमदूत आए एवं उन्हें स्वर्ग-नरक में ले गए।

—वायुपुराण, अध्याय २१

८ दो मुनि प्रवचन कर रहे हैं—एक की भावना धर्मप्रचार की है और दूसरे की विद्वत्ता दिखाने की है। फल भिन्न-भिन्न होगा।

९ दोय जणां बीज बावण ने जाय, मारग में मिलिया मुनिराय।
एक देख नैं हूवो खुशी, इणरा माथा जिसा सिट्टा हुसी।
बीजो मन में करे विचार, मोडो मिलियो मार्ग मझार।
मस्तक मुंड पाग सिर नांही, कड़ब हुसी पण सिट्टा नांहि।

—राजस्थानी-पद्य

दो किसान बाजरी बोने के लिए खेत जा रहे थे। रास्ते में साधु मिले। एक उन्हें देखकर खुश हुआ एवं सोचने लगा कि नंगे सिर साधु मिले हैं,अतः इनके सिर जितने बड़े-बड़े सिट्टे होंगे। शकुन बहुत अच्छे हुए हैं। दूसरा साधु को देखकर अपशकुन की कल्पना करने लगा कि इनके सिर पर पगड़ी नहीं है, इसलिए केवल कड़बी होगी, सिट्टे बिल्कुल नहीं होंगे। भावना के अनुसार फल हुआ, पहले के खेत में खूब बाजरी हुई और दूसरे के खेत में टिड्डियाँ आने से सारे सिट्टे नष्ट हो गये।

४ भावना से लाभ

१ भावसच्चेणं भावविसोहिं जणयइ। भावविसोहिए वट्टमाणे अरिहंतपन्नत्तास्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्टेइ-अब्भुट्ठेइत्ता परलोग-धम्मस्स आराहए भवइ।

—उत्तराध्ययन २९।५०

भाव की सत्यता से जीव भावों की विशुद्धि को प्राप्त करता है। विशुद्ध-भावनावाला जीव अरिहंत-प्रणीत धर्म की आराधना में तत्पर होकर पारलौकिक धर्म का आराधक होता है।

२ भावणाजोग-सुद्धप्पा, जले नावा व आहिया।
नावा व तीरसंपन्ना, सव्वदुक्खा विमुच्चइ॥

—सूत्रकृतांग १५।५

भावना-योग से शुद्धआत्मा संसार में जल पर नाव के समान तैरती है। जैसे—अनुकूल पवन का सहारा मिलने से नाव पार पहुंचती है, उसी प्रकार उपर्युक्त शुद्धआत्मा संसार से पार पहुंचती है।

५ भावना के भेद

१ दुविहाओ भावणाओ-संकिलिट्ठा य, असंकिलिट्ठा य ।

—बृहत्कल्प १।२।४६३

दो प्रकार की भावनायें कही हैं—
संक्लिष्ट—अशुभ, असंक्लिष्ट—शुभ ।

२ **बारह भावनाएँ—**

अनित्यताशरणते, भवमेकत्वमन्यताम् ।
अशौचमास्रवं चात्मन् ! संवरं परिभावय ॥
कर्मणो निर्जरां धर्म-रूपतां लोकपद्धतिम् ।
बोधिदुर्लभतामेता, भावयन् मुच्यसे भवात् ॥

—शान्तसुधारस १

१—अनित्यभावना, २—अशरणभावना, ३—संसारभावना, ४—एकत्वभावना, ५—अन्यत्वभावना, ६—अशौचभावना, ७—आस्रवभावना, ८—संवरभानवा, ९—कर्मनिर्जराभावना, १०—धर्मस्वरूपभावना, ११—लोकस्वरूपभावना, १२— बोधिदुर्लभभावना । रे जीव ! इन भावनाओं में लीन बन ! ऐसा करने से जन्म-मरण के बन्धनों से छूट जाएगा ।

३ **चार भावनायें—**

मैत्री-प्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थ्यानि नियोजयेत् ।
धर्मध्यानमुपस्कर्तुं, तद्धि तस्य रसायनम् ॥

—शान्तसुधारस १३

१–मैत्रीभावना, २–प्रमोदभावना, ३–कारुण्यभावना, ४–माध्यस्थभावना । धर्मध्यान की सहायता के लिए इन चारों भावनाओं का अनुशीलन भी अवश्य करना चाहिए, क्योंकि ये अमोघ-रसायनरूप हैं ।

अनित्य-भावना

१ दुमपत्तए पंडुयए जहा, निवडइ राइगणाण अच्चए।
एवं मणुयाणजीवियं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥

—उत्तराध्ययन १०।१

जिस प्रकार रात्रियों के बीतने पर वृक्ष का पत्ता पीला होकर गिर जाता है, उसी तरह मनुष्यों का जीवन है, अतः हे गोतम ! समयमात्र भी प्रमाद मत कर !

२ कुसग्गे पणुन्नं निवइय वाएरियं एवं बालस्स जीवियं।

—आचारांग ५।१

डाभ की अणी पर ठहरा हुआ जलबिन्दु हवा से प्रेरित होकर जैसे गिर पड़ता है, वैसे ही अज्ञानी का जीवन नष्ट हो जाता है।

३ उवणिज्जइ जीवियमप्पमायं, मा कासि कम्माइं महालयाइं।

—उत्तराध्ययन १३।२६

यह जीवन शीघ्रातिशीघ्र मृत्यु की तरफ चला जा रहा है, अतः महतीदुर्गति देनेवाले कर्म मत कर !

४ तरुणे वाससयस्स तुट्टइ, इतरवासे य बुज्झह !

—सत्रकृतांग २।३।८

सौ वर्ष की आयुवाले जीव की आयु भी युवावस्था में टूट जाती है, अतः यहां अल्पकाल का ही निवास समझो !

५ टूटे हुए पुल, फूटे हुए बर्तन एवं फटे हुए वस्त्र पुनः जुड़ सकते हैं, लेकिन आयुष्य टूटने के बाद नहीं जुड़ता।

६ यैः समं क्रीडिता ये च भृशमीडिता,
यैः सहाऽकृष्महि प्रीतिवादम् ।
तान् जनान् वीक्ष्य बत ! भस्मभूयं गतान्,
निर्विशङ्कास्म इति धिक् प्रमादम् ॥

—शान्तसुधारस १

खेद है ! कि जिनके साथ हमने क्रीड़ा की, जिनके साथ प्रेमपूर्वक वार्तालाप किया और जिनकी खुलेदिल से प्रशंसा की, उन्हें जलकर खाक होते देखकर भी हम निर्भय बैठे हैं, अतः प्रमाद को धिक्कार है !

७ क्व गताः पृथिवीपालाः, ससैन्यबलवाहनाः ।
वियोगसाक्षिणी येषां, भूमिरद्यापि तिष्ठति ॥ ६८ ।
प्रतिक्षणमयं कायः, क्षीयमाणो न लक्ष्यते ।
आमकुम्भ इवाम्भस्थो, विशीर्णः सन् विभाव्यते ॥ ६९ ।
आसन्नतरतामेति, मृत्युर्जन्तोः दिने-दिने ।
आघातं नीयमानं च, वध्यस्येव पदे-पदे ॥ ७० ।
अनित्यं यौवनं रूपं, जीवितं द्रव्यसंचयः ।
ऐश्वर्यं प्रियसंवासो, मुह्येत् तत्र न पण्डितः ॥ ७१ ।

—हितोपदेश ४

सेना एवं बलवाहनसहित पृथ्वीपति कहां चले गए, जिनके वियोग की गवाही देनेवाली पृथ्वी आज भी विद्यमान है ।६८।

यह शरीर प्रतिक्षण क्षीण होता हुआ भी नहीं लखा जाता, किन्तु पानी से भरे हुए कच्चे घड़े की तरह पूर्णनष्ट होने पर ही जान पड़ता है कि यह नष्ट हो गया ।६९।

मारने के लिए ले जाए जानेवाले प्राणी के कदम-कदम पर जैसे मृत्यु निकट आती है, उसी प्रकार जीवों की मृत्यु दिन-दिन निकट आ रही है ।७०।

यौवन-रूप-जीवन-धन का संग्रह, ऐश्वर्य और प्रियजनों का सहवास—ये सब अनित्य हैं, अतः पण्डित को इनमें मोहित नहीं होना चाहिए ।७१।

८ कैरों दल पांडव सागरसुत यादों केते,
जात हू न जाने ज्यौं तरैया परभात की।
बली बेनु अंबरीष मानधाता प्रहलाद,
कहांलौं गिनाऊँ कथा रावन-ययात की।
बेऊ ना वचन पाए काल कौतुकी के हाथ,
भांति-भांति सेना रची घने दुःख घात की।
चार-चार दिन के चबाउ चाहे करे कोऊ,
अंत लूटि जैहैं जैसे पूतरी बरात की ॥

—भाषाश्लोकसागर

●

७ अशरणभावना

१ इह खलु काम-भोगा नो ताणाए वा, नो सरणाए वा।
पुरिसे वा एगया पुव्विं काम-भोगे विप्पजहइ,
काम-भोगा वा एगया पुव्विं पुरिस विप्पजहंति।
से किमंग पुण वयं, अन्नमन्नेहिं काम-भोगेहिं मुच्छामो ?

—सूत्रकृतांग, श्रु० २-अ० १।१३

इस संसार में निश्चय ही—ये काम-भोग दुःखों से रक्षा करनेवाले नहीं हैं। कभी तो पहले ही पुरुष इन्हें छोड़कर चल देता है एवं कभी ये पुरुष को छोड़ चलते हैं, फिर हम इन काम-भोगों में मूर्च्छित क्यों हो रहे हैं ?

२ इह खलु ! नाइसंजोगा नो ताणाए वा, नो सरणाए वा।
पुरिसे वा एगया पुव्विं नाइसंजोगे विप्पजहइ,
नाइसंजोगा वा एगया पुव्विं पुरिसं विप्पजहंति।
से किमंग पुण वयं अन्नमन्नेहिं नाइसंजोगेहिं मुच्छामो ?

—सूत्रकृतांग श्रु० २-अ० १।१३

इस संसार में ज्ञाति-स्वजनों के संयोग भी दुःखों से रक्षा करनेवाले नहीं हैं। कभी पहले ही पुरुष इन्हें छोड़कर चल देता है एवं कभी ये पुरुष को छोड़ चलते हैं। फिर अपने से भिन्न—इन ज्ञाति-संयोगों में हम मूर्च्छित क्यों हो रहे हैं ?

३ जाया य पुत्ता न हवंति ताणं।

—उत्तराध्ययन १४।१२

पुत्र होने पर भी वे शरणभूत नहीं होते।

४ एकबार राजा भोज की नींद उचट गई एवं मध्यरात्रि के समय गवाक्ष में बैठकर अपने राज्य-वैभव का अहं करते हुये उसने एक श्लोक के तीन पद्य रच डाले; लेकिन चौथा पद्य नहीं बन सका, अतः राजा पुनः-पुनः तीनों पद्यों का आवर्तन कर रहा था। उस समय एक चोर ने (जो पहले से महल में छिपकर बैठा था) उसकी पूर्ति कर डाली। श्लोक इस प्रकार था—

चेतोहरा युवतयः स्वजनोऽनुकूलः,
सद्बान्धवाः प्रणयगर्भगिरश्च भृत्याः।
गर्जन्ति दन्तिनिवहास्तरलास्तुरङ्गाः,
संमीलने नयनयोर्नहि किंचिदस्ति ॥

—भोजप्रबन्ध १९८

राजा अहंकार कर रहा था कि मेरे मनोहर स्त्रियाँ हैं, अनुकूल स्वजन है, अच्छे भाई हैं, स्नेहगर्भित वाणी बोलनेवाले सेवक हैं, गर्जना करते हुए हाथी हैं, और चंचल घोड़े हैं, (यह सुनकर चोर ने कहा) लेकिन आँखें मींची जाने के बाद—ये सब कुछ नहीं हैं।

मार्मिक पदपूर्ति से राजा का अहंकार चूर-चूर हो गया और चोर को पकड़कर कैद में रख दिया गया। प्रातः दरबार जुड़ा तब रातवाले चोर को मौत की सजा सुनाई गई। विद्वान चोर ने कहा—

भल्लिर्नष्टो भार्गवश्चापि नष्टो,
भिक्षुर्नष्टो भीमसेनोऽपि नष्टः।
भुक्चण्डोऽहं भूपतिस्त्वं च राजन्।
पङ्क्तौ भस्यह्यन्तकस्यप्रवेशः ॥

राजन्! 'भकार' की पंक्ति में इस समय यम (मृत्यु) का प्रवेश हो रहा है। देखिये—भल्लि का नाश हुआ, फिर क्रमशः भार्गव, भिक्षु और भीमसेन मारे गये। मेरा नाम भुक्चंड है और आप भूपति हैं। अगर मुझे मार देंगे तो फिर तत्काल आपकी भी मरने की बारी आ जायेगी। चोर की

विद्वत्ता पर राजा प्रसन्न हुआ एवं उसे धन-धान्य देकर सुखी बनाया अस्तु !

५ सव्वं विलवियं गीयं, सव्वं नट्टं बिडंवियं ।
सव्वे आभरणा भारा,सव्वे कामा दुहावहा ॥

—उत्तराध्ययन १३।१६

सभी प्रकार का गीत विलापस्वरूप है, नाटक विडम्बनातुल्य है, आभूषण भारस्वरूप हैं और काम-भोग दुःख के देनेवाले हैं ।

८ एकत्वभावना

१ एगत्तमेयं अभिपत्थएज्जा ।

—सूत्रकृतांग १०।१२

आत्मार्थी-पुरुष को एकत्वभावना की प्रार्थना करनी चाहिए ।

२ एगे अहमसि न मे अत्थि कोइ, न याहमवि कस्सवि ।

—आचारांग ८।६

मैं अकेला हूं, जगत में मेरा कोई नहीं है, और मैं भी किसी का नहीं हूं ।

३ एगस्स जंतो गतिरागती य ।

—सूत्रकृतांग १३।१८

जीव अकेला जाता है और अकेला ही आता है ।

४ पत्तेयं जायति, पत्तेयं मरइ ।

—सूत्रकृतांग २।१।१३

प्रत्येक प्राणी अकेला जन्म लेता है, अकेला मरता है ।

५ एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं ।

—उत्तराध्ययन १३।२३

जीव स्वयं अकेला ही दु:ख भोगता है ।

६ एकः प्रसूयते जन्तु-रेक एव प्रलीयते ।
एकोऽनुभुङ्क्ते सुकृतं, एक एव च दुष्कृतम् ।।

—मनुस्मृति ४।२४० तथा श्रीमद्भागवत १०।४६।२१

प्राणी अकेला उत्पन्न होता है, अकेला मृत्यु को प्राप्त होता है और अकेला ही पुण्य-पाप को भोगता है ।

७ लोग सोचते हैं हम जैन हैं,
हिन्दु हैं, मुसलमान हैं,
अपनी कौम और वतन का भी
उनके दिलों में अभिमान है,
मैं हैरान हूं, इस छोटी-सी बात को—
वे कैसे भूल जाते हैं,
कि हम सब एक हैं, क्योंकि
सबसे पहले इन्सान हैं।

—खुले आकाश में (पुस्तक से)

९ भाषा-वाणी

१ **भाषा** विचार की पोशाक है ।

२ **भाषा** एक नगर है, जिसके निर्माण में प्रत्येक मानव एक पत्थर लाया है ।

३ हमारी **भाषा** हमारा प्रतिबिम्ब है । **—गांधी**

४ **भाषा** मनुष्य की बुद्धि के सहारे चलती है, इसलिए जब तक किसी तक बुद्धि नहीं पहुंचती, तब तक **भाषा** अधूरी होती है । **—गांधी**

५ **भाषा** की अपेक्षा भावों को महत्व देना मानसिक-बुद्धि का परिचायक है ।

६ तड़पन भरे शब्द लच्छेदार नहीं होते और लच्छेदार शब्द विश्वासलायक नहीं होते । **—ताओ-उपनिषद्**

७ जहां **वाचा**-मन में एकता नहीं, वहां **वाचा** केवल शब्दजाल है, दम्भ है, मिथ्यात्व है ।

—गांधी

८ न चित्ता तायए भासा, कुओ विज्जाणुसासणं ।

—उत्तराध्ययन ६।११

केवल विचित्र भाषाएं और विद्या की शिक्षाएँ आत्मरक्षा के लिए समर्थ नहीं हो सकतीं !

९ शब्द बोलते समय ७८ छोटी-छोटी नसें एकत्रित होती हैं ।

—आत्मविकास, पृष्ठ ३०८

१० साठ कोसे पाणी र बारै कोसे वाणी ।

—राजस्थानी कहावत

१० देशी-विदेशी भाषा

१ यथा देशस्तथा भाषा ।

—संस्कृत कहावत

जैसा देश हो, वैसी ही भाषा बोलनी चाहिये !

२ देशीभाषा का अनादर, राष्ट्रीय-आत्महत्या है ।

—गांधी

३ विदेशी-भाषा द्वारा शिक्षा पाने की पद्धति से अपार हानि होती है ।

—गांधी

४ परायी-भाषा के साहित्य से ही आनन्द लेने की आदत चोरी के माल से आनन्द लूटने की चोरआदत जैसी है ।

५ भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ ।
सा वि य णं अद्धमागहा भासा तेसिं सव्वेसिं आरिय--
मणारियाणं अप्पणो सभासे परिणामेणं परिणमइ ।

—औपपातिक-सूत्र

भगवान् अर्धमागधी भाषा में धर्म कहते हैं । वह अर्धमागधी भाषा भी सब आर्यों—अनार्यों के अपने-अपने देश की भाषा के रूप में परिणत हो जाती है ।

६ **भाषाविशेषज्ञ**—जर्मनी के डा० हेराल्डसुज ३०० भाषाएं बोल सकते हैं और लिख भी सकते हैं । एक किताब में उन्होंने उक्त भाषाओं का प्रयोग किया है ।

११ विश्व की भाषाओं के विषय में ज्ञातव्य

विश्वभर में कुल २७९६ भाषाएं हैं। इनमें से पैंसठ विभिन्न देशों की राष्ट्रभाषाएं हैं। प्रत्येक भाषा औसतन पांच करोड़ व्यक्तियों द्वारा बोली जाती है। प्रमुख भाषाएं केवल आठ हैं। इनमें हिन्दी, चीनी, अंग्रेजी, स्पेनिश, फ्रेंच, जापानी, रूसी तथा अरबी आती है।

यदि कोई व्यक्ति इनमें से केवल छह भाषाएं सीख ले तो वह विश्व के तीस प्रतिशत लोगों से बातचीत कर सकता है और यदि आठों प्रमुख भाषाएं सीख ली जाएँ तो विश्व के ६० प्रतिशत से अधिक लोगों के साथ आसानी से बातचीच की जा सकती है।

—हिन्दुस्तान, २८ जून, १९७१

२ भारत में ६०० से भी अधिक भाषाएं बोली जाती हैं।

—विश्वदर्पण, पृष्ठ ३८

३ १६॥ करोड़ मनुष्यों की मातृभाषा हिन्दी है और २५४४ की संस्कृत है।

—हिन्दुस्तान, ५ फरवरी, १९६५

४ भारत की प्रमुख भाषाएँ और उन्हें बोलनेवाले :—

भाषा	बोलनेवाले	भाषा	बोलनेवाले
हिन्दी	१४,९९,४४,३११	तेलुगु	३,२९,९९,९१६
(उर्दू, हिन्दुस्तानी		मराठी	२,७०,४९,५२२
व पंजाबी)		बंगला	२,५१,२१,७६४

भाषा	बोलनेवाले	भाषा	बोलनेवाले
तमिल	२,६५,४६,७६४	कन्नड़	२,४४,७१,७६४
गुजराती	१,६३,१०,७७१	उड़िया	१,३१,५३,९०९
मलयालम	१,३३,८०,१०९	संस्कृत	५५५
काश्मीरी	५,०८६	मेवाड़ी	२०,१४, ८७४
मारवाड़ी	४४,१४, ७३७	बांगड़ी	९२६, ०२९
ढुंढाड़ी (जयपुरी)	१५,८८, ०६९	मालवी	८,६६, ८९५
छत्तीसगढ़ी	९,०२, ९०८	हड़ौती	८,१५, ८५९

—विश्वज्ञानकोश, पृष्ठ २१२ (१९६४)

५ विश्व की प्रमुख-भाषाएं एवं उन्हें बोलनेवालों की संख्या :—

भाषा	बोलनेवाले
चीनी	५६,९०,००,०००
अंग्रेजी	२८,१०,००,०००
हिन्दी	१७,००,००,०००
रूसी	१५,३०,००,०००
स्पेनी	१४,५०,००,०००
जर्मनी	१२,००,००,०००
जापानी	९, ६०,००,०००
अरबी	७, ७०,००,०००
फ्रेंच	७, ७०,००,०००
पुर्तगाली	७, ६०,००,०००
इटालियन	५, ७०,००,०००

—विश्वकोश, भाग ८, पृष्ठ ६६

६ कतिपय भाषाओं की वर्णमाला के अक्षर :—

१ संस्कृत ४४	१० वेलश २७
२ हिन्दी ४६-५२	११ स्पेनिश २७
३ पारसी ३१	१२ अंग्रेजी २६
४ चीनी २०४	१३ इटालियन २०
५ उर्दू ३६	१४ रूसी ३६
६ जर्मनी २९	१५ लातीनी २२
७ फ्रेंच २५	१६ तुर्की २८
८ यूनानी २४	१७ इब्रानी २२
९ अरबी २९	

—विज्ञान के नये आविष्कार से

१२ भाषा के प्रकार

१ चत्तारि भासाजाया पन्नत्ता, तंजहा—सच्चमेगं भासजायं, बीयं मोसं, तइयं सच्चमोसं, चउत्थं असच्चमोसं—

—**स्थानांग ४।१।२३८**

भाषा चार प्रकार की कही है :—१ सत्य, २. मृषा (झूठ), ३ सत्यामृषा (मिश्र), ४ असत्यामृषा (व्यवहार)।

२ **सत्यभाषा** के जनपदसत्य आदि दस भेद हैं।
असत्यभाषा के क्रोधनिःसृत आदि दस भेद हैं।
मिश्रभाषा के उत्पन्नमिश्रित आदि दस भेद हैं।
व्यवहारभाषा के आमन्त्रणी आदि बारह भेद हैं।
(इनका विस्तृत विवेचन चारित्र-प्रकाश नामक पुस्तक में किया गया है।)

—**स्थानांग १०।७४१ तथा प्रज्ञापना-पद ११**

३ सत्तविहे वयणविकप्पे पन्नत्ते, तंजहा—
आलावे, अणालावे, उल्लावे,
अणुल्लावे, संलावे, पलावे, विप्पलावे।

—**स्थानांग ७**

सात प्रकार का वचन-विकल्प कहा गया है—

१. आलाप—थोड़ा बोलना, २. अनालाप-कुत्सित बोलना, ३. उल्लाप—मर्यादा का उल्लंघन करके बोलना, ४. अनुल्लाप—मौन, ५. संलाप आपस में बोलना ६. प्रलाप—निरर्थक बोलना, ७. विप्रलाप—विरुद्ध बोलना।

१३ वाणी का फल

१ बुद्धेः फलं तत्त्वविचारणं च,
देहस्य सारं व्रतधारणं च।
अर्थस्य सारं किल पात्रदानं,
वाचः फलं प्रीतिकरं नराणाम्॥

बुद्धि पाने का फल है—तत्त्व का विचार करना, शरीर पाने का सार है—व्रत-धारण करना, धन पाने का सार है—सुपात्र दान देना और वाणी पाने का फल है—प्रीतिकारी-वचन बोलना।

२ वाणी की सार्थकता इसी में है कि वह आकाश में सीढ़ी बांधकर मनुष्य को उस स्थान पर चढ़ादे, जहां से वाणी का उद्गम हुआ।

—पुरुषोत्तमदास टंडन

वाणी की महिमा

१ अर्थभारवती वाणी, भजते कामपि श्रियम् ।

अर्थ की गंभीरता से परिपूर्ण वाणी कुछ निराली ही शोभा को धारण करती है ।

२ हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः । —भारवि

हितकारी एवं मनोहरवचन अत्यन्त दुर्लभ है ।

३ तास्तुः वाचः सभायोग्या, याश्चित्ताकर्षणक्षमाः ।
स्वेषां परेषां विदुषां, द्विषामविदुषामपि ।।

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ ८८

वही वाणी सभा में बोलने योग्य होती है, जो स्व-पर-विद्वान्-अविद्वान् एवं शत्रुओं के चित्त को आकर्षण करनेवाली हो ।

४ केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला,
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्धजाः ।
वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते,
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ।।

—भर्तृहरिनीतिशतक १०

बाजुबंद, चन्द्रमा के समान उज्ज्वलहार, स्नान, विलेपन, फूल और संवारे हुए केश, इन सब में कोई भी मनुष्य को विभूषित नहीं कर सकता संस्कार-युक्तवाणी ही मनुष्य को सुशोभित करती है । स्वर्णादिक के आभूषण निरन्तर क्षीण होते ही रहते हैं, वास्तव में सच्चाआभूषण वाणी ही है ।

१५ वाणी का प्रभाव

१ लोहे का तीर जो काम नहीं कर सकता, वचन का तीर वह काम सहज में कर डालता है। एक-एक वचन से निर्दय-हत्यारे दया के सागर बन जाते हैं। सौ में ९९ झूठ बोलनेवाले सत्यवादी-हरिश्चन्द्र बन जाते हैं, दिन-दहाड़े चोरी-डकैती करनेवाले कुख्यात-डाकू वाल्मीकिऋषि बन जाते हैं, बड़ी-बड़ी कुलटा महासती-सीता का रूप धारण कर लेती हैं, लोभियों के सरताज दानवीर-कर्ण का अनुकरण करने लगते हैं। यह सब वचन का प्रभाव है। मनुष्य ही क्या ? सांप जैसे क्रोधी जन्तु भी मदारी की वीणा से प्रभावित होकर उसके कथनानुसार खेल करने लगते हैं। मन्त्रों की शब्दावली से आकृष्ट देवता भी मन्त्रवादी की इच्छा के अनुसार दौड़-धूप करने लगते हैं। यह भी सुनने में आया है कि—
जगदीशचन्द्र बसु की वचन-शक्ति से वनस्पति भी खुश-नाखुश मालूम होने लगती थी एवं बसु-निर्मित दूरवीन द्वारा लोग उसे प्रत्यक्ष देख सकते थे।

—**धनमुनि**

२ **बहुत गई थोड़ी रही**—लोभी राजा के यहां नटराज ने अद्‌भुत नाटक किया। नटनी नाच रही थी और ५०० नट छः राग, तीस रागिनियों का आलाप करते हुए रकम-रकम के बाजे बजा रहे थे—**मास्टर मोहन ने** उनका चित्र इस प्रकार खींचा है—

छिछि छुम-छिछि छुम, छुम छननननननन,
रमकत झमकत पगपे जन।

धुम-धुम धिरि-धिरि थ्रिकि-थ्रिक नाचे गन,
ताथइ-ताथइ कर बहुत मगन ।। ध्रुवपद ।।

किड़ किड़ झाँई-किड़ किड़ झाँई बाजे झांझ मोर चंग,
लगी तबलों पर थाप पड़न ।
ढोल डफ मृदंग सननन सारंग,
डमकत डमरु नाचत गन ।
घुम-घुम घिरि-घिरि बाजे गति घूघरों की,
चोरासी नेउर करें ठननन ।
नाद घड़ियाल खरताल करताल बाजे,
झालर घंटा घनननन ।
लप-झप गणपति तान तोड़ते,
चौंसठ बाजे लगे बजन । घुम-घुम ।।१।।

सितार तंबूरा मोर चीकारा इकतारा बीन,
खंजरी धारा कानु बाजे कुनन-कुनन ।
हुडंगा नागड़िया किंगड़ी मुरली सिटकी चिटकी ताली,
अलगुंजा और वंशी बाजे सनन-सनन ।
सरणाई गरणाई सीटी सरोद रब्बाब पाल,
थोड़ गिड़-गिड़ थब्ब बाजे लगे हैं बजन ।
सखावज पखावज ताली भेरी भीपी धुन्नवी,
इन्द्र नगारे तोरे लगे गरजन ।
श्याम का नरसिंघा है जी ढोलक मजीरां घड़ा,
तबले और तासे सब लगे खड़कन । घुम-घुम ।।२।।

असकंभे तुंतुमने दंभे दंडे जलतरंगे बाजे,
तुंबड़ियाँ गुड़ गुड़िया खूब मथा मथन ।
डमडमी डुगडुगी ठिकरी शीतलदंडी रोशन चौकी,
और रब्बानी तोरी लगी धुधुकन ।

चंग फिरंगा चंग तुक्कन गुरू का शायर,
फड़ में बाजे गावें वो सब गिन-गिन ।
दसनांवें का धौंसा सुनकर होकर अपने मन में राजी,
खिल-खिल हंसते श्रोता जन ।
लोक कोक सब ही पूछें किसने दिन्ही गनकुं ताली,
और किसने सिखाया गन को नृत्य करन । घुम-घुम ॥३॥
सब बाजन में मोहनगारी बाजती बांसुरिया,
तीस रागिनी छः राग गावे सुजनमोहन ।
कान्हड़ा केदारा सारंग तल्लाना नट दीपक सौरठ,
झब्बाब रब्बाई और विहाग एमन !
भैरवी अड़ियाना टोडी बंगाली मल्हार मरुआ,
पिस्तोल चोताला ध्रुपद न्यारी गुनियन ।
सब्बाब रब्बाई जैजैवंती जे हिंडोल गावे,
हिरणी ऐसी तान लागी तीन भवन ।
गावें गोरी और प्रभाती, खेट राग कर बिल्लाहन । घुम-घुम ॥४॥

रात भर खेल चला, किन्तु दान में किसी ने एक पैसा भी नहीं दिया। निराश होकर नटनी ने कहा—

रात घड़ी दो रह गई रे, पिंजर थाक्यो प्राय ।
नटनी कहे सुन नायका ! टुक, मधुरी-सी ताल बजाय ।
सब गुन लायक हो म्हारा नायक ! अब नहिं नाच्यो जाय ।

नट ने जबाव दिया—

बहुत गई थोड़ी रही हे, थोड़ी भी अब जाय,
थोड़ी-सी देरी के कारण, ताल में भंग न थाय ।
हे सुन प्यारी ! सीख हमारी, आलस अंग मतलाय !

ऊपर के पद्यों ने सभा का रंग बदल डाला। ३६ वर्ष के दीक्षित एक जैन मुनि ने (जो विचलित होकर घर जा रहा था) नट को सवालाख मूल्य का एक रत्न कंबल दिया, ६५ वर्षीय राजकुमार ने (जो ६० वर्षीय बाप

को कत्ल करने को तैयार था) ४० हजार के रत्नजड़ित कुंडल दिये। ४५ वर्षीय राजकुमारी ने (जो विवाह न होने से मंत्री-पुत्र के साथ भागने वाली थी) नौलाख का मुक्ताहार नटनी के गले में पहना दिया। आश्चर्यचकित राजा ने मर्म पूछा, सबने अपना-अपना सच्चा हाल सुनाया। राजा की कृपणता दूर हुई, नट को लाखों का दान दिया और पुत्र को राज्य देकर खुद सन्यासी बन गया। इधर राजकन्या का विवाह हो गया और मुनि ने पुनः संयम ले लिया। नट के एक वचन से चारों का उद्धार हुआ।

३ पलंग की ६० मिनिटें—

दासी बादशाह का पलंग बिछाया करती थी। बिछाते-बिछाते एक दिन पांच मिनिट के लिए उस पर लेट गई एवं उसे गहरी नींद आ गई। बादशाह और बेगम सोने के लिए आये, दासी चौंक कर उठी। बेगम गुस्से में होकर कहने लगी—जहांपनाह ! यह रोज हमारे पलंग का आनंद लूटती है। दासी ने कहा—खुदा की कसम ! मैं कभी नहीं लेटती, आज केवल पांच मिनिट के लिए सोई थी, किंतु नींद आ गई और एक घंटा गुजर गयी ! बेगम ने कहा—साठ मिनिट सोयी है, अतः इसके साठ चाबुक मारने चाहिएँ, अस्तु ! बेगम चाबुक मारने लगी और बादशाह गिनने लगे। तीस चाबुक लगे, वहां तक तो दासी चिल्लाती रही और बाद में हंसती हुई कहने लगी—"हुजूर ! अगर इस पलंग पर ६० मिनिट सोने से ६० चाबुक लगते हैं तो आपका क्या हाल होगा ? आप तो जीवन भर इसका मजा लूटते रहे हैं।" बादशाह के दिल में यह वचन तीर-सा चुभ गया और बादशाही छोड़कर वह फकीर बन गया। कवि ने एक छप्पय छंद में इसकी तस्वीर इस प्रकार खींची है—

टुक लौटत कमच्यां पड़ी, बांदी करी पुकार,
सौलह-सौ हुरमां तणें, पाप तणों नहि पार।
पाप तणों नहि पार, मार मुहकम भुगतासी,
दीन-दरग्गां बीच, मियाजी ! जाब न आसी।

सुन सुलतानी चेतियो, तजत न लागी बार,
टुक लौटत कमच्यां पड़ी, बांदी करी पुकार ॥

—भाषाश्लोकसागर

४ **यह भी दिन चला जायेगा**—एक फकीर से बादशाह ने ज्ञान मांगा। फकीर ने दिल्ली के सभी सरकारी मकानों पर उपरोक्त वाक्य लिखवा दिया। अब बादशाह जब भी खाता, पीता, सोता एवं ऐश-आराम में आसक्त होता—इस वाक्य से ज्ञान हो जाता कि **यह दिन सदा स्थिर नहीं है।**

एक बार बादशाह युद्ध में हार कर कैदी बना। वहां भी इस वाक्य से शान्ति मिली। दुश्मन को भी इस वाक्य से ज्ञान हुआ एवं बादशाह को कैद से छुट्टी मिली।

५ **बुढ़िया का प्रभावशाली वाक्य**—पराजित चन्द्रगुप्त और चाणक्य एकबार एक वृद्धा के घर ठहरे। वृद्धा का पुत्र खेत से आया। माता ने खिचड़ी परौसी। उत्तावल करके उसने खिचड़ी के बीच में हाथ डाला,हाथ जला और वह चिल्लाया। वृद्धा ने कहा—तू भी चन्द्रगुप्त और चाणक्य जैसा मूर्ख है। चौंककर चाणक्य ने पूछा—वे कैसे मूर्ख हुए ? वृद्धा ने कहा—सीमान्त-राज्यों को जीते बिना बीच के पाटलीपुत्र पर आक्रमण किया अतएव उन्हें हार खानी पड़ी। राजा-मन्त्री वृद्धा की इस बात से बड़े प्रभावित हुए कि पहले बीच में हाथ नहीं डालना चाहिये। (तत्पश्चात् उन्होंने बुढ़िया के कथनानुसार कारवाई की एवं पाटलीपुत्र का राज्य प्राप्त किया।)

१६ 'किन्तु' शब्द की करामात

- मनुष्य संसार में या धर्म में जब कभी आगे बढ़ने की कोशिश करता है, **'किंतु' शब्द** आकर फौरन उसमें विघ्न डाल देता है—जैसे कि व्यक्ति सोचते हैं—
- व्यापार तो करना है, **किन्तु** नुकसान हो जाएगा तो ?
- परीक्षा तो देनी है, **किन्तु** फेल हो जाएँगे तो ?
- समाजसुधार तो करना है, **किन्तु** लोग आलोचना करेंगे तो ?
- चुनाव तो लड़ना है, **किन्तु** हार जायेंगे तो ?
- व्रत तो धारने हैं, **किन्तु** टूट जाएँगे तो ?
- तपस्या तो करनी है, **किन्तु** कमजोरी बढ़ जाएगी तो ?
- झूठ एवं चोरी छोड़ तो दें, **किन्तु** व्यापार नहीं चलेगा तो ?

यहां सभी जगह व्यक्ति आगे कदम बढ़ाना चाहते हैं, लेकिन **किन्तु शब्द** आकर उन्हें निरुत्साह एवं निराश बनाकर पीछे धकेल देता है। देखिये कई एक उदाहरण—

(क) जमीन का मामला तय होनेवाला था, मुद्दई खुश-खुश हो रहा था। मजिस्ट्रेट ने कहा—**आपकी बात तो ठीक ही है, किन्तु रेवेन्यु मिनिस्टर का विरोध है। (मुद्दई निराश)**।

(ख) पंडित से एक मनुष्य कह रहा था—महाराज ! मेरी नौ वर्ष की कन्या विवाह होने के तीन दिन बाद ही विधवा हो गयी। क्या उसका पुनर्विवाह कर दूँ ? पंडित ने कहा—**ऐसी परिस्थिति में खास दोष तो नहीं हैं, किन्तु मैं कैसे कह दूँ ? धर्मशास्त्र की मर्यादा भी तो देखनी पड़ती है। (कन्या का बाप चुप)**।

(ग) एक रोगी कुछ ठीक हुआ, ससुराल से भोजन का न्योता आया। उसने वैद्य से पूछा—क्या मैं खाने के लिए जा सकता हूं ? उत्तर मिला—**हाँ जाओ, किन्तु गरिष्ठ पदार्थ मत खाना। (रोगी हताश)।**

(घ) एक विद्यार्थी अच्छे नंबरों से पास हुआ। साहेब बोले—इसे इनाम मिलना चाहिये। हेड मास्टर ने कहा—**बात तो ठीक है, किन्तु गैरहाजिरी ज्यादा करता है। (इनाम नहीं मिला)।**

(च) कई यात्री **तानसा** बाँध (बम्बई से ५०-६० माइल दूर) देखने गये। बस की गड़बड़ी से देरी हो गई, दिन छिप गया एवं तालाब का फाटक बंद हो गया। यात्री बड़े साहिब से मिले और तालाब देखने के लिये विशेष अनुमति माँगी। साहब ने कहा—**नो मेंशन·यू केन सी, बट आई एम सोरी, नो मैंनेजर हियर** अर्थात् कोई हर्ज नही आप देख सकते हैं, **किन्तु** मुझे खेद है कि यहां मैंनेजर नहीं है। (यात्रियों को तालाब बिना देखे ही लौटना पड़ा)। अँग्रेजी में किन्तु को **बट** कहते हैं।

(छ) किसीं सार्वजनिक संस्था के संस्थापक कई व्यक्ति डेप्युटेशन लेकर एक मारवाड़ी सेठ के पास गये और संस्था की गतिविधि से अवगत कराकर उनसे कुछ आर्थिक-सहायता देने का अनुरोध किया। सेठजी ने फरमाया—**म्हारै सहायता देणे में कांई आंट है 'पण' पहली दो-चार वर्ष इणरो काम देखांगा। (आगन्तुक चुपचाप रवाना)** मारवाड़ी भाषा में **किन्तु** की जगह **पण** का प्रयोग होता है।

(ज) महाभारत की रचना करते समय व्यास जी ने कहा—

सत्यं मनोरमा रामा, सत्यं रम्या विभूतयः।
किन्तु मत्ताङ्गनापाङ्ग-भङ्गिलोलं हि जीवितम्॥

सुन्दर स्त्रियां सत्य हैं एवं मनोहर विभूतियां-संपत्तियाँ भी सत्य हैं, **किन्तु** उन्मत्त-स्त्रियों के कटाक्षों (तिरछी-नजरों) की तरह जीवन चंचल है, अतः स्त्रियों और विभूतियों की वास्तविकता विश्वास के योग्य नहीं है।

इस श्लोक के पूर्वार्द्ध की रचना तक तो गणेशजी खुश-खुश होकर सोच रहे थे कि खूब खाओ-पिओ एवं मौज उड़ाओ (अब त्याग, वैराग्य एवं शील-संतोष की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि भगवान् व्यास ने स्त्री और धन को वास्तविक कह दिया। लेकिन उत्तरार्ध के प्रारम्भ में ज्यों ही **किन्तु** शब्द आकर विराजमान हुआ सारा रंग ही बदल गया एवं विनायकजी व्यासजी का मुँह ताकते ही रह गये)।[1]

—अध्ययन के आधार पर

---

१ कहा जाता है कि ऋषियों ने वेदव्यासजी से महाभारत की रचना के लिए प्रार्थना की, व्यासजी ने कहा—कोई ऐसा व्यक्ति लाओ, जो मेरे बोलने के साथ-साथ (दुबारा बिना पूछे) लिख सके। काफी विचार-विमर्श के बाद गणेशजी महाराज को बुलाया गया। उन्होंने फरमाया—मैं अप्रतिहतगति से लिखता चला जाऊँगा, लेकिन व्यासजी के रचना सम्बन्धी-विलंब के कारण जहां भी मेरी कलम रुक जायेगी, मैं वहीं पर काम बंदकर दूँगा। हंस कर व्यासजी ने कहा—चलो मंजूर है मुझे तुम्हारी शर्त, लेकिन तुम्हें भी अर्थ समझ-समझ कर ही लिखना होगा। अस्तु ! गणेशजी सहमत हो गये और रचना का कार्य शुरू हुआ। जब कभी कलम रुकने का प्रसंग आता, व्यासजी एक श्लोक ऐसा बोल देते, जिसे समझने में गणेश जी को देरी लग जाती। सुनने में यह भी आता है कि महाभारत में कतिपय श्लोक ऐसे है, जिनका वास्तविक अर्थ व्यास और गणेश के अतिरिक्त आज तक कोई भी नहीं समझ सका।

१७ वाणी-वाणी में अन्तर

१ मूर्खता एवं विद्वत्तापूर्ण जबान में घड़ी की सुइयों की तरह फर्क है कि एक बारहगुणा चलती है और दूसरी बारहगुणा दरसाती है।

२ गुणसुट्ठियस्स वयणं, घयपरिसित्तु व्व पावओ भाइ।
गुणहीणस्स न सोहइ, नेहविहूणो जह पईवो ॥

—**बृहत्कल्पभाष्य २४५**

गुणवान व्यक्ति का वचन घृतसिंचित-अग्नि की तरह तेजस्वी होता है, जबकि गुणहीन व्यक्ति का वचन स्नेह-रहित (तैलशून्य) दीपक की तरह तेज और प्रकाश से शून्य होता है।

३ **देवर-भाभी—**

देवर ने कहा—कानी भाभी ! पानी पिला !

भाभी क्रुद्ध होकर बोली—कुत्ते को पिला दूँगी, पर तुझे नहीं पिलाऊँगी।

छोटे देवर ने कहा—रानी भाभी ! पानी पिला !

भाभी ने हँसकर कहा—देवर ! पानी नहीं, बादाम का शर्बत पिलाऊँगी, तुम्हें !

४ हे बाई बाडी ! छास आपजे जाडी।
जेवी तारी वाणी, तेवुं छास माँ पाणी ॥

—**गुजराती कहावत**

मीठी-वाणी

१ मधुमती वाचमुदेयम् ।

—अथर्ववेद १६।२।२

मीठी वाणी बोलूँ !

२ प्रियवाक्यप्रदानेन, सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।
तस्मात् तदेव वक्तव्यं, वचने का दरिद्रता ?

—चाणक्यनीति १६।१७

मीठे-वाक्य का प्रदान करने से सभी संतुष्ट होते हैं। अतः वही बोलना चाहिए, बोलने में दरिद्रता क्यों ?

३ जिह्वायाश्छेदनं नास्ति, नास्ति ताल्वश्च भेदनम् ।
अर्थस्य च व्ययो नास्ति, वचने का दरिद्रता ?

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ ३८०

मिष्टवचन बोलने से जीभ का छेदन नहीं होता, तालु का भेदन नहीं होता और धन का व्यय नहीं होता। फिर बोलने में दरिद्रता क्यों ?

४ काहे को बोलत बोल बुरो नर,
नाहक क्यों जश-धर्म गमावें ।
कोमल वैन चवै किन ऐन,
लगे कछु है न सबे मन भावे ।
तालु छिदे रसना न भिदे,
न घटे कछु अंक दरिद्र न आवे ।

जीभ कहे जिय हानि नहीं,
तुझ जी सब जीवन को सुख पावे ।।

—भूधरदास

५ वचोऽमृतं यस्य मुखारविन्दे,
दानामृतं यस्य करारविन्दे ।
कृपामृतं यस्य मनोऽरविन्दे,
न वल्लभः कस्य नरो वरोऽसौ ?

जिसके मुखकमल में वचनामृत है, करकमल में दानामृत है एवं हृदय-कमल में दयामृत है, वह श्रेष्ठ मनुष्य किसको वल्लभ नहीं होता ?

६ प्रियवादिनो नो शत्रुः ।

—कौटलीय अर्थशास्त्र

प्रियवादी के शत्रु नहीं रहता ।

७ को मूकः ? यः काले, प्रियाणि वक्तुं न जानाति ।
मूक कौन है ? जो मौके पर मीठा बोलना नहीं जानता ।

८ सॉफ्ट वर्ड्ज आर हार्ड आर्ग्युमेन्ट्स ।
मृदुभाषण बड़ी विनती है ।

० ए सॉफ्ट एन्सर टर्नेथ अवे राथ ।

—अँग्रेजी कहावतें

मधुर वचन सों क्रोध नसाहीं ।

९ कांसी कुत्ती कुभारज्या, कर लाग्यां कूकंत ।
सोनो सीसो सुघड़नर, मधुरा ही बोलन्त ।

१० चार प्रकार के घड़े होते हैं—

१ मधु का घड़ा—मधु का ढक्कन, २ मधु का घड़ा—विष का ढक्कन
३ विष का घड़ा—मधु का ढक्कन, ४ विष का घड़ा—विष का ढक्कन ।

घड़े के समान चार प्रकार के मनुष्य हैं—

१ शुद्धहृदय—मधुरवाणी, २ शुद्धहृदय—कटुवाणी, ३ कलुषितहृदय—मधुरवाणी, ४ कलुषितहृदय—कटुवाणी ।

—स्थानांग ४।४

११ सुलभाः पुरुषा राजन् ! सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य च पथ्यस्य, वक्ता श्रोता च दुर्लभः ।।

—पञ्चतन्त्र २।१५७

निरन्तर मीठे बोलनेवाले पुरुष सुलभ हैं, किन्तु सुनने में अप्रिय और परिणाम में हितकारी-ऐसे बोलनेवाले एवं सुननेवाले दोनों ही दुर्लभ हैं।

१२ सचिव वैद्य गुरु तीन जो, प्रिय बोल हि भय आस।
राज-धर्म-तन तीन का, होही वेग विनाश ।।

—रामचरितमानस

१६ सुभाषित-सूक्ति

१ नूनं सुभाषितरसोऽन्यरसातिशायी ।

सुवचनों का रस अन्य रसों की अपेक्षा अधिक अच्छा है ।

२ द्राक्षा म्लानमुखी जाता, शर्कराचाश्मतां गता ।
सुभाषितरसस्याग्रे, सुधा भीता दिवंगता ।।

सुभाषितों का रस इतना मीठा एवं आश्चर्यकारी है, कि उन से डरकर द्राक्षा म्लानमुखी हो गई, मिसरी पत्थररूप हो गई और सुधा स्वर्ग में चली गई ।

३ अपूर्वाह्लाददायिन्य, उच्चैस्तरपदाश्रयाः ।
अतिमोहापहारिण्यः, सूक्तयो हि महीयसाम् ।।

—योगवाशिष्ठ ५।४।५

महापुरुषों की सूक्तियाँ अपूर्वआनन्द को देनेवाली, उच्चतर पद पर पहुंचानेवाली और अनर्थमूल—मोह को दूर करनेवाली होती हैं ।

४ प्रबोधाय विवेकाय, हिताय प्रशमाय च ।
सम्यक्तत्त्वोपदेशाय, सतां सूक्तिः प्रवर्तते ।।

—ज्ञानार्णव, पृष्ठ ६

दूसरों को जगाने के लिए, सत्यासत्य के निर्णय के लिए, लोककल्याण के लिए, विश्वशान्ति के और सच्चे तत्त्व का उपदेश देने के लिए सत्पुरुषों की सूक्ति प्रवृत्त होती है ।

५ सुभाषितेन गीतेन, युवतीनां च लीलया ।
न विद्ध्यते मनो यस्य, स योगी ह्यथवा पशुः ।।

—चन्द्रचरित्र, पृष्ठ ५३

सुभाषितमय गीतों से और युवतियों की लीला से जिसका मन नहीं भेदा जाता, वह या तो योगी है या विवेकशून्य पशु है।

६ बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः, प्रभवः स्मयदूषिताः।
अबोधोपहता चान्ये, जीर्णमङ्गे सुभाषितम् ॥

—भर्तृहरि-वैराग्यशतक २

ज्ञानी लोग ईर्ष्या से भरे हैं, धनी लोग अभिमानी हैं और शेष लोग अज्ञानी हैं, इस परिस्थिति में सुभाषित (सुन्दर-काव्य) अपने आप में ही जीर्ण हो जाते हैं।

७ या दुग्धापि न दुग्धेव, कविदोग्धृभिरन्वहम।
हृदि नः सन्निधतां सा, सूक्तिधेनुः सरस्वती ॥

—शुक्राचार्य

जो कवि-दुहारियों द्वारा निरन्तर दूही जाने पर भी नहीं दूही हुई-सी अर्थात् अमितदूधयुक्त रहती है, वह सूक्तिरूप दूध देने में कामधेनु-तुल्य सरस्वती सदा हमारे हृदय में विराजमान रहो !

२० बोलने योग्य वाणी

१ आणाइसुद्धं वयणं भिउंजे।

—सूत्रकृतांग १४।२४

भगवान की आज्ञा के अनुसार शुद्धवचन बोलो !

२ दिट्ठं मियं असंदिद्धं, पडिपुन्नं वियं जियं।
अयंपिरमणुव्विग्गं, भासं निसिर अत्तवं॥

—दशवैकालिक ८।४६

आत्मार्थी-व्यक्ति को देखी हुई, परिमित, संदेहरहित, प्रतिपूर्ण, व्यक्त, परिचित, अनुभूत, वाचालतारहित एवं उद्वेगरहित भाषा बोलनी चाहिए।

३ असावज्जं मियं काले, भासं भासिज्ज पन्नवं।

—उत्तराध्ययन २४।१०

प्रज्ञावान समयानुसार निरवद्य एवं परिमित भाषा बोले।

४ वाक्यं प्रियहितं वाच्यं, देशकालानुगं बुधैः।

—विवेकविलास

विद्वानों को देश-काल के अनुकूल प्रिय एवं हितकारी वचन बोलना चाहिये।

५ निरवद्यं वदेद्वाक्यं, मधुरं हितमर्थवत्।

—तत्त्वामृत

मधुर, हितकर एवं अर्थयुक्त होने पर भी जो वचन निरवद्य हो, वह बोलना चाहिये।

६ अव्याहृतं व्याहृताच्छ्रेय आहुः,
सत्यं वदेद् व्याहृतं तद् द्वितीयम् ।
प्रियं वदेद् व्याहृतं तत् तृतीयं,
धर्मं वदेद् व्याहृतं तच्चतुर्थम् ॥

—विदुरनीति ४।१२

बोलने से न बोलना अच्छा बताया गया है; किन्तु सत्य बोलना वाणी की दूसरी विशेषता है, सत्य भी यदि प्रिय बोला जाय तो वह तीसरी विशेषता है और वह भी यदि धर्मसम्मत कहा जाय तो चौथी विशेषता है ।

२१ विचारयुक्त वाणी

१ पुव्विं बुद्धीए पासेत्ता, तत्तो वक्कमुदाहरे ।
अचक्खुओ व नेयारं, बुद्धिमन्नेसए गिरा ।।

—व्यवहारभाष्य-पीठिका ७६

पहले बुद्धि से परख कर फिर बोलना चाहिए । अंधा व्यक्ति जिस प्रकार पथ-प्रदर्शक की अपेक्षा रखता है, उसी प्रकार वाणी बुद्धि की अपेक्षा रखती है ।

२ सव्वं सुणाति सोतेन, सव्वं पस्सति चक्खुना ।
न च दिट्ठं सुतं धीरो, सव्वं उज्झितुमरहति ।।

—थेरगाथा ८।५००

मनुष्य कान से सब कुछ सुनता है, आंख से सब कुछ देखता है, किंतु धीर-पुरुष देखी और सुनी सभी बातों को हर कहीं कहता न फिरे ।

३ अणुचिंतिय वियागरे ।

—सूत्रकृतांग ६।२५

पहले सोचकर बोलना चाहिए ।

४ अव्वल अन्देशो आँ गहे गुत्फार ।

—पारसी-कहावत

विचार कर बोलो !

५ बोली बोल अमोल है, जो कोई जाणे बोल ।
पहली अंदर सोचके, पाछै बाहिर खोल ।।

◆ वचन रतन मुख कोट है, होठ कपाट बणाय ।
समझ-समझ हर्फ काढ़िये, मत परवश पड़ जाय ।।

• पढ़-पढ़ पोथा रह गया थोथा, संस्कृत नै पारसी।
बिना बिचारी भाषा बोलै, ते किम पार उतारसी ।।

—राजस्थानी दोहे

६ मेरे शब्द ऊपर उड़ जाते हैं, किन्तु विचार पृथ्वी पर ही रह जाते हैं। शब्द बिना विचारों के कभी स्वर्ग नहीं जा सकते।

—शेक्सपियर

७ सोचो चाहे जो कुछ, पर कहो वही जो तुम्हें कहना चाहिए।

८ बोल्या अबोल्या थाय नहीं, बोल बोल्या ते पाछा मों मां पैसे नहिं। थूक्युं पाछु गलाय नहिं। जे बोल्या ते ध्रुवना अक्षर, जे मोंढे पान चाब्यां, ते मोढे कोयला चबाय नहिं, ते थी सौ गलने गली ने बात करीए।

—गुजराती कहावत

९ क्युं रांड कहकर नपूती सुणनी।

—राजस्थानी कहावत

२२ समयोपयोगी वाणी

१ कटुकं वा मधुरं वा, प्रस्तुतवाक्यं मनोहारि।
वामे गर्दभनाद-श्चित्तप्रीत्यै प्रयाणेषु ।।

—जगन्नाथ

कटु हो या मधुर, समयोपयोगी वचन अच्छा लगता है। जैसे—प्रयाण के समय बाँयी ओर गधे का रेंकना भी मन में प्रीति उत्पन्न करनेवाला हो जाता है।

२ नीकी हु फीकी लगे, बिन अवसर की बात।
जैसे वरनत युद्ध में, नहि श्रृंगार सुहात ।।
फीकी पे नीकी लगे, कहिए समयविचार।
सबको मन हर्षित करे, ज्यौं विवाह में गार ।।

—वृन्दकवि

३ बाल्ये सुतानां समरे भटानां,
स्तुतौ कवीनां सुरतेऽङ्गनानाम्।
रिकार-तुंकारगिरः प्रशस्याः,
स्वभावतः प्रीतिकरा भवन्ति ।।

बचपन में पुत्रों की, युद्ध में सुभटों की, स्तुति में कवियों की और सम्भोग के समय अङ्गनाओं की रिकार-तुंकारमय वाणी प्रशंसनीय एवं स्वभाव से ही प्रीति उत्पन्न करनेवाली होती है।

४ "प्रस्तावौचित्यं"—प्रस्ताव के योग्य बोलना।
अरिहंत भगवान का अतिशय माना गया है।

वृद्धवादी और सिद्धसेन दिवाकर—प्रस्ताव पर कही हुई साधारण बात भी बहुत बड़ा काम कर देती है। कुमुदचन्द्र नाम के एक विद्वान दिग्विजय के लिये विश्व में घूम रहे थे। बड़े-बड़े दिग्गज-विद्वान् उनसे पराजित हो गये। एक जैन के यशस्वी यती श्रीवृद्धवादी उन्हें जंगल में मिले। नाम का परिचय पाकर चर्चा का आह्वान किया। वृद्धवादी ने कहा—मध्यस्थ कौन होगा ? उत्तर मिला—अजपाल अर्थात् भेड़-बकरी चरानेवाले।

चर्चा शुरु हुई, कुमुदचन्द्र लगभग २०-२५ मिनट तक धाराप्रवाह संस्कृत बोलते रहे। अजपाल कुछ भी न समझ सके, अतः उन्होंने उस विद्वान् को रोककर यतीजी से बोलने के लिये कहा ! अवसरज्ञ यतीजी ने निम्नलिखित पद्य सुनाये—

काली कांबल अरणीसट्ठ, छाछे भरियो दीबड़ मट्ठ।
एवड़ पड़ियो नीले झाड़, अवर किसो है स्वर्ग विचार ॥

ओढ़ने के लिए जिनके पास काला कंबल है, आग सुलगाने के लिये अरणी की लकड़ी है, भूख-प्यास मिटाने के लिये छाछ से भरी हुई दीबड़ी है और जिनका एवड़ (भेड़-बकरियों का समूह) हरे जंगल में चर रहा है। ऐसे अजपाल ही वस्तुतः स्वर्ग का आनन्द ले रहे हैं, क्योंकि इससे बढ़कर और स्वर्ग हो ही क्या सकता है ? सारे अजपाल खुश हो गये और वृद्धवादी को विजयी घोषित कर दिया। (विजय का मूलकारण प्रस्तावोचित बोलना ही था)।

पराजित विद्वान् वृद्धवादी के शिष्य बने एवं आगे जाकर ये ही **सिद्धसेन दिवाकर** कहलाये। इनके लिए कलिकाल-सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्रसूरि ने कहा है कि **अनुसिद्धसेनं कवयः** संसार के सभी कवि सिद्धसेन के पीछे हैं अर्थात् सिद्धसेन विश्व के सर्वोत्कृष्ट कवि हैं। अस्तु !

५ अकाले विज्ञप्तं ऊषरे कृष्टमिव।

—नीतिवाक्यामृत ११।२९

असमय में कहना, ऊषर में बीज डालने का कष्ट करने के बराबर है।

६ सभा वा न प्रवेष्टव्या, वक्तव्यं वा समंजसम् ।
अब्रुवन् विब्रुवन् वापि, नरो भवति किल्विषी ।।

—मनुस्मृति ८।१३

सभा में या तो जाना नहीं चाहिये । यदि जाये तो उचित बोलना चाहिये। नहीं बोलनेवाला और समय से विपरीत बोलनेवाला मनुष्य पापी हो जाता है ।

७ कलाकलाप संपन्ना, जल्पन्ति समये परम् ।
घनागम विपर्यासे, केकायन्ते न केकिनः ।।

कलासमूह से सम्पन्न व्यक्ति उचित समय पर ही बोला करते हैं । यही सोचकर मेघऋतु के अभाव में मयूर नहीं बोलते ।

८ यत्र स्ववचनोत्कर्षो, भाषन्ते तत्र साधवः ।
कलाकण्ठः सदा मौनी, वसन्ते वदति स्फुटम् ।।

—भक्तामर-विवृति १६

सत्पुरुष वहीं बोलते हैं, जहाँ अपने वचन की कुछ उत्कृष्टता हो । कोकिल सदा मौनी रहती है, किंतु वसन्तऋतु में खुलकर बोलती है ।

९ निमित्तं च विकालानां, न वाच्यं कस्यचित् पुरः ।
किसी के सम्मुख हानिप्रद भविष्यवाणी नहीं करनी चाहिये !

२३ संक्षिप्तवाणी

१ अपने भावों को संक्षेप में व्यक्त करो ! अल्पशब्दों में अधिक भावों को व्यक्त करो।

—बाइबिल

२ जो कुछ कहो, संक्षेप में कहो, वरना पढ़नेवाला उसे छोड़ता जायेगा और जहां तक हो सके सादे शब्दों में कहो, वरना श्रोता मतलब नहीं समझेगा।

—रस्किन

३ चाहे हमारी बात कोई समझे या न समझे, संक्षेप में कहना हमेशा अच्छा है।

—वटलर

४ तुम जितना ज्यादा बोलोगे, लोग उतना ही कम याद रखेंगे।

—फीनेलन

५ शब्द पत्रों के समान है, जहाँ वे अधिक होते है, वहां फलयुक्त ज्ञानरूपी बातें बहुत कम दिखाई देती हैं।

—पोप

६ संक्षेप ही प्रतिभा और बुद्धिमत्ता की आत्मा है।

—शेक्सपियर

७ मन्त्रों का इसलिए अधिक महत्त्व है कि वे संक्षिप्त होते हैं।

—धनमुनि

८ बुद्धिमत्ता और विनोद में खास ध्यान देने की बात संक्षेप है।

९ अल्पशब्दों की प्रार्थना सुन्दरतम होगी। —लूथर

२४ परित्याग करने योग्य वाणी

१ गिरं च दुठ्टं परिवज्जए सया ।

—दशवैकालिक ७।५५

दुष्ट-भाषा का सदा परित्याग करते रहना चाहिए ।

२ न दुरुक्ताय स्पृहयेत् ।

—ऋग्वेद १।४१।६

दुष्टवचन बोलने की इच्छा भी नहीं करनी चाहिए ।

३ वाया दुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वैराणुबंधीणि महब्भयाणि ।

—दशवैकालिक ९।३।७

दुष्टरीति से बोले हुए वचन कांटों की तरह बड़ी मुश्किल से निकाले जाते हैं एवं महाभय के कारण बनते हैं ।

४ वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ।

—उत्तराध्ययन २१।१४

वचनयोग को समझकर कभी असभ्यवचन न बोले !

५ चन्दन तन हलका भला, मन हलका सुखकार ।
पर हलके अच्छे नहीं, वाणी अरु व्यवहार ।।

६ जं वइत्ता अणुतप्पइ .... तं न वत्त-वं ।

—सूत्रकृतांग १।९।२६

जिसके कहने से पछताना पड़े, वह बात मत कहो ।

७ अप्पत्तियं जेण सिया, आसु कुप्पिज्ज वा परो ।
सव्वसो तं न भासिज्जा, भासं अहियगामिणीं ।।

—दशवैकालिक ८।४८

जिससे अप्रीति उत्पन्न हो और सुननेवाला शीघ्र क्रुद्ध हो जाए, अहित करनेवाली भाषा सब काल में एवं सभी अवस्थाओं में न बोले ।

८ इमाइं छ अवयणाइं वदित्तए-अलियवयणे, हीलियवयणे, खिंसितवयणे, फरुसवयणे, गारत्थियवयणे, विउसवितं वा पुणो उदीरित्तए ।

—स्थानांग ६।५२७

छह तरह के वचन नहीं बोलने चाहिए—१—असत्य वचन, २—तिरस्कारयुक्त वचन, ३—झिड़कते हुए वचन, ४—कठोरवचन, ५—साधारण मनुष्यों की तरह अविचारपूर्ण वचन और ६—शान्त हुए कलह को फिर से भड़कानेवाले वचन ।

९ तहेव फरुसा भासा, जा य भूओवघाइणी ।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जओ पावस्स आगमो ।।

—दशवैकालिक ७।११

इसी प्रकार कठोर और जीवों का उपघात करनेवाली सत्यभाषा भी नहीं बोलनी चाहिए, क्योंकि उससे पाप लगता है ।

१० कटुसत्य से हानि :—

(क) पत्नी ने पूछा—मेरी रसोई कैसी बनती है ? पति ने कहा—रसोइया होता तो छुट्टी दे देता । पत्नी रुष्ट हो गई ।

(ख) पत्नी ने पूछा—मैं पीहर जाती हूं तब तुम्हें याद आती हूं या नहीं ? पति बोला—निकम्मा होता हूं तो याद आजाती है अन्यथा नहीं । बस, पत्नी रूठकर पीहर चली गई ।

(ग) मित्र ने अपने मित्र को कविता दिखलाई । उसने कहा—अभी तो तुम्हें अक्षर जोड़ना भी नहीं आता, अतः कविता बन्द कर दो ! बस, नाराज होकर मित्र ने बोलना ही बन्द कर दिया ।

(घ) सेठानी ने मुनीम से पूछा—बच्चा कैसा है ? उत्तर मिला—ठीक बन्दर जैसा है । बस, उसी वक्त छुट्टी मिल गई ।

११ अपुच्छिओ न भासिज्जा, भासमाणस्स अन्तरा ।

—दशवैकालिक ८।४७

बिना पूछे मत बोलो और बोलते हुए व्यक्ति के बीच में मत बोलो ।

२५ कटुवाणी

१ अग्निदाहादपि विशिष्टं वाक्पारुष्यम् । —चाणक्यसूत्र ७५

वाणी की कठोरता अग्निदण्ड से भी अधिक कष्ट देनेवाली है ।

२ वाक्पारुष्यं शस्त्रपातादपि विशिष्यते ।

—नीतिवाक्यामृत

वचन की कठोरता शस्त्र के प्रहार से भी बढ़कर है ।

३ कोई तलवार इतनी बेदर्दी से नहीं काटती, जितना की कटुवचन ।

—सर पी. सिन्डनी

४ कर्णिनालीक-नाराचान्, निर्हरन्ति शरीरतः ।
वाक्शल्यस्तु न निर्हर्तुं, शक्यो हृदिशयो हि सः ।।

—महाभारत, अनुशासनपर्व १०४

बन्दूक की गोली एवं तीर तो प्रयत्न करने पर शरीर से निकल जाते हैं, किन्तु वचन का शल्य नहीं निकल सकता,वह हृदय में चुभता ही रहता है ।

५ **"अन्धे के बेटे अन्धे ही होते हैं"** :—द्रौपदी का यही एक वचन महाभारत का मूलबीज था ।

६ सूच्यग्रेण सुतीक्ष्णेन, या सा भिद्येत मेदिनी ।
तस्यार्धं नैव दास्यामि, विना युद्धेन केशव !

—जैनपांडवचरित्र

दूत के रूप में कृष्ण दुर्योधन के पास गये और केवल पांच नगर देकर पांडवों से समझौता करने के किए कहा । दुर्योधन बोला—आप पांच नगर की बात कर रहे हैं ! लेकिन मैं तो तीखी सूई की नौक के आधे भाग जितनी पृथ्वी भी लड़ाई किए बिना नहीं दूंगा । (कृष्ण क्रुद्ध होकर चल पड़े, फलस्वरूप महाभारत हुआ) ।

२६ कटुवाणी-निषेध

१ मा वोच फरुसं किंचि ।

—धम्मपद १०।५

कठोर वचन मत बोलो !

२ उलटे-सुलटे एक हैं, जिसके अक्षर तीन[1] ।
दुःख पावै पर-आतमा, मत बोलो परवीन ।।

३ तुलसी मीठे वचन से सुख उपजै चिहुँ ओर ।
वशीकरण यह मन्त्र है, तजदे वचन कठोर ।।

४ आंधैनें आँधो कह्यां, कड़वा लागे वैण !
धीरे-धीरे पूछिए, थारा किस विध फूटा नैण ?

५ जहर न होणा जीभ से, शक्कर रहणा सैण ?
ऊठ चलेंगे एक दिन, पूठ रहेंगे बैण ।।

६ कुदरत को नामंजूर है, सख्ती जबान में ।
पैदा हुई न इसलिए, हड्डी जबान में ।।

—उर्दू शेर

७ बस राखो जीह कहै इम बांको, कड़वा बोलो परकत्त किसी ।
लोहतणीं तलवार न लागत, जीहतणीं तलवार जिसी ।
आगे अघ अघेरिया भारत, हेकण जीह-प्रताप हुआ ।
मन मिले माढवां, तिके जीह करे खिणमांह जुआ ।।

—कवि बांकीदास

---

[1] कटुक

२७ मर्मघातक-वाणी

१ णेव वंफेज्ज मम्मयं ।

—सूत्रकृतांग ६।२५

मर्म में घात करनेवाला वचन नहीं बोलना चाहिए !

२ मर्म वाक्यमपि नोच्चारणीयम् ।

मंमघातक वचन का उच्चारण भी करना नहीं चाहिए ।

३ सदा मूकत्वमासेव्यं, वाच्यमानेऽन्यमर्मणि ।

—विवेकविलास

किसी की मर्म की बात कहते समय मौन का सहारा लेना चाहिए ।

४ पररहस्यं नैव श्रोतव्यम् ।

—कौटिलीय-अर्थशास्त्र

दूसरों की गुप्त बात नहीं सुननी चाहिए ।

५ श्रुत्वा स्वमर्माणि, बाधिर्यं कार्यमुत्तमैः ।

—विवेकविलास

अपने मर्म की बातें सुनकर उत्तमपुरुषों को बहरा बन जाना चाहिए ।

६ दूसरे की मूर्खता पर किए गए व्यंग पर हम हँसते हैं, पर अपने ऊपर किए गए व्यंग पर हम रोना भूल जाते हैं ।

—म० नेकर

७ व्यंगोक्तियों के तीर से बचने के लिए रसिकस्वभाव सर्वोत्तम ढाल है ।

—सी० सिमन्स

८ स्पष्टवादी बनने के बहाने किसी का दिल मत दुखाओ !

वाद

१ किसी तथ्य या तत्त्व के निर्णय के लिए होनेवाला तर्क 'वाद' कहलाता है।

—नालन्दा-विशालशब्दसागर

२ वादे-वादे जायते तत्त्वबोधः।

जिज्ञासाभाव से किए गए वाद से तत्त्वबोध की प्राप्ति होती है।

३ यथार्थवादोविदुषां श्रेयस्कारो यदि न गुणप्रद्वेषी राजा।

—नीतिवाक्यामृत ५।१८

विद्वानों को यथार्थ वाद करना तभी अच्छा है, यदि राजा गुणों पर ईर्ष्या करनेवाला न हो।

४ राग-दोसकरो वादो।

—आचारांग-चूर्णि १।७।१

प्रत्येक वाद राग-द्वेष की वृद्धि करनेवाला है।

५ वादे-वादे वर्धते वैरवह्निः।

पक्षपातपूर्ण वाद से वैररूप अग्नि भड़क उठती है।

वाद के प्रकार

१ शुष्कवादो विवादश्च, धर्मवादस्तथापरः ।
कीर्तितस्त्रिविधोवाद, इत्येवं तत्त्वदर्शिभिः ।।

—अष्टकप्रकरण-वादाष्टक

तत्त्वदर्शियों ने तीन प्रकार का वाद कहा है—शुष्कवाद, विवाद और धर्मवाद ।

२ **चार वाद**—१ क्रियावाद, २ अक्रियावाद, ३ अज्ञानवाद, ४ विनयवाद ।

३ **पाँच वाद**—१ कालवाद, २ स्वभाववाद (प्रकृतिवाद), ३ उद्यमवाद, ४ कर्मवाद, ५ नियतिवाद ।

४ **पाँच वाद**—१ समाजवाद, २ साम्यवाद, ३ फासिस्टवाद, ४ नात्सीवाद, ५ पूँजीवाद ।

(१) **समाजवाद**— दो गाय हों तो एक पड़ोसी को देना ।

(२) **साम्यवाद**— दोनों गाय सरकार को दे दो, उनका थोड़ा-सा दूध तुम्हें मिल जाया करेगा ।[1]

---

१ **कार्लमार्क्स** के अनुसार साम्यवाद के समस्त सिद्धान्तों को एक वाक्य में व्यक्त किया जा सकता है कि समस्त व्यक्तिगत-सम्पत्ति का अवमूल्यन कर दो । **लुई ब्लेक** के मत में प्रत्येक व्यक्ति को योग्यतानुसार और प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यकतानुसार मिलना साम्यवाद है ।

- साम्यवादी समाजवादी ही है, किन्तु भयानक-शीघ्रता में ।

—जी. गफ

(३) **फासिस्टवाद**—गाय पास रखो, दूध सरकार को दे दो, उसमें थोड़ा तुम्हें बेच दिया जायेगा।

(४) **नात्सीवाद**—तुम्हारी गाय गोली मारकर सरकार ले लेगी।

(५) **पूँजीवाद**—दो गाय हों तो एक को बेच कर साँड खरीद लो।

—'न्यूयार्क ट्रिब्यून हेराल्ड' से

५ **छः प्रकार के वाद—**

(१) **रहस्यवाद**—आत्मा को परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित करने की (उससे मिलने की) तथा तादात्म्यरूप से परिणत होने की साहित्यिक प्रवृत्ति।

(२) **छायावाद**—आत्मा की प्रवृत्ति के साथ सम्बन्ध-स्थापन करने की प्रवृत्ति।

(३) **प्रगतिवाद**—सामाजिक दृष्टिकोण को प्रमुखता देनेवाला वाद। (यह मार्क्स के विचारों को महत्त्व देता है)।

(४) **प्रयोगवाद**—नये-नये प्रमाणों को महत्त्व देनेवाला वाद।

(५) **राष्ट्रवाद**—राष्ट्र के हितों को सर्वाधिक प्रधानता देनेवाला वाद।

(६) **हालावाद**—खाओ, पियो और मौज करो। (Eat, Drink and Be merry) जिसे संस्कृत में—**पिब, खाद च वामलोचने** (सर्वदर्शन समुच्चय में (चार्वाक)) कहा गया है।

विवाद

१ विरुद्धः-परस्पर-कक्षीकृत - पक्षाधिक्षेप - दक्षो वादो-वचनोपन्यासो विवादः ।

—स्याद्वादमंजरी-श्लोक ११

परस्पर ग्रहण किए हुए पक्ष के विरुद्ध अधिक्षेप करनेवाली वचनरचना का नाम 'विवाद' है ।

२ लब्धिख्यात्यर्थिना तु स्याद्, दुःस्थितेनाऽमहात्मना ।
छलजातिप्रधानो यः, स विवाद इति स्मृतः ।।

—हरिभद्रसूरि

धन आदि की उपलब्धि या प्रसिद्धि के इच्छुक नीच एवं तुच्छमतियों द्वारा जो छल एवं जाति की मुख्यता से कहा जाता है, उसे 'विवाद' कहते हैं ।

३ एक सुन्दर मुख से प्रस्तुत विवाद भी सुन्दर लगता है ।

—एडीसन

४ उपालम्भ का तीखापन कोई विवाद नहीं है ।

—र्‌यूफस कोयेट

५ विवाद अनेक कर सकते हैं, पर वार्तालाप नहीं ।

—एलकाट

६ विरोधियों के सम्मुख मैं विवाद करने को तो बाध्य हूं, पर उन्हें समझाने के लिए नहीं ।

—डिजराइली

७ छव्विहे विवाए पन्नत्ते, तं जहा—
ओसक्कइत्ता, उस्सक्कइत्ता, अणुलोमइत्ता, पडिलोमइत्ता, भइत्ता, भलेइत्ता।

—स्थानांग ६।५११

छः प्रकार से—विवाद किया जाता है। यथा—१—पीछे हटकर, २—उत्सुक होकर, ३—अध्यक्ष या प्रतिवादी को अनुकूल बनाकर, ४—अपना जोर होने से उन्हें प्रतिकूल बनाकर, ५—अध्यक्ष की भक्ति करके, ६—अध्यक्ष को अपना पक्षपाती बनाकर।

८ **विवाद का कारण एकान्तवाद**—एक भक्त '**सोऽहं सोऽहं**' का जाप कर रहा था। भक्तिमार्गी विद्वान् ने उसे रोकते हुए कहा—**सोऽहं-सोऽहं**' कहने से अहंभाव पैदा होता है, अतः ऐसा कहो 'दासोऽहं-दासोऽहं।' विचारा भक्त 'दासोऽहं' का जाप करने लगा। इतने में वेदान्ती विद्वान् ने टोकते हुए उसे **सदासोऽहं-सदासोऽहं** कहने का आदेश दे दिया। भक्त ज्यों ही 'सदासोऽहं' कहने लगा, एक भक्तिमार्गी ने पुनः आपत्ति उठायी एवं **दासदासोऽहं-दासदासोऽहं** का भजन करने के लिए कहा। यों मताग्रही विद्वान् आते गए और भक्त का जाप बदलते गए। (अनेकान्तवाद को न समझने के कारण ही एक-दूसरे की काट-छांट की जाती है अन्यथा उपरोक्त किसी भी पद्य का जाप किया जा सकता है)।

३१ विवाद्-निषेध

१ अलं विवाएण णे कतमुहेहिं ।

—निशीथ-भाष्य २६१३

कृतमुख (विद्वान्) के साथ हमें विवाद नहीं करना चाहिए ।

२ ऋत्विक्-पुरोहिताचार्यै-र्मातुलातिथि-संश्रितैः ।
बाल-वृद्धातुरैर्वैद्य-ज्ञाति-सबन्धि-बान्धवैः ॥ १७६ ॥
माता-पिताभ्यां जामीभि-र्भ्रात्रा पुत्रेण भार्यया ।
दुहित्रा दासवर्गेण, विवादं नो समाचरेत् ॥ १८१ ॥

—मनुस्मृति ४

पुरोहित, आचार्य, मामा, अतिथि, अपना आश्रित, बालक, बूढ़ा, रोगी, वैद्य, ज्ञाति (पितृपक्षीय स्वजन) । सम्बन्धी (दामाद, साला आदि) बान्धव (मातृपक्षीय स्वजन) । माता-पिता,बहिन-भाई, पुत्र, अपनी स्त्री, पुत्री और दासवर्ग इन सब के साथ विवाद नहीं करना चाहिए ।

३ भोजन के समय कोई विवाद मत करो , क्योंकि जो बिल्कुल भूखा नहीं, उसके विवाद सबल होते है ।

हैंटले

४ नाऽवाजिना वाजिनां हासयन्ति, न गर्दं पुरो अश्वान्नयन्ति ।

—ऋग्वेद ३।५३।२३

घोड़े के साथ घोड़े की ही प्रतियोगिता कराई जाती है, घोड़े से भिन्न की नहीं । गदहे को घोड़े के आगे स्थान नहीं दिया जाता । तत्त्व यह है कि अपने से नीचे व्यक्ति के साथ विवाद नहीं किया जाता ।

५ वादो नावलम्ब्यः ।

—नारदभक्तिसूत्र ७४

भगवद्भक्त को कभी वाद (विवाद) नहीं करना चाहिए ।

३२ वाचालता

१ बहुयं मा य आलवे !

—उत्तराध्ययन १।१०

बहुत नहीं बोलना चाहिए।

२ मोहरिए सच्चवयणस्स पलिमंथू।

—स्थानांग ६।५२९

वाचालता सत्यवचन का विघात करनेवाली है।

३ अतिवादं न प्रवदेन्न वादयेत्।

—विदुरनीति ४।११

अधिक नहीं बोलना चाहिए और न दूसरे से बुलवाना चाहिए।

४ गरजना बन्द करो, चमकना शुरू करो !

५ दो देखो, दो सुनो और एक बोलो !

६ कहे एक इन्सान, जब सुनले दो।
के, हकने जबाँ एक दी, कान दो॥

—उर्दू शेर

७ जयं चिट्ठे मियं भासे।

—दशवैकालिक ८।१९

यतनापूर्वक बैठना चाहिए और परिमित बोलना चाहिए।

८ स्पीक लेस दैन दाउ नो वेस्ट।

—किङलीयर

जानते हो, उससे कम बोलो।

९ जो अधिक जानता है, वह कम बोलता है और जो कम जानता है, वह अधिक बोलता है।

१० शुक-पिक लगे सवाद, भल थोड़ो ही भाखणो।
वृथा करे बकवाद, भेक लवै ज्यूं भेरिया!

—सोरठा-संग्रह

० कभी-कभी मेंढक भी बैलों से अधिक शोर मचा सकते हैं। पर न तो वे हल चला सकते हैं और न हीं उनके खाल की जूतियां बन सकती हैं।

११ पावस देख रहीम मन, कोयल साधा मौन।
अब दादुर वक्ता हुए, हमें पूछिहैं कौन?

—रहीम

१२ मुखरताऽवसरे हि विराजते।

—किरातार्जुनीय

मौके पर वाचालता भी अच्छी लगती है।

●

३३ वाचाल

१ अधिक एवं गर्हित वचन बोलनेवाला **वाचाल** कहलाता है ।

—**अभिधानचिंतामणि ३।११**

२ **बहुवक्ता भवति धूर्तजनः ।**

—**कौटलीय-अर्थशास्त्र**

अधिक बोलनेवाला प्रायः धूर्त होता है ।

३ मुहरी निक्कसिज्जइ ।

—**उत्तराध्ययन १।४**

वाचाल व्यक्ति (सड़े कानोंवाली कुतिया की भांति) दुर-दुर करके निकाल दिया जाता है ।

४ बहुवचनमल्पसारं, यः कथयति विप्रलापी सः ।

—**सुभाषितरत्नखंडमंजूषा**

जिसके भाषण में शब्द अधिक हो एवं सार कम हो, वह वक्ता **विप्रलापी** कहलाता है ।

५ Empty vessels noise much.

एम्पटी वैसल्ज नोयज मच ।

—**अंग्रेजी कहावत**

थोथा चणा, बाजे घणा ।

६ **फुंकारते हैं, वे डसते नहीं,**
गरजते हैं, वे बरसते नहीं ।

—**उर्दू शेर**

७ Barking dogs seldom bite.
बार्किंग डोग्ज सैल्डम बाइट।

—अंग्रेजी कहावत

गरजणा बादल बरसणा नहीं।

८ थूक उडाड़ै ते थोथा ने बहु बोलै ते वायड़ा।

—गुजराती कहावत

९ महात्मा सात्र्केटीस के पास एक वाचालयुवक भाषण की कला सीखने आया। उन्होंने दूनी फीस मांगी और कहा—चुप रहना एवं भाषण करना तुझे दोनों सिखाने पड़ेंगे।

१० स्वतंत्रता के दिन एक अंग्रेज ने कहा—भारत को अब जीभ छोटी बना लेनी चाहिए, क्योंकि भारत बोलता ज्यादा है और करता कम है।

११ वाचाल के विषय में अन्योक्तियां—

(क) बादल या तो बरस जा, या अब हो जा साफ।
थोथी तेरी गर्जना, करती हैं संताप॥
जब तू थोड़ा गरजता, ज्यादा था सम्मान।
अब झूठी बकवास से, घट गई तेरी शान॥

(ख) दुकानदार तू व्यर्थ की, बना रहा है बात।
पाव हाथ देता नहीं, नाप रहा सौ हाथ॥

(ग) रे वक्ता, ज्यादा न कर, अब मुख से बकवाद।
(तू) दिखलाता सोना हमें, अन्दर तेरे खाद॥

—दोहा-संदोह

३४ गप्पी और गप्पें

१ काग नो बाघ करे, रज नो गज करे, बात नो बतेसर करे ने राममांथी रामकहानी बनावे ।

◆ रांक नो राजा करे, कीड़ी नो कुंजर करे ने पप्पा मांथी पीर-महम्मद करे ।

—गुजराती कहावतें

२ लेना-देना कुछ नहीं, बातों का जमा खर्च ।

◆ हमारे बाबा ने घी खाया था, हमारे हाथ सूंघो ।

—हिन्दी कहावतें

३ आड नहीं है ईश नहीं है, तीन नहीं है पाया ।
विचलो झामर-झोलो नहीं है, पिलंग लोरे भाया !

—राजस्थानी-पद्य

४ गप्पी का पूत गपाकड़ा ।

— राजस्थानी कहावत

५ एक क्षत्रियाणी ने प्रण कर रखा था कि जो मुझे अनदेखी—अनसुनी बात सुनायेगा, उसे मैं पांचों पकवान बनाकर खिलाऊंगी । पकवान के भूखे अनेक मनुष्य आ-आकर इसे अनोखी-अनोखी बातें सुनाते, किन्तु चालाक क्षत्रियाणी—यह कहकर उन्हें बिना खिलाये ही निकाल देती कि यह बात तो मेरी देखी एवं सुनी हुई है । एक दिन एक पक्का पाहुना आया और निम्नलिखित पद्य सुनाकर पकवान खा गया । वे पद्य इस प्रकार हैं :—

कुत्तो बैठो हाट क, तोले ताकड़ी,
आके लागा अंब, फरांसां काकड़ी।
भैंस चढ़ी जु फरांस, खाजापीर मनाय के,
गधे मारी चीस क, हाथी ढाय के।
कीड़ी कियो सिणगार क, हाथी वरण कूँ,
ऊंट फिरे सुविचाल क, सल्ला करण कूं।
कादे लागी लाय, बुझावे तुणतुणी,
सुण खत्राणी ! बात, अदेखी-अणसुणी।

—भाषाश्लोकसागर

६ राजा के सामने एक दूती की गप्प—

दूति कहे सुन हो मनमोहन ! पाँख बिना मैं पंखेरु उड़ाऊ,
काग को हंस-कंसुबा की केसर, ऊँट को भार पपैये लदाऊँ।
पानी में आग पहाड़ में मेंढक, रेत में नाव तिराय दिखाऊँ,
जो मनमोहन ! वाद वदे मोहि, सोर के गंज में आग छिपाऊँ ॥

—भाषाश्लोकसागर

७ गप्पी लड़का—

एक लड़का बहुत गप्पी था। बाप ने उसे धमकाया और कहा चल निकल जा घर से ! गप्प छोड़कर ही घर में पैर रखना। लड़का चला गया और दो-तीन घंटे बाद वापस आया। बाप ने पूछा—कहां-कहां भटक कर आया है ? गप्पी ने जबाब दिया कि गप्प छोड़ने गया था, परन्तु ज्योंही मैंने उसे छोड़ा, वह हाथी बनकर मेरे पीछे हो गई। मैं दौड़कर एक वृक्ष पर चढ़ा तो वह भी मेरे पीछे-पीछे चढ़ गई। मैंने वृक्ष से छलांग लगाई तो वह भी कूद गई। लेकिन कूदते समय उसकी पूंछ वृक्ष की डाली में अटक गई और मैं भागकर अपने घर आ गया। बाप ने कहा—गप्प छोड़ने गया था या लेने ? तू तो दूनी गप्प लेकर आया है, जो कह रहा है कि हाथी तो निकल गया पर पूंछ अटक गई।

८ **तवा और चूल्हा—**

तवो कहै—हूँ सोनै रो हो, जद चूल्हो बोल्यो—क्यूँ झूठ बोले ! चढ़तो तो म्हारै ही ऊपर हो !

—राजस्थानी रूपक

९ **शीतली के ब्याह के चावल—**

भक्तों के पूछने पर योगी ने बतलाया भाई ! उम्र कितनी है ? यह तो कुछ पता नहीं, लेकिन शीतली (सीताजी) के ब्याह के चावल खाए हुए तो याद हैं। एक चालाक भक्त ने कहा—बाबाजी ! क्यों गप्प मार रहे हो ! वहाँ परोसनेवाला तो मैं ही था। (बाबा चुप)।

३५ हाँ में हाँ मिलानेवाले

१ लपसी पड्या तो कहे, दव ने नमस्कार कर्या।

- सोजा आव्या तो कहे जाड़ा थया. धप्पो वाग्यो तो कहे धूल उड़ी गई।
- बाबा ! गायो बहु थई, तो कहे दूध पीवीशुं ।
  बाबा ! गायो मरी गई तो कहे छाणा-मूतरनी गंध गई।
- रांड्या एटले हाथ-पगे हलक थया ने धणी नां औसियाला मट्या।

—गुजराती कहावत

३ नाक कट्टा तो कट्टा पर घी तो चट्टा।

—हिन्दी कहावत

४ **हांजीड़ों का मत :—**

(क) जेने आगल रहता हइए,
तेने अण गमतुं नवि कहिए।
कहे बिलाडीए हाथी मार्यो,
तो पण शुं ? जी हाँ कह दइए।

—गुजराती-पद्य

(ख) जेने गाडे वैसीए, तेना गीत गाइए।

- जेनो खाइए कोलीओ, तेनो वालीए धोलीओ।

—गुजराती कहावतें

(ग) Tw sy deto tw oark.
टु से डिटो टु वार्क।

—अंग्रेजी कहावत

हां में हां मिलाना।

(घ) दस बोघा दस बोघली, दस बोघन का बच्चा ।
गुरुजी तो गप्पां मारै, चेला कहै सब सच्चा ।।

४ हांजीड़ों की तस्वीर—

होते हांजीड़े जग में बड़े ही लबार ।[1]
हित-अहित का न करले ज़रा भी विचार ।। ध्रुवपद ।।
सेठजी काम तुमने गजब कर दिया,
न्यात अच्छी जिमाकर सुयश वर लिया,
इस जमाने में भारी लगाई बहार । होते हांजीड़े० ।।१।।
वर्ष चालीस के भी कुंवारे हैं आज,
सातवें वर्ष में ही सगाई का साज ।
करते हैं आपसे ही धनी शानदार । होते हांजीड़े० ।।२।।
भाई बदमाश था दावा अच्छा किया,
और लोगों को भी पंथ दिखला दिया ।
आप जैसे ही करते हैं ऐसा सुधार । होते हांजीड़े० ।।३।।
जो न लड़के पढ़ाये-यह अच्छी करी,
क्या है करवानी तुमको कहीं नौकरी ।
पैसेवालों को कन्याएँ हाजिर हजार । होते हांजीड़े० ।।४।।
न्यात नाराज थी पर न परवाह की,
करके शादी पचासी में वाह-वाह की ।
घस गया तन भी हो जाएगा अब तैयार । होते हांजीड़े० ।।५।।
मित्र हांजीड़े होते हैं ऐसे जहाँ,
हर किसी बात में मुख से कहते जी हाँ !
हैं खतरनाक बचते रहो संत सार ! होते हांजीड़े० ।।६।।

—उपदेशसुमनमाला

१ तर्ज—सारी दुनिया में दिन

दूसरा कोष्ठक

१ वक्ता

१ वक्ता दशसहस्रेषु ।

—व्यासस्मृति ४।५८

प्रति दससहस्र में एक मनुष्य वक्ता होता है ।

२ वक्तुर्गुणगौरवाद् वचनगौरवम् ।

—नीतिवाक्यामृत १५।७

वक्ता के गुण-गौरव से ही उसके वचन का गौरव होता है ।

३ अल्पाक्षर-रमणीयं, यः कथयति स खलु निश्चितं वाग्मी ।

—सुभाषितरत्नखण्डमञ्जूषा

थोड़े अक्षरों में जो अच्छी बात कहता है, वास्तव में वही कुशलवक्ता है ।

४ वक्ता अपने गहराई के अभाव को लम्बाई में पूर्ण करता है ।

—मान्टेस्क्यू

५ वक्ता के १४ गुण—

वाग्मी व्याससमः सवित् प्रियकथः प्रस्तावविवित् सत्यवाक्,
सन्देहच्छिदनेकशास्त्रकुशलो नाऽऽख्याति विक्षेपकम् ।
अव्यङ्गो जनरञ्जनो जितसभो नाहंकृतिर्धार्मिकः,
संतोषी च चतुर्दशोत्तमगुणा वक्तुः प्रणीता इमे ।

—प्राचीनसंग्रह से

(१) वेद व्यास के समान वक्ता, (२) ज्ञानी, (३) प्रिय कथा करनेवाला, (४) अवसरज्ञ, (५) स्वल्पभाषी, (६) सन्देह को छेदनेवाला, (७) अनेक

शास्त्रों का ज्ञाता, (८) विक्षेपकारी बात नहीं कहनेवाला, (६) व्यङ्ग नहीं कसनेवाला, (१०) जनता को प्रसन्न करनेवाला, (११) सभा को जीतनेवाला, (१२) निरभिमानी, (१३) धार्मिक, (१४) संतोषी। उत्तम वक्ता के ये १४ गुण माने गए हैं।

६ तद्वक्ता सदसि ब्रवीतु वचनं यच्छृण्वतां चेतसः,
प्रोल्लासं रसपूरणं श्रवणयोरक्ष्णोर्विकासश्रियम्।
क्षुन्निद्रा-श्रम-दुःख-कालगतिहृत् कार्यान्तरविस्मृतिः,
प्रोत्कण्ठामनिशं श्रुतौ वितनुते शोकं विरामादपि॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ ८६

जिसकी वाणी सुनकर श्रोताओं के चित्त प्रोल्लासयुक्त हों, कान वाणी रस से पूर्ण हों, आंखें आश्चर्य से विकसित हों, उन्हें भूख, निद्रा, श्रम, दुःख और समय का भान न रहे, दूसरे काम विस्मृत हो जाएँ, वे आगे की बात सुनने के लिए उत्सुक हों और भाषण की समाप्ति पर उन्हें खेद हो। ऐसे प्रभावशाली वक्ता को सभा में बोलना चाहिए।

२ वक्ता बनने के उपाय

१ वक्ता बनने के दो उपाय हैं—
उत्कट इच्छा और **अभ्यास** !

२ अभ्यास एवं आत्मविश्वास के बल पर कौन व्यक्ति है, जो एक सफल वक्ता नहीं बन सकता ?

—**हेनरी वार्डवीचर**

३ यदि तुम वाक्यशक्ति को प्रभावशाली, आकर्षक और मधुर बनाने के इच्छुक हो तो संगीत का अभ्यास करो, कोमल कविताएँ और उत्तमोत्तम नाटक पढ़ो। तुम्हारी जबान साफ, दिल को गुदगुदानेवाली, तथा कर्णप्रिय बन जाएगी। गुनगुनाकर न बोलो। काना-फूसी, फुसफुसाहट एवं रुक-रुक कर बोलने की आदत बुरी है। यदि मीठी जबान में ज्यादा आकर्षण उत्पन्न करना हो तो मुस्कराने और दिल खोलकर हँसने का अभ्यास करो। मुस्कराहट मनुष्य के दिल पर गहरा असर डालती है। बोलते समय जरा मुस्कुरा दो। तुम्हें देखकर श्रोता मन्त्रमुग्ध से हो जाएंगे।

—**'आकर्षणशक्ति' पुस्तक से**

३ वक्ता के ध्यान देने योग्य बातें

१ वक्ता को अपने दिमाग से बोलने का अभ्यासी तथा सभा के अनुकूल हेतु **देने**वाला होना चाहिए। उसे कभी प्रश्नोत्तररूप से, कभी किसी रूपक के सहारे से, कभी धर्म की दुहाई देकर, कभी विरोधी के स्वर में स्वर मिलाकर एवं कभी-कभी हास्यपूर्ण ढंग से व्याख्यान करना चाहिए।

२ वक्ता की भाषा संयत होनी चाहिए। जैसे—रांड को विधवा, अन्धे को सूरदास, जाट को चौधरी, नाई को खवासजी, आदि-आदि शब्दों द्वारा बोलना चाहिए। **अग्राम्यत्वं** तुच्छ भाषा न बोलना भगवान का अतिशय माना गया है। भगवती २।५ में देवता को **नोसंयती** कहना—ऐसे कहा है।

० राजा के पूछने पर एक ज्योतिषी ने कहा—आपके आगे सारा परिवार मर जाएगा। दूसरे ने कहा—आपकी आयु सबसे लम्बी है। राजा पहले से **असंतुष्ट** और दूसरे से **संतुष्ट** हुआ।

० अमरीका में एक वक्ता ने भाषण करते समय कहा—यहाँ २० प्रतिशत व्यक्ति **निरक्षर** हैं एवं दूसरे वक्ता ने कहा—यहाँ ५० प्रतिशत व्यक्ति **साक्षर** हैं। पहले को बीच में ही बिठा दिया गया तथा दूसरे का भाषण प्रेमपूर्वक सुना गया।

●

४ वक्ताओं की तरकीबें

१ वक्ताजन इन तरकीबों से, भाषण में रस बरसाते हैं।[1]
भाषण में रस बरसाते हैं, जनता में रोब जमाते है ।। ध्रुवपद।।
जो कुछ भी कहना होता है, पहले ही जबानी कर लेते।
या करके नोट एक कागज पर, फिर चल व्याख्यान में आते हैं ।।१।।
जिस मजहब की होती है सभा, उस ही मजहब के हेतु लगा।
अपने मजहब की खूबी का, जनता पर रंग चढ़ाते हैं ।।२।।
जिस किसी विषय का प्रतिपादन, झुक जाते हैं करने के लिए।
उस ही के अनुगत हेत्वादि, ला-ला के अजब मिलाते हैं ।।३।।
चालू व्याख्यान के अन्दर भी, यदि व्यक्ति नया कोई आ जाता।
उसके अनुकूल तुरत अपने भाषण का भाव घुमाते हैं ।।४।।
बनते हैं अपने मजहब के, कर कोशिश पूरे ही ज्ञानी।
फिर चुंबक रूप अपरमत के, सिद्धान्त ध्यान में लाते हैं ।।५।।
आवाज बुलन्द न हो गर्चे, जंगल में जाके अकेले ही।
उच्चस्वर भाषण करते हैं, अथवा ऊँचेस्वर गाते हैं ।।६।।
नामी-नामी वक्ताओं के, व्याख्यान ध्यान से सुनते हैं।
या पढ़ के अच्छे ग्रन्थों को, भाषण की शक्ति बढ़ाते हैं ।।७।।
निज आसन ऊँचा रखते हैं, जिससे सब परिषद् दीख पड़े।
वर्णन के अनुगत कर-मुख का, कुछ भाव अवश्य दिखाते हैं ।।८।।
नित नए ज्ञान के संग्रह का, अभ्यास सदा रखते चालू।
'धनमुनि' कहता ऐसे वक्ता, दुनिया में सुयश कमाते हैं ।।९।।

—उपदेशसुमनमाला

---

१ तर्ज—कलदार रुपइया चांदी का····

५ प्रभावशाली वक्ता

१ **स्वामी विवेकानन्द**—

अमेरिका (चिकागो), ११ सितम्बर १८९३, विश्वधर्मपरिषद् में **स्वामी विवेकानन्द** ने भाषण के प्रारम्भ में "**सिस्टर्स एण्ड ब्रॉदर्श ऑफ अमरीका**" ऐसे कहते ही आश्चर्यचकित श्रोताओं ने तालियां बजाईं, कारण वहां "**लेडीज एण्ड जेन्टिलमेन**" कहने का रिवाज था। स्वामीजी के वहां कई व्याख्यान हुए। आपसी सांप्रदायिक मतभेद पर उन्होंने कुएँ और समुद्र के मेढकों की कहानी सुनाई, श्रोताओं पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

२ **स्वामी रामतीर्थ**—इन्होंने ने एक बार न्यूयार्क में भाषण करते हुए कहा कि **श्रीकृष्ण** की बाँसुरी से आकृष्ट होकर **गोपियां** उनके पीछे दौड़ा करती थीं। लोगों ने इस बात का सबूत मांगा। एकदिन वे भाषण करते समय खिड़की से कूद कर दौड़ने लगे। श्रोतागण भी भान भूल कर उनके पीछे-पीछे चल पड़ा। कुछ दूर जाकर वे ठहरे और बोले—देखिए! मेरे जैसे साधारण व्यक्ति के पीछे भी आप लोग आकृष्ट होकर दौड़ पड़े तो फिर कृष्ण के पीछे गोपियां दौड़ती थीं—इस बात में आश्चर्य ही क्या है?

० स्वामीजी एक बार जापान से अमेरिका जा रहे थे। जहाज में बैठे हुए यात्री ने पूछा—अमेरिका में आपके मित्र एवं परिचित कौन हैं? स्वामी जी ने कहा—आप ही हैं। यात्री विस्मित होकर पूछने लगा—आपके पास सामान क्या है? उत्तर मिला—रुपया-पैसा आदि कुछ नहीं है। यात्री अत्यन्त प्रभावित हुआ और उन्हें अपने साथ ले गया।

३ **श्री यशोविजयजी**—इनका जन्म संवत् १६६५ एवं स्वर्गवास १७४५ **में** हुआ। ये न्याय के अद्‌भुत वेत्ता थे और विलक्षण वक्ता थे। **इन्होंने विक्रम** संवत् १७२६ को खंभात में जैनेतर विद्वानों के निवेदन पर **संस्कृत** भाषा में एक ऐसा व्याख्यान किया, जिसमें न तो कहीं अनुस्वार आने दिया और न ही संयुक्त अक्षर। संवत् १७३० को जामनगर में चारमास तक "**संजोगाविप्पमुक्कस्स**" उत्तराध्ययन सूत्र के इस एक पद्य पर ही व्याख्यान करते रहे।

बुद्धि इतनी तेज थी कि एकबार काशी में इन्होंने ७०० शार्दूलविक्रीडित छन्द एक ही दिन में याद कर डाले। ये सहस्रावधानी भी थे। इन्होंने स्मृति व गणितप्रधान एक हजार प्रश्नों का एक साथ समाधान किया था। बुद्धि एवं स्मृति से प्रभावित होकर काशी के विद्वानों ने इनको न्याय-विशारद के पद से विभूषित किया। इन्होंने लगभग १०० ग्रन्थों की रचना की और **लघुहरिभद्रसूरि** कहलाये।

१७४० में पाटण चौमासा हुआ। वहाँ '**संतोषबाई**' की प्रेरणा से ये **अध्यात्मयोगी श्री आनंदघनजी** से मिले। उनके सम्मुख दशवैकालिक सूत्र की प्रथम गाथा "**धम्मो मंगलमुक्किट्ठं**" के ५० अर्थ करके अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन किया।

अध्यात्मयोगी ने पूर्वोक्त ५० अर्थों के अतिरिक्त अनेक विचित्र एवं चमत्कारी अर्थ करके इनका अहं दूर किया। फिर इनके अत्याग्रह पर इन्हें दशवैकालिक सूत्र पढ़ाया। उसमें सारा भगवती सूत्र पढ़ा दिया (ये वस्तुतः भगवती सूत्र ही पढ़ना चाहते थे)।

० **महोपाध्याय समयसुन्दरजी**—

—सुनने में आया है कि विक्रम संवत १६४६ में **अकबर** बादशाह ने कश्मीर-विजय के लिये प्रस्थान करते समय एक विद्वद्-गोष्ठी की। बड़े-बड़े विद्वान् अपने नवनिर्मित ग्रन्थ लेकर आये। **समयसुन्दर जी** ने सभा में स्व-रचित आठ अक्षरों का एक ग्रन्थ रखा—"**राजा नो ददते सौख्यम्**"

इसका साधारण अर्थ यह होता है कि राजा हमें सुख देते हैं। लेकिन ग्रंथ-कर्ता ने जब इस ग्रंथ के आठ लाख अर्थ करके दिखलाये, तब सारा विद्वत्समाज चकित होकर समयसुंदरजी की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगा। बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ एवं काश्मीर विजय के बाद उसने अनेक जैनाचार्यों का सम्मान किया।

—मुनिश्री जंवरीमलजी के संग्रह से

४ भारत का सबसे छोटा वक्ता—

—मध्यप्रदेश के **जावरानगर** का छहवर्षीय बालक **विष्णुप्रसाद अरोड़ा** सम्भवत: भारत के इतिहास में सबसे छोटा वक्ता है, जिसने ढाई वर्ष की आयु से गीता, रामायण आदि धार्मिकग्रन्थों पर धाराप्रवाह प्रवचन देना प्रारम्भ कर दिया था। इस अल्पायु में ही यह बालक उत्तरप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के अनेक नगरों में प्रवचन देकर लाखों लोगों को मंत्रमुग्ध कर चुका है। उज्जैन के कुम्भ-पर्व में प्रवचनों से प्रभावित होकर, संत-महात्माओं ने इस बालक को **'बालयोगी'** की उपाधि प्रदान की।

—साप्ताहिक हिन्दुस्तान, ८ अगस्त १९६१

(मुरारीप्रसाद अरोड़ा)

६ लम्बा भाषण करनेवाले वक्ता

१ वचन-प्रतियोगिता में एक स्त्री ५३ घंटा ४३ मिनिट, दूसरी ६६ घंटा एवं तीसरी ६२ घंटा बोली। बोलते-बोलते एक की जीभ अकड़ी, दूसरी गिर गई और तीसरी चुप हुई।

२ आस्ट्रेलिया के '**श्री लेस्टर मेक ब्राईड**" ने लगातार ११३ घंटा बोलने का नया विश्वरिकार्ड कायम किया। वे अमरीका के **श्री क्लाइव जार्ज** से एक घंटा एक मिनिट अधिक बोले।

ड्युनेडिन (न्यूजीलैंड), १ जनवरी
—**हिन्दुस्तान**, ४ **जनवरी** १६६६

३ फ्रांस के एटर्नी "**लुई बारनार्ड**" के भाषण का रिकार्ड है—५ दिन तथा ५ रात्रि। एक बार जनरल "**जिम टैम**" नामक एक व्यक्ति को राजद्रोह के अपराध में प्राणदंड हुआ। उसकी अपील फ्रांस के राजा से की गई। बारनार्ड ने जजों से कहा कि जब तक अपील का फैसला न हो जाये। फांसी स्थगित रखी जाए। जजों ने इस बात को नहीं माना, पर उन्होंने बारनार्ड से पूरे मामले पर एक वक्तव्य सुनना स्वीकार कर लिया। बारनार्ड को अच्छा अवसर मिल गया। वे १२० घंटों तक जजों के सामने बयान देते रहे। जज परेशान हो गये। किसी को नींद आ गई, कुछ अन्यमनस्क हो गए। बारनार्ड यह जानते थे कि यदि वे अपना बयान देना रोक देंगे तो इसी बीच जज लोग अभियुक्त को फांसी के फंदे पर लटका देने की व्यवस्था कर देंगे। इसीकारण से लम्बे समय तक अपना भाषण देते गये। सौभाग्यवश, अभियुक्त की पत्नी राजा के पास से अपने

पति की मुक्ति का आदेश लेकर लौट आई। अभियुक्त को छोड़ दिया गया।

पर दुःख की बात यह हुई कि जजों ने बारनार्ड को न छोड़ा। उसके विरुद्ध यह अभियोग लगाया गया कि उसने चालाकी करके दीर्घकाल तक जजों के सामने भाषण देकर उनको परेशान किया, भ्रम में डाला तथा उन्हें ठगा। इस कारण जजों ने उसे कारावास में डाल देने का आदेश दिया।

४ **श्रीमती एलेन कापरका** ने सन् १६५८ में ९८ घंटों तक लगातार बोलकर बहुतों को विस्मित कर दिया। पर सन् १६६७ में क्लीवलैंड के **विक्टर विलियम्स** ने उन्हें पराजित कर दिया। उन्होंने १३८ घंटों तक लगातार बोलकर नया रिकार्ड स्थापित किया।

—**हिन्दुस्तान**, २० **फरवरी** १६७२

५ **जोर से चिल्लानेवाला**—दुनियां में सर्वाधिक तेज आवाज से चिल्लानेवाला आदमी "**फ्रेडयट जेल**" है। उसकी आवाज तीन मील तक साफ सुनाई देती है।

—**नवभारत, १६ जून १६५५**

७ यश के भूखे वक्ता

रंग व्याख्यान में कैसा आया रे, सच्ची कहो ?[१]
जोर मैंने तो काफी लगाया रे, सच्ची कहो ? ध्रुवपद ।।

व्याख्यान की बातें कितनी अजब थीं,
रंगीली तर्जें भी कितनी गजब थीं ।
भाव भी मैंने अद्‌भुत दिखाया रे, सच्ची कहो ? रंग····।।१।।
प्रायेण हेतु नए ही लगाये,
दृष्टांत भी ला नए ही झुकाए ।
राग भी ढब नए ही से गाया रे, सच्ची कहो ? रंग····।।२।।
नहीं कुछ भी मेरा सुगुरु की दया है,
लेकिन जहां मैंने भाषण किया है ।
आज तक तो सुयश ही कमाया रे, सच्ची कहो ? रंग····।।३।।
व्याख्यान काफी पड़े हैं पुराने,
लेकिन न उथले कभी मैंने पाने,
जब-कभी रच नया ही सुनाया रे, सच्ची कहो ? रंग····।।४।।
व्याख्यान में आज कितने थे भाई,
कितनी थी बहनें नजर ना टिकाई ।
तुमने अंदाज क्या कुछ लगाया रे, सच्ची कहो ? रंग····।।५।।

---

१ तर्ज – मैं तो दिल्ली से दुल्हन लाया रे, ऐ बाबूजी !

निद्रा तो शायद किसी ने ही ली हो,
बातें भी शायद किसी ने ही की हों।
चूं के चां ! मैं तो सुनने न पाया रे, सच्ची कहो ? रंग……॥६॥

वक्ता कई यों बनाते हैं बातें,
हांजीड़े श्रोता जी-हां-जी-हां-गाते।
चित्र छोटा सा 'धन' ने बनाया रे, सच्ची कहो ? रंग……।-७॥

—उपदेशसुमनमाला

८ मूर्ख वक्ता

१ बिना बुद्धि का वक्ता—बिना लगाम के घोड़े की तरह होता है।

—थ्यूफ्रास्टस

२ खड़ी मोटर की पों-पों, हलवाई, दरजी, सुनार व घी के चम्मचतुल्य वक्ता निकम्मा होता है।

३ गिर्जे की घंटी, थंभा, बाजा व केवल गर्जना करनेवाले मेघ के समान वक्ता भी अच्छा नहीं होता। वह सावधान एवं कथनी-करणी में एकरूप होना चाहिए। **"सुखमणी साहब"** में **गुरु नानक** ने कहा है—

अवर उपदेशे आप न करे,
आवत जावत जम्मे मरे।

४ वक्तुरेव हि तज्जाड्यं, यच्छ्रोता नावबुध्यते।
श्रोता अगर न समझे तो वक्ता की ही मूर्खता है।

५ पंडित कथा कर रहा था, स्वाद न आने से श्रोता उठ-उठकर जा रहे थे। फिर भी मूर्ख चिल्लाता ही रहा, आखिर चार आदमी रह गए। पंडित ने उनसे पूछा—कथा में क्या समझे भाई! उन्होंने कहा—समझना क्या है? तुम उठ जाओ तो तख्त ले जाना है, हम तो मजदूर हैं।

६ घरशूरा मूढपंडिया गांव गिवारे गोठ।
सभा मांहि बतलावतां, थर-थर धूजै होठ॥

—राजस्थानी दोहा

६ वक्तृत्वकला

१ भाषण देने की योग्यता या शक्ति को वक्तृत्व कहते हैं। वह यदि व्यवस्थित एवं आकर्षक हो तो 'वक्तृत्वकला' कहलाती है।

—नालंदा-विशालशब्दसागर के आधार पर

२ मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता।

—नैषधीयचरित ६।८

परिमित एवं सारगर्भित वचन बोलना ही वाक्पटुता है।

३ वक्तृत्वकला केवल शब्दों के चुनाव में ही नहीं, वरन् शब्दों के उच्चारण में, आँखों में और चेष्टाओं में भी होती है।

—ला० रोशोको

४ सर्वोत्तम वक्तृत्व वह है, जो स्वेच्छा से कर्म कराले और निकृष्ट वह है, जो उसमें बाधा डाले।

—लायड जार्ज

●

० वक्ता लोग व्याख्यान में समस्यापूर्ति, पहेली या कूट आदि कुछ ऐसे अद्भुत श्लोकों-दोहों का प्रयोग करते हैं, जिससे सभा वक्ता की विद्वत्ता से चकित और प्रभावित होकर उसके पीछे पागल-सी बन जाती है। यहां समस्यापूर्ति का दिग्दर्शन कीजिए।

१ **समस्यापूर्ति**—समस्यापूर्ति का अर्थ है, किसी एक छंद के एक पद को सुनकर शेष पदों को बना देना।

समस्या यथा—तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्—

(क) घृतं न श्रूयते कर्णे, दधि स्वप्ने न दृश्यते।
मुग्धे! दुग्धस्य का वार्ता? तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्॥

घी सुनने में नहीं आता, दही स्वप्न में भी नहीं दीखता। अरी मूर्खे! तू दूध की क्या बात कह रही है। तक्र (छाछ) भी इन्द्र को दुर्लभ है।

(ख) समस्या—ठंठंठंठंठठंठंठः—

रामाभिषेके मदविह्वलाया,हस्ताच्च्युतो हेमघटस्तरुण्याः।
सोपानमासाद्य करोति शब्दं, ठंठंठंठंठठंठंठः।

राम के राज्याभिषेक के समय एक मदविह्वल युवती के हाथ से सोने का घड़ा गिर गया। वह पेड़ियों से लुढ़क-लुढ़ककर नीचे आता हुआ ठंठं शब्द कर रहा है।

(ग) समस्या—हुताशनश्चन्दनपङ्कशीतल :—

सुतं पतन्तं प्रसमीक्ष्य पावके, न बोधयामास पतिं पतिव्रता।
तदा ह्यसौ तद्व्रतशक्तिपीडितो, हुताशनश्चन्दनपङ्कशीतलः॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १८८-१८९

एक पतिव्रता का पुत्र खेलता-खेलता अग्नि में गिरने लगा। पतिव्रता उसे देखकर भी स्थिर बैठी रही। (उसकी गोद में पति सो रहा था।) पतिव्रता के बल से अग्नि घिसे हुए चन्दन के समान शीतल हो गयी।

२ **प्रहेलिका**—(पहेली)

जिस कविता में गूढ़ अर्थवाले प्रश्न होते हैं, उसे पहेली कहते हैं। संस्कृत पहेलियां यथा—

(क) अपदो दूरगामी च, साक्षरो न च पण्डितः।
अमुखः स्फुटवक्ता च, यो जानाति स पण्डितः ॥१॥

जो अ-पद होकर भी दूरगामी हैं, साक्षर होकर भी पंडित नहीं हैं तथा अ-मुख होकर भी साफ-साफ बोलनेवाला है। जो उसे जानता है, वही पंडित है—बताओ कौन है? **उत्तर—लिखा हुआ पत्र**

(ख) एकचक्षुर्न काकोऽयं, बिलमिच्छन् न पन्नगः।
क्षीयते वर्धते चैव, न समुद्रो न चन्द्रमाः ॥

एक आंखवाला है, पर काग नहीं है। बिल की इच्छा करता है, पर सांप नहीं है तथा घटता-बढ़ता है, किन्तु समुद्र और चन्द्रमा नहीं है—बताओ क्या है? **उत्तर—सुई-धागा**

(ग) अस्ति ग्रीवा शिरो नास्ति, द्वौ भुजौ कर-वर्जितौ।
सीताहरणसामर्थ्यो, न रामो न च रावणः ॥

गर्दन है, सिर नहीं है, दो भुजाएं हैं, पर हाथ नहीं हैं, फिर भी सीताहरण के लिए समर्थ है। लेकिन न राम है और न रावण—बताओ कौन है? **उत्तर—कंचुकी**

(घ) वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराज-स्त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः।
त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी, जलं च बिभ्रन् न घटो न मेघः ॥

वृक्ष पर रहनेवाला है, किन्तु गरुड़ नहीं है। तीन नेत्रवाला है, पर

महादेव नहीं है। वल्कल-वस्त्र धारण करता है, लेकिन सिद्ध योगिराज नहीं है तथा जल से भरा हुआ है, परन्तु न घड़ा है, और न ही मेघ है—बताओ कौन है ?

उत्तर—नारियल

(ङ) पानीयं पातुमिच्छामि, त्वत्तः कमललोचने !
यदि दास्यसि नेच्छामि, नो दास्यसि पिबाम्यहम् ॥

हे कमलनेत्रे ! तेरे हाथ से पानी पीना चाहता हूं, किन्तु तू यदि दासी है तो नहीं पीऊंगा अन्यथा पी लूंगा।

(यहां **दास्यसि** क्रिया का भ्रम होता है।)

(च) एकोनांविशतिः स्त्रीणां, स्नानार्थं सरयूं गताः।
विंशतिः पुनरायाता, एको व्याघ्रेण भक्षितः ॥

एक पुरुष और बीस स्त्रियां नहाने के लिए सरयू नदी पर गईं। बीस नहाकर लौट आये और एक को बाघ खा गया।

(यहां **एकोनांविशति** शब्द का अर्थ उन्नीस समझ में आता है अतः अर्थ लगाना कठिन होता है।)

(छ) विषं भुङ्क्ष्व महाराज ! स्वजनैः परिवारितः।
विना केन विना नाभ्यां, कृष्णाजिनमकण्टकम् ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १६१

महाराज ! आप परिवारसहित निष्कंटक षकार, ककार और दो नकार निकालकर "कृष्णाजिन" अर्थात् राज्य का उपभोग करें। कृष्णाजिन शब्द से उपरोक्त अक्षर निकाल लेने पर **ऋ-आजि-अम्** शेष रहता है, इनकी संधि करने पर **राज्यं** बन जाता है।

(ज) तातेन कथितं पुत्र ! लेखं लिख ममाज्ञया।
न तेन लिखितो लेखः, पितुराज्ञा न लोपिता ॥

पिता ने पुत्र से लेख लिखने के लिए कहा, उसने नम्र होकर लिख दिया एवं **पिता** की आज्ञा का लोप नहीं किया।

(यहां नतेन शब्द के कारण अर्थ लगाने में कठिनाई होती है।)

३ **अन्तर्लापिका**—

जिस पहेली का अर्थ उसी के अन्तर्गत हो, उसे **अन्तर्लापिका** कहते हैं। देखिये कुछ उदाहरण—

(क) का काली, का मधुरा, का शीतलवाहिनी गङ्गा ?
कं संजघान कृष्णः, कं बलवन्तं न बाधते शीतम् ??

काली वस्तु क्या है ? **काकाली**—काकों की पंक्ति।
मीठी वस्तु क्या है ? **कामधुरा**—कामधेनु गाय।
शीतल प्रवाहवाली गंगा कौन-सी है ? **काशीतलवाहिनी**—काशी के निकट बहनेवाली।
कृष्ण ने किसको मारा ? **कंसं**—कंस को,
ऐसा बलवान कौन है जिसे शीत पीड़ित नहीं करता ? **कम्बलवन्तं**—जिसके पास कम्बल है, वह व्यक्ति।

(ख) सन्तश्च लुब्धाश्च महर्षिसंघा,
विप्राः कृषिस्थाः खलु माननीयाः।
किं किं समिच्छन्ति तथैव सर्वे,
नेच्छन्ति किं माधवदाघयानम्॥

—**सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ २०५**

सन्त, लोभी, महर्षिगण, ब्राह्मण, कृषिकार और सम्माननीय व्यक्ति। बतलाओ ये सब क्या चाहते हैं और क्या नहीं चाहते ?
ये क्रमशः **माधवदाघयान** चाहते हैं—अर्थात् सन्त **मान** चाहते हैं, लोभी **धन** चाहते हैं महर्षिगण **वन** चाहते हैं, ब्राह्मण **दान** चाहते हैं, कृषिकार **घन** (मेह) चाहते हैं, और सम्माननीय व्यक्ति **यान (सवारी)** चाहते हैं। लेकिन **माधवदाघयान** नहीं चाहते। अर्थात् वैशाखमास की गर्मी में **गमन** करना नहीं चाहते।
(यहां **माधवदाघयान** में विद्यमान अंतिम **न** के पीछे क्रमशः **मा ध, व, दा, घ, या** जोड़कर प्रथम प्रश्न का उत्तर दिया गया है।

(ग) भवित्री रम्भोरु त्रिदशवदनग्लानिरधुना,
स रामो मे स्थाता न युधि पुरतो लक्ष्मणसखः।
इयं यास्यत्युच्चैर्विपदमधुना वानरचमू—
र्लधिष्ठेदं षष्ठाक्षरपरविलोपात् पठ पुनः ।।

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ २१४

हे सीता ! देवों के मुख पर अब ग्लानि छा जाएगी। लक्ष्मण का भाई राम अब मेरे सामने युद्ध में नहीं ठहर सकेगा और यह वानरों की सेना अब विकट विपत्ति में पड़ जाएगी। रावण के कहे हुए इन तीन पद्यों में से सातवां अक्षर निकालकर, हे शिष्य ! इन्हें पुनः पढ़ो ! इसका दूसरा ही अर्थ निकलेगा।

जैसे—हे सीता ! दशवदन (रावण) के मुख पर अब ग्लानि छा जायेगी। राम मेरे सामने युद्ध में ठहर सकेगा और वानर सेना अब ऊंचे पद को प्राप्त होगी। (यहां तीनों पद्यों में से सातवें अक्षर क्रमशः **"त्रि-न-वि"** निकाले गए हैं।)

४ **क्रियागुप्त—**

(क) आगतः पाण्डवाः सर्वे, दुर्योधनसमीहया।
तस्मै गां च सुवर्णं च, रत्नानि विविधानि च ।।

जो भी याचक धन की इच्छा से आया। पाण्डवों ने उसे गाय, सोना एवं रत्न आदि दिये। (यहाँ अदुः क्रिया गुप्त है)

(ख) ललाटतिलकोपेतः, कृष्णः कमललोचनः।
गोकुलेऽत्र क्रियां वक्तुं, मर्यादा दशवार्षिकी ।।

तिलकधारी एवं कमलसमान नेत्रवाले श्रीकृष्ण गोकुल में बाल्यलीला करते थे। यहां गुप्त क्रिया खोजने के लिए दस वर्ष का समय है, बतलाओ क्या क्रिया है ? (यहां "ललाट" क्रिया गुप्त है, जो "लटबाल्ये" धातु के लिट् लकार का रूप है।)

(ग) अम्लानपङ्कजा माला, कण्ठे रामस्य सीतया,
मुधा बुधा भ्रमन्त्यत्र, प्रत्यक्षेपि क्रियापदे।

खिले हुए फूलों की माला सीता ने राम के गले में डाली। यहां क्रिया के लिये विद्वान् व्यर्थ ही भटक रहे हैं, क्योंकि **प्रत्यक्षेपि** ही क्रिया है।

५ **राजस्थानी पहेलियां**—

० छोटीसीक चींमली, लालबाई नाम।
चढ़ गई डूंगरां, उड़ाय ल्याई गाम॥

उत्तर—आग

० छोटी-सी डिब्बी, डिब-डिब करै।
चलतो मुसाफिर गिर-गिर पड़ै॥

उत्तर—आँख

० जड़ सूको ऊपर हर्यो, पान-पान में चन्द।
मैं तनै पूछुं हे सखी! बादल बरसण नन्द॥

उत्तर—मोर

० जलमतड़ी गज तीस की, भर जोबन गज चार।
ढलती तो गज साठ की, मूवां अन्त न पार॥

उत्तर—छाया

० डाढ़ीवालो छोकरो, बिकै बजारां मांय।
देवां कै चरणां चढै, ईं को अरथ बताय॥

उत्तर—नारियल

० दधिसुत[१]-ता सुत[२]-ता सुता[3], तसु वाहन[४]-भख[५] होय।
ता माता[६]-भगिनी[७]-पती[८], निस-दिन भजिए सोय॥

—हिन्दी पहेली

उत्तर—१ कमल, २ ब्रह्मा, ३ सरस्वती, ४ हंस, ५ मोती, ६ सीप, ७ लक्ष्मी, ८ विष्णु।

० दो मां बेटी, दो मां बेटी, चली बाग में जाय।
तीन नींबू तोड़कर, साबत-साबत खाय ।।

उत्तर—माता, पुत्री और दौहित्री

० धूप लगै सूखै नहीं, छाया सूं कुमलाय।
म्हें थन्नें पुछुं हे सखी ! पवन लग्यां मर जाय ।।

उत्तर—पसीना

० पाणी मांही नीपजै, पान फूल फल नाय।
साजन ! वो फल लावज्यो, राजा-रंक सब खाय ।।

उत्तर—नमक

० पान सड़े घोड़ो अड़े, विद्या बीसर जाय।
अंगारां बाटी जलै, कहो चेला किण न्याय ?

उत्तर—फेरी नहीं

० पेली म्हे जाम्या, पाछै बड़ो भाई।
धूम धड़ाके बाबो जाम्यों, पाछै जामी माई ।।
उत्तर—दूध, दही, मक्खन, छाछ

० ऊंटवाला ओठिया ! थारै लारै कुण बैठी ?
यां की सासू म्हांकी सासू, आपस में मां बेटी ।।

उत्तर—ससुर-बहू

११ भाषण

१ भाषण मस्तिष्क का दर्पण है ।

—सेनेका

२ भाषण मानव-मस्तिष्क पर शासन करने की कला है ।

—प्लेटो

३ क्रान्तियों का जन्म लिखित शब्दों से नहीं, ध्वनित शब्दों (भाषणों) से हुआ है ।

—हिटलर

४ भाषण करने की योग्यता प्रसिद्धि प्राप्त करने का सीधा मार्ग है । इससे मनुष्य जनता के सामने आ जाता है । और साधारण जनता से ऊपर उठ जाता है ।

—डेलीकारनेगी

५ भाषण शक्ति है । भाषण कायल करने के लिए, मत बदलने के लिए और बाध्य करने के लिए दो ।

—एमर्सन

६ साधारण से साधारण विषय पर भी एकदम भाषण देने खड़े न हो जाओ ! पहले तैयारी करो !

७ चार तरह से भाषण दिये जाते हैं—
१ अपनी कमजोरी दिखाकर, २ अपनी तारीफ करके, ३ प्रश्न उठाकर और ४ कथा द्वारा ।

८ भोजन और भाषण के तीन गुण हैं—प्रियकर, हितकर और परिमित ।

९ अमेरिका के राष्ट्रपति—**विल्सन** से किसी ने—पूछा दस मिनिट भाषण देना हौ तो ? दो सप्ताह तक सोचना पड़ेगा ।
एक घंटा बोलना हो तो ? एक सप्ताह तक सोचना पड़ेगा ।
अगर दो घंटा बोलना हो ? चलो अभी तैयार हूँ ।
तत्त्व यह है कि थोड़ा भाषण देने में अधिक सोचना पड़ता है ।

१० भाषणों और भाषण करनेवालों से डरना और उनसे दूर रहना अच्छा है ।

—**गांधी**

११ जापान एवं अफ्रीका की कई जातियों में वक्ता को एक पैर से खड़े होकर भाषण देना पड़ता है । पैर गिरते ही बैठना होता है । रहस्य यह है कि भाषण थोड़ा दिया जाये ।

१२ बात

१ जानी जानेवाली या जताई जानेवाली वस्तु या स्थिति को बात कहते हैं।

—नालन्दा-विशालशब्दसागर

२ बात प्यारी कोनी बतुओ प्यारो है।

—राजस्थानी कहावत

२ बात कर जाने तो बड़ी ही करामात है।

—भाषाश्लोकसागर

४ सबके आगे होयकर, कबहु न करिये बात।
सुधरे शाबासी नहीं, बिगड़े गाली खात।।

५ बिगरी बात बनें नहीं, लाख करो किन कोय।
"रहिमन" फाटे दूध को, मथे न माखन होय।।

६ गई बात नैं घोड़ा ही को नावड़ै नी।

—राजस्थानी कहावत

७ तीर कमानों ग़ल्ल जबानों।

—पंजाबी कहावत

८ कम बातें करो, कम में बातें करो और काम की बातें करो!

९ जब तक किसी बात के बारे में पूरा प्रमाण नहीं हो और उसे साबित न कर सके, तब तक उसे कहना ही नहीं चाहिए।

—गांधी

१० बातां सूं किसो पेट भरीजै?

—राजस्थानी कहावत

११ बातेड़ी की बिगड़ै।

—श्री कालूगणी

१२ बात थोड़ी र बैदो घणो।

० नई बात नौ दिन, खांची-ताणी तेरह दिन।

—राजस्थानी कहावतें

१३ जो बातें विचार पर छोड़ दी जाती हैं, वे कभी पूरी नहीं होतीं।

— हरिभाऊ उपाध्याय

१४ हैये छे पण होठे नथी।

समय पर बात याद न आने से ऐसे कहा जाता है

० खरी बातमां शानो खार।

—गुजराती कहावतें

१५ **बातचीत में १३ वर्ष**—अंदाजा लगाया गया है कि स्त्री-पुरुष अपने जीवन के तेरह वर्ष बातचीत में व्यतीत कर देते हैं। ये हर रोज साधारणतया १८ हजार शब्द बोल देते हैं, जिनसे एक पुस्तक के ५४ पृष्ठ भर सकते हैं। एक वर्ष में ८०६ पृष्ठ की ६६ पुस्तकें तैयार हो सकती हैं और ७० वर्ष की उम्र में तीन-तीन सौ पृष्ठों की ४६२० पुस्तकों का एक पुस्तकालय बन सकता है।

—हिन्दी मिलाप, ९ जून १९५४

१६ जिन्ने मुंह उन्नीयां गल्लां।

मुंह जितनी बातें।

० थुकां नाल बड़े नहीं पकदे।

कोरी बातों से काम नहीं होता।

० बिआह दे बिच बो दा लेखा।

—पंजाबी कहावतें

जरूरी बात के बीच में गैरजरूरी बात करने लग जाना।

१३ हंसी आनेवाली बातें

१ एक ब्राह्मण गोमुखी में हाथ डालकर विष्णु भगवान का जाप करता था एवं निम्नलिखित श्लोक बोलता था—

राम कृष्ण गोपाल दामोदर, हरि माधव भवजलतरणम्,
कालियमर्दन कंसनिकंदन, देवकीनदंन त्वां शरणम्।
चक्रपाणि वाराह महीपति, जलसायक मंगलकरणम्,
एते नाम जपो निशिवासर, जनम-जनम के भयहरणम्॥

ब्राह्मण की छोटी लड़की भी अपने पिता के साथ इसी श्लोक का जाप किया करती थी। क्रमशः उसकी ब्राह्मण पुत्र **देवकीनदंन** से शादी हुई। शादी होते ही उसका जाप बंद हो गया, क्योंकि भारत के कुछ क्षेत्रों में स्त्रियाँ अपने पति का नाम नहीं लिया करतीं। डेढ़-दो वर्ष बाद उसके एक पुत्री हुई। उसका नाम **चम्पा** रखा। अब जाप भी शुरू कर दिया गया **देवकीनंदन त्वां शरणं** के स्थान पर **चम्पा के चाचा त्वां शरणं** जचा लिया गया। जब वह पीहर आयी तब **चंपा के चाचा** सुनते ही उसका पिता चौंका और पुत्री की मूर्खता पर हंसा। फिर तत्त्व समझाकर कहा कि भगवान का जाप करने में हर्ज नहीं है।

२ नाभा (पंजाब) में एक बहन दर्शनार्थ आई। मैंने पूछा—किसके घर से हो ? बहन ने कहा—मैं नाम किस-तरह लवां ? उसदे नाम चे "चचा, नना, ते णणा" पैंदा है, तुसी नहीं समझे ? मैंने कहा क्या चानण। हां ! हां ! एही। मुझ कुछ हंसी आई एवं विचार हुआ कि कितना अज्ञान है। जो नाम लेकर भी मैं नाम नहीं लेती, ऐसा मानती है। वस्तुतः कुछ समझ में

नहीं आता कि भारत के कतिपय प्रदेशों में पति का नाम न लेना, यह परम्परा कैसे चली और किसने चलायी ?

—धनमुनि

३ नई बात—

राजा ब्राह्मणों से नई बात सुनता था। दक्षिणा में एक मोहर देता था। रत्न ब्राह्मण की पुत्री-कमला आई, राजा ने कहा—"देरी से क्यों आई ?" कमला ने उत्तर दिया—मेरा अविवाहित पति घर आ गया। माता-पिता नहीं थे। मैंने रसोई बनाकर खिलाई। खाते ही पेट में दर्द हो गया एवं वह मरगया, उसे खड्डे में गाड़कर मैं यहाँ आई हूं। राजा ने कहा—"क्या यह सत्य है ?" कन्या बोली—जो आप रोज सुनते हैं, यदि वह सत्य है तो यह भी सत्य है। बुद्धिविलक्षणता से प्रभावित होकर राजा ने उसे दो मोहरें दक्षिणा में दीं।

१४ बात करते समय सावधानी

१ दिवा निरीक्ष्य वक्तव्यं, रात्रौ नैव च नैव च।
संचरन्ति महाधूर्त्ता, वटे वररुचिर्यथा ॥
दिन में देखकर बात करनी चाहिये, किन्तु रात के समय तो बात करनी ही नहीं चाहिये। वटवृक्ष में वर रुचिवत् धूर्त व्यक्ति घूमते ही रहते हैं।

२ बात न करीये वाटे, बात न करीये घाटे नें, बात न करीये राते।
० बाड़ सांभले बाड़ नो कांटो सांभले नें भींत ने पण कान होय छे।
० पेट मां ते पेटी मां नें होठ बहार ते कोट बहार।
० साकर ना हीरा गल्या ते गल्या,
हाथी ना दंतूशल नीकल्या ते नीकल्या।

—गुजराती कहावतें

३ एक-एक बात नौ-नौ हाथ।
० एक बात हजार मुख।

—राजस्थानी कहावतें

४ बात की रक्षा—

(क) आकार्यसिद्धे रक्षितव्यो मन्त्रः।

—नीतिवाक्यामृत १०।६

काम सिद्ध न हो, वहाँ तक बात गुप्त रखनी चाहिए।

(ख) खेत्तं कालं पुरिसं, नाऊण पगासए गुज्झं।

—निशीथभाष्य ६२२७ तथा बृहत्कल्प-भाष्य ७६०

देश, काल और व्यक्ति को समझकर ही गुप्त रहस्य प्रकट करना चाहिए।

(ग) जिसने इतना भी जतला दिया कि मेरे पास कुछ भेद है, तो उसने आधा भेद तो खोल दिया और आधा खुलनेवाला ही है।

—लुकमान हकीम

(घ) होती कहने योग्य जो, तो क्यों रखते गुप्त ?
भूल कर रहे मूर्खजन, बात पूछ कर गुप्त।

—दोहासंदोह

५ लूगायां रै पेट में बात को टिकै नी।

—राजस्थानी कहावत

० पुंडरीकनाग और गरुड़ :—

राजकुमार को सांप डस गया, क्रुद्ध राजा ने सर्पयज्ञ किया। मन्त्राकृष्ट सभी नाग उपस्थित हुए। पुंडरीकनाग भाग गया और एक ब्राह्मणपुत्री के साथ ब्राह्मणरूप से रहने लगा। एकदिन उसने ब्राह्मणी से अपना गुप्तभेद देकर कहा कि मुझे पकड़ने के लिए गरुड़जी अन्यपक्षी के रूप में घूम रहे हैं, अतः तू सावधान रहना।

इधर नागपंचमी के दिन स्त्रियों के साथ ब्राह्मणी जल भरने गई, वहाँ स्त्रियां कह रही थीं कि जल्दी से पानी भर लो ! आज नागपूजा के लिए चलना है। ब्राह्मणी ने कहा—बहनों ! मैं तो नहीं जाती, मेरा स्वामी स्वयं नागदेव ही है।[1]

---

१ **इसी प्रसंग को एक कवि ने राजस्थानी गीत द्वारा इस प्रकार व्यक्त किया है—**

सावण पहली पंचमी हो, धण चालीजी, चालो पूजण नाग।
हेजो तो काँई चाली पूजण नाग, नाग मेरे घर में पीया।
मैं पूजण कैसे चलूँ, सखी ! मेरा धड़के हीया।
फण कूं लिए फुलाय, नाग एक खेलै कालो।
सखी ! यूँ डर मुझ कुं लगे मूंछ दे आई हो तालो।

गरुड़ ने यह बात सुनली और चिड़िया के रूप से घड़े पर बैठकर उसके घर आ गया। घर आते ही चिल्लाकर स्त्री ने कहा—पतिदेव ! जल्दी आकर मेरे सिर से घड़ा उतारो। बोझ के मारे गर्दन टूट रही है। नाग समझ गया कि गरुड़ आ पहुंचा। ज्योंही घड़ा उतारने लगा, गरुड़ ने नाग को आ दबोचा। नाग ने कहा—

स्त्रीषु गुह्यं न कर्त्तव्यं, प्राणैः कण्ठगतैरपि ।
हन्यते पक्षिराजेन, पुण्डरीको महाफणी ॥

प्रणान्त के समय भी स्त्रियों के सामने गुप्त बात नहीं कहनी चाहिये। इसी कारण से गरुड़ द्वारा पुंडरीकनाग मारा जा रहा है।

गरुड़ ने पूछा—क्या कहा ? नाग ने श्लोक को दुहराया। फिर ज्योंही गरुड़ नाग को मारने लगा, बुद्धिमान स्त्री ने निम्नलिखित श्लोक कहा—

एकाक्षरप्रदातारं, यो गुरुं नाभिवन्दते ।
श्वानयोनिशतं भुक्त्वा, चाण्डालेष्वभिजायते ।

जो एक अक्षर ज्ञान देनेवाले गुरु को भी वन्दना नहीं करता, वह कुत्ते की सौ योनियाँ भोगकर चाण्डालों में जन्म लेता है।

उक्त श्लोक का तत्त्व समझकर गरुड़ ने नाग को गुरु माना और जीवित रहने दिया। लोकवाणी के अनुसार नागों के नौ कुल थे। उनमें आठ तो सर्पयज्ञ में होम दिये गये। आज जो सांप नजर आ रहे हैं, वे सब बचे हुए पुंडरीकनाग की संतानें हैं, अस्तु !

—श्री कालुगणी से श्रुत

१५ बात का निर्वाह

१ न चलति खलु वाणी सज्जनानां कदाचित् ।

—सुभाषितरत्नखंडमंजूषा

सत्पुरुषों की कही हुई बात कभी नहीं बदलती ।

२ जबान हार्‌यो ते जन्म हार्‌यो ।

० मर जावणो पण बात राखणी ।

—राजस्थानी कहावतें

३ शिबि दधीचि बलि जो कछु भाखा,
तन धन तजेउ वचन प्रण राखा ।
रघुकुल रीति सदा चलि आई ।
प्राण जाय वरु वचन न जाई ।।

—रामचरितमानस

४ वचन छल्यो बलिराय, वचन कौरव कुल खोयो,
वचन काज हरिचन्द, नीच घर पाणी ढोयो ।
वचन काज श्री राम, लंका विभीक्खण थाप्यो,
वचन काज जगदेव, शीश कंकाली आप्यो ।
वचन बोलि कुवचन करै, ग्रही जीभ तसु कट्टिये,
बेताल कहै विक्रम सुणो, सुध वच नाहि पलट्टिये ।।

५ गल्लां करन सुखालियां, औखे पालने बोल ।

० गल्ल लखदी, अक्ल कक्ख दी ।

—पंजाबी कहावतें

१ बोलचाल में बहुत आनेवाला ऐसा बंधा हुआ चमत्कारपूर्ण वाक्य **कहावत** कहलाता है, जिसमें कोई अनुभव या तथ्य की बात संक्षेप में कही गई हो।

—**नालन्दा-विशालशब्दसागर**

२ कहावतें युगों का सद्ज्ञान है।

—**जर्मन कहावत**

३ कहावतें दैनिक-अनुभवों की पुत्रियां हैं।

—**डच कहावत**

४ किसी भी **राष्ट्र** की प्रतिभा, कुशाग्रता और उसकी आत्मा का पता उसकी कहावतों से लगता है।

—**बेकन**

५ कई कहावतों की सत्यता आज संदिग्ध हो गई है। **जैसे** :—

दीकरी ने गाय, दौरे त्यां जाय।
दरजी नों दीकरो जीवे त्यां सुधी सीवे।
सोटी बाजे चम-चम, विद्या आवै घम-घम।
स्पष्टवक्ता सुखी भवेत्। इत्यादि—

१७ मौन

१ मुनेर्भावो मौनम् ।

—आचारांग २।६ टीका

मुनि का भाव **मौन** कहलाता है ।

२ वाचां संवरणं मौनम् ।

—मनोनुशासन ३।१३

वचन के संवरण को मौन कहते हैं । यही वचनगुप्ति है ।

३ मौन उस अवस्था को कहते हैं, जो वाक्य और विचार से परे है यानी शून्य-ध्यान अवस्था है ।

४ मौनअवस्था में **मैं** का लोप हो जाता है । फिर कौन बोले और कौन सोचे ?

५ मौन निद्रा के सदृश है—यह ज्ञान में नयी शक्ति उत्पन्न करता है ।

—बेकन

६ मौनं सम्मतिलक्षणम् । —संस्कृत कहावत

० साइलेन्स गिव्स कान्सेन्ट । —अंग्रेजी कहावत

मौन सम्मति का लक्षण है ।

७ कभी-कभी मौन रह जाना, सबसे तीखी आलोचना होती है ।

८ विपत्ति में मौन रहना अति उत्तम है । —ड्राईडेन

९ भय से उत्पन्न मौन पशुता है और संयम से उत्पन्न मौन साधुता है ।

—हरिभाऊ-उपाध्याय

१८ मौन की प्रेरणा

१ मुणी मोणं समादाय,
धुणे कम्म-सरीरयं।

—आचारांग ५।४

मुनि मौन-मुनित्व को लेकर कर्म और शरीर का नाश करे !

२ जं सम्मंति पासहा, तं मोणंति पासहा।
जं मोणंति पासहा, तं सम्मंति पासहा।
ण इमं सक्कं सिढिलेहिं,
अद्दिज्जमाणेहिं,गुणासाएहिं,वंकसमायारेहिं,पमत्तेहिं,गारमावसंतेहिं।

—आचारांग ५।४

जो सम्यक्त्व है, वह मौन-मुनित्व है और जो मौन है, वह सम्यक्त्व है। शिथिल, आर्द्र, (कमजोर दिलवाले) विषयास्वादी, वक्रचारी, प्रमत्त और घर में रहनेवाले मनुष्यों द्वारा यह सम्यक्त्व एवं मौन शक्य नहीं है।

३ वाद-विवादे विषघणां, बोले बहुत उपाध।
मौन गहे सब की सहे, सुमिरे नाम अगाध ॥

—कबीर

४ नापृष्ठः कस्यचिद् ब्रूया-न्नाऽप्यन्यायेन पृच्छतः।
ज्ञानवानपि मेधावी, जड़वत् समुपाविशेत्।

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ २७३

बिना पूछे किसी से कुछ न कहे तथा अन्याय से पूछने पर भी ज्ञानी एवं मेधावी व्यक्ति मूर्खवत् चुप-चाप बैठा रहे।

५ दर्दुरा यत्र वक्तार-स्तत्र मौनं हि शोभनम्।

—सुभाषितरत्नमंजूषा

मेढकों के समान मूर्ख मनुष्य ही जहाँ वक्ता बन रहे हों, वहाँ विद्वानों के लिए मौन रहना ही अच्छा है।

६ कोलाहले काककुलस्य जाते,
विराजते कोकिलकूजितं किम्।
परस्परं संवदतां खलानां,
मौनं विधेयं सततः सुधीभिः॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ ६०

जैसे—काकसमूह का कोलाहल हो, वहाँ कोकिल को नहीं बोलना चाहिये, उसी प्रकार जहाँ दुर्जनों का आपसी संवाद होता हो, वहाँ विद्वानों को सदा चुप रहना चाहिये।

१६ मौन की महिमा

१ मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही हो तो कम से कम बोलो। एक शब्द से काम चले तो दो नहीं।

—गांधी

२ मौन में शब्दों की अपेक्षा अधिक वाक्शक्ति होती है।

—कार्लाइल

३ दी रेस्ट इज साइलेंस। **—शेक्सपियर**

विश्राम मौन है।

४ भाषण चाँदी है, मौन सोना है। भाषण मानवीय है एवं मौन दैविक है।

—जर्मन कहावत

५ मौखर्यं लाघवकरं, मौनमुन्नतिकारकम्।

वाचालता अवनति करनेवाली है एवं मौन उन्नति करनेवाला है।

६ मौनव्रत सबसे बड़ो, जो कोई जाणै साध,
जोगो बोल्यो राय पै, ताहि भई असमाध।
ताहि भई असमाध, जनम राजा घर पायो,
खग बोल्या वन मांय, जीव आपणो गमायो,
चाकर बोल्या राय पै, ताहि भई असमाध।
मौनव्रत सबसे बड़ो, जो कोई जाणै साध॥

—भाषाश्लोकसागर

भक्ति से प्रसन्न होकर एक योगी ने राजा को पुत्र होने का वरदान दिया। फिर निदान करके अनशन द्वारा मरकर वह राजकुमार बना। कुछ समय पश्चात् पुत्र को लेकर राजा योगी के दर्शनार्थ गया, किन्तु वहां योगी न मिला। ज्योंही पुत्र को योगी की धूनी में लिटाया, उसे जातिस्मरणज्ञान हुआ और वह पश्चात्ताप करने लगा कि मैं बोलकर योग से भ्रष्ट हो गया, अतः आज से मौन रखूंगा। क्रमशः बड़ा हुआ, लेकिन बिल्कुल नहीं बोलता। राजा ने अनेक उपचार किये, सब निष्फल गए। एक दिन राजकुमार सैर करने जा रहा था। तीतर पक्षी दाहिनी ओर (अशुभ माना जाता है) बोलते ही नौकरों ने उसके गोली मार दी। कुमार ने कहा—बोला ही क्यों? नौकरों ने राजा को बधाई दी। राजा ने कुमार को गोद में बिठाकर बार-बार पूछा—बेटा! मेरे से क्यों नहीं बोलता? कुमार चुप रहा, राजा ने नौकरों को पीटना शुरू किया और कहा—तुम झूठे हो। नौकरों के मार पड़ती देखकर कुमार के मुंह से सहसा फिर निकल गया "बोले ही क्यों?" आखिर राजा ने अत्यंत आग्रह किया और राजकुमार बोलने लगा।

२० मौन से लाभ

१ मौनं सर्वार्थसाधनम् ।

—सुभाषितरत्नखण्डमंजूषा

मौन समस्त अर्थों का सिद्ध करनेवाला है ।

२ वयगुत्तयाए णं निव्विकारत्तं जणयइ । निव्वकारे णं जीवे वइगुत्ते अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते यावि भवइ ।

—उत्तराध्ययन २९।५४

वचनगुप्ति से जीव निर्विकारिता को प्राप्त करता है । निर्विकार होने पर जीव अध्यात्मयोग की साधना से युक्त होता है ।

३ मौनिनः कलहो नास्ति ।

—सुभाषितरत्नखण्डमंजूषा

मौन रखनेवालों के निकट प्रायः कलह नहीं होता ।

४ नहीं बोल्या में नव गुण ।

० बोलै ते बे खाय अबोले त्रण खाय ।

—गुजराती कहावतें

५ इक चुप सौ सुख ।

० ढकी रिझे कोई ना बुझे ।

—पंजाबी कहावतें

चुप रहने से व्यक्ति के दुर्गुणों का किसी को पता नहीं लगता ।

२१ श्रवण-सुनना

१ सुई धम्मस्स दुल्लहा।

—उत्तराध्ययन ३।८

धर्म का श्रवण मिलना कठिन है।

२ किच्छं सद्धम्मसवणं।

—धम्मपद १४।१४

सच्चे धर्म का सुनना मुश्किल है।

३ दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए तं जहा—उवसमेण चेव, खएण चेव।

—स्थानांग २।४

दो कारणों से आत्मा को केवलि-प्ररूपित धर्म सुनने को मिलता है—कर्मों के उपशम से और कर्मों के क्षय से।

४ प्राचीन ऋषि कहते थे—पहले कान में भोजन डालो, अर्थात् शास्त्र सुनो और पीछे मुंह में डालो।

५ **श्रवण का फल—**

(क) सेणं भंत्ते सवणे किं फले ?
गोयमा ! णाणफले।

—भगवती २।५।३७

हे भगवान ! श्रवण का क्या फल हैं ?
गौतम ! श्रवण करने का फल ज्ञान होता है।

(ख) सवणे नाणे य विन्नाणे, पच्चक्खाणे य संजमे।
अणण्हये तवे चेव, वोदाणे अकिरिया सिद्धी ॥

—भगवती २।५

धर्मश्रवण से तत्त्वज्ञान, तत्त्वज्ञान से विज्ञान (विशिष्ट तत्त्वबोध), विज्ञान से प्रत्याख्यान(सांसरिक पदार्थों से विरक्ति) प्रत्याख्यान से संयम, संयम से अनाश्रव (नवीनकर्म का अभाव), अनाश्रव से तप, तप से पूर्वबद्ध कर्मों का नाश, पूर्वबद्ध–कर्मनाश से निष्कर्मता (सर्वथा कर्मरहित स्थिति) और निष्कर्मता से सिद्धि अर्थात् मुक्त-स्थिति प्राप्त होती हैं।

६ नहि सुतीक्ष्णाऽप्यसिधारा, स्वयं छेत्तुमाहित-व्यापारा,
नहि सुशिक्षितोऽपि नटवटुः स्वस्कन्धमधि-रोढुं पटुः।

—**स्याद्वादमञ्जरी**

तीखी तलवार की धारा भी अपने आपको नहीं काट सकती एवं सुशिक्षित नटपुत्र भी अपने कंधे पर नहीं चढ़ सकता। इसी प्रकार अपने आप ज्ञान होना दुःसंभव है।

७ सुनने के बाद ही श्रद्धा, प्रतीति एवं रुचि होती है।[1] इसीलिए शास्त्रों में "सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथपावयणं" आदि पाठ आये हैं।

८ श्रुत्वा धर्मं विजानाति, श्रुत्वा जानाति दुर्मतिम्।
श्रुत्वा ज्ञानमवाप्नोति, श्रुत्वा मोक्षमवाप्नुयात्

—**चाणक्यनीति ६।१**

---

१ शास्त्रवाणी सुनने से अवश्य कल्याण होगा—ऐसा दृढ़विश्वास 'श्रद्धा' है। इससे अमुक-अमुक व्यक्तियों का कल्याण हुआ है, यह चिन्तन 'प्रतीति' है तथा दुर्गम से दुर्गम तत्त्व को भी डांवाडोल न होते हुए प्रसन्नता-पूर्वक स्वीकार करना 'रुचि' है।

इस विषय को एक हेतु से और स्पष्ट किया गया हैं, जैसे—इस वैद्य की औषधि से मेरे अवश्य लाभ होगा—यह दृढ़विश्वास हैं 'श्रद्धा' है। इससे अमुक-अमुक रोगी ठीक हुए हैं—यह विचार 'प्रतीति' है तथा चाहे औषधि कितनी ही कटु या तिक्त हो, उसे मुँह न बिगाड़ते हुए प्रसन्न मन से लेना 'रुचि' है।

मनुष्य सुनकर ही धर्म को जानता है और सुनकर ही पाप को जानता है तथा सुनकर ही ज्ञान एवं मोक्ष को प्राप्त होता है।

९ सुच्चा जाणइ कल्लाणं, सुच्चा जाणइ पावगं।
उभयं पि जाणइ सुच्चा, जं सेयं तं समायरे।

—**दशवैकालिक ४।११**

व्यक्ति सुनकर कल्याण—पुण्य को जानता है और सुनकर ही पाप को जानता है। पुण्य-पाप दोनों को सुनकर ही जानता है। दोनों में जो श्रेय हो, उसका आचरण करना चाहिये।

१० बद्धनिकायकम्मा, सुणेंति धम्मं न परं करेंति।

जिन जीवों के निकाचित कर्मों का उदय होता है, वे धर्म सुन लेने पर भी उसे कर नहीं सकते।

११ **सुनने की विधि—**

(क) निद्दा-विगहापरिवज्जिएहिं, गुत्तेहिं पंजलिउडेहिं।
भत्ति-बहुमाणपुव्वं, उवउत्तेहिं सुणेयव्वं।

—**विशेषावश्यक ७०७**

निद्रा-विकथा को त्यागकर, मन-वचन-तन का गोपन कर, हाथ जोड़कर तथा सजग होकर, भक्ति-बहुमानपूर्वक शास्त्रवाणी का श्रवण करना चाहिये।

(ख) सुनते हो व्याख्यान तुम, बनकर साहूकार।
लेकिन चोर बने बिना, नहिं होगा निस्तार॥

—**दोहासंदोह**

(ग) नदी की सीप न बनकर समुद्र की सीप बनो! समुद्र की सीप में ही मोती होते हैं।

१२ जाटनी ने एकदिन व्याख्यान सुनकर घर को नरक से स्वर्ग बना लिया।

—एक जाटनी अपने पति से बहुत लड़ा करती थी। गाँव में साधु आए, पड़ोसिन के कहने से एकदिन वह व्याख्यान सुनने गई। व्याख्यान में विवाह-सम्बन्धी मंत्र सुनाए गए एवं पति-पत्नी का कर्तव्य बताया गया। जाटनी को ज्ञान हुआ। पति घर आया और पत्नी ने गर्म पानी, तेल, साबुन आदि उपस्थित किए एवं गर्म रोटियाँ खिलाईं। विस्मित पति ने लड़ाई न करने का कारण पूछा। पत्नी ने मुनि के व्याख्यान का हाल सुनाया। दोनों मुनि के पास गए एवं लड़ने-झगड़ने का त्याग कर दिया, अस्तु !

१३ सुनते समय वक्ता के मुंह की ओर देखो, सुनने के बाद उस पर चिंतन करो और फिर उसमें से सारतत्व को हृदयंगम करो !

●

२२ श्रवण का असर

१ जब कषाय, इन्द्रियों के विकार लोक-लज्जा, भय और कुटुम्ब का मोह घटने लगे, प्रभु-शरण व साधुसेवा में मनोवृत्ति ढलने लगे, परगुण व अपने दोष देखने की योग्यता बढ़ने लगे तथा **मेत्ती मे सव्वभूएसु** का तत्त्व रग-रग में रमण करने लगे—तभी समझना चाहिए कि ज्ञान सुनने का कुछ असर हुआ है एवं धर्म समझ में आया है।

२ **सुनकर असर न हुआ तो ?**

असर यदि कुछ ना हुआ तो, ज्ञान सुनकर क्या किया ?[१]
दिल का बदला ना हुआ तो, वक्त खोकर क्या किया ?
क्या किया खाकर के खाना, भूख यदि कुछ ना मिटी ?
प्यास बिल्कुल ना बुझी तो, जल को पीकर क्या किया ?
क्या किया साबुन से नहाकर, मैल यदि कुछ ना हटा ?
अगर ताकत ना बढ़ी तो, दवा खाकर क्या किया ?
क्या किया व्यापार करके, नफा यदि कुछ नहिं मिला ?
तान यदि ना मिल सकी फिर, गीत गाकर क्या किया ?
क्या किया ले हाथ माला, अगर 'धन' ! दिल ना टिका ?
ना बढ़ा वैराग्य फिर, त्यागी कहाकर क्या किया ?

—**उपदेशसुमनमाला**

३ नदी किनारे कोइ नर ऊभो, तरस्या नहीं समाणी,
कां तो अंग ज आलसु एह नुं, कां तो सरिता सुकाणी।

---

१ **तर्ज—दर्द कांटे का अगर**

कल्पतरू तल कोई नर बैठो, क्षुधा खूब पीड़ाणी,
नहीं कल्पतरु ए बावलियो, के भाग्यरेख भूंसाणी।

—गुजराती पद्य

तत्त्व यह है कि—सुनकर यदि असर न हुआ तो उपदेशक या श्रोता इन दोनों में से, किसी एक में अवश्य कमी है।

४ बाजार में संतों का व्याख्यान हो रहा था। हजारों आदमी सुन रहे थे। एक मुसलमान ने रास्ते चलते कुछ सुन लिया। उसे ज्ञान हो गया एवं उसने फकीरी ले ली। बारह साल के बाद घूमता-घूमता वह पुनः वहां आया तो पूर्ववत् हजारों मनुष्य व्याख्यान सुन रहे थे। विस्मित होकर फकीर ने कहा—

एक रोज मैंने सुना, हुआ ज्ञान में गर्क,
रोज-रोज तुम सुन रहे, कान हैं या दर्क?

२३ श्रोता

१ श्रोताओं के जिज्ञासा का पेंदा और बुद्धि की खिड़की चाहिए।

२ जिज्ञासु व मुमुक्षु श्रोता विरले हैं और यश, कीर्ति, धन, भौतिकसुख आदि के भूखे अधिक हैं!

३ कथा खत्म होते ही कहा गया, सवाल करो! उत्तर मिला, हम मिट्टी हैं—पत्थर नहीं!

० मिट्टी के समान श्रोता ज्ञानअंकुर पैदा करते हैं। पत्थरतुल्य श्रोता छींटे उछालते हैं अर्थात् तर्क-वितर्क करते हैं। कपड़ेतुल्य श्रोता पानी से निकलते ही सूख जाते हैं और रबड़तुल्य श्रोता बढ़कर घटने के कारण अच्छे नहीं होते।

४ **चौदह प्रकार के श्रोता—**

> मृच्चालिनी - महिष - हंस - शुकस्वभावा,
> मार्जार-काक-मशकाऽज - जलौकतुल्याः।
> सच्छिद्र कुम्भ-पशु-सर्प शिलोपमाना—
> स्ते श्रावका भुवि चतुर्दशधा भवन्ति॥

—प्राचीनसंग्रह से

१—मिट्टी, २—चालनी, ३—महिष, ३—हंस, ५—तोता, ६—बिल्ली, ७—काक, ८—मच्छर, ९—बकरा, १०—जलौक, ११—छिद्रवालाघट, १२—मृग, १३—सर्प, १४—सिला।

इन मिट्टी आदि १४ के समान स्वभाववाले श्रोता भी संसार में चौदह प्रकार के होते हैं।

(इसका विस्तृतवर्णन ज्ञानप्रकाश, पुंज २ में किया गया है।)

५ **तीन तरह की सभा**—श्रोताओं के समूह का नाम 'सभा' है। वह तीन तरह की होती है—१. ज्ञायिका २. अज्ञायिका, ३. दुर्विदग्धा।

१. **ज्ञायिका**—इसके श्रोता हंस की तरह गुणी एवं गुणग्राही होते हैं।

२. **अज्ञायिका**—इसके श्रोता मृग, सिंह एवं कुर्कट के छोटे बच्चों की तरह प्रकृति से मधुर एवं भद्र होते हैं। उन को सहज में ही समझाया जा सकता है।

६. **दुर्विदग्धा**—इस सभा के श्रोता ग्रामीण-पण्डित की तरह न तो कुछ जानते, न ही अपमान के भय से किसी से पूछते। अभिमान के वश फुटबॉल की तरह फूले-फूले फिरते हैं एवं ज्ञानदान के अयोग्य होते हैं।

—नन्दीसूत्र-पीठिका

७ **पांच कोड़ियों और पांच करोड़ के श्रोता**—

अजायबघर में एक-जैसी दो मूर्तियाँ देखकर आगंतुक ने पूछा—ये दोनों सदृश क्यों ? उत्तर मिला, सदृश नहीं हैं—एक पांच कोड़ियों की है और दूसरी पांच करोड़ की है। यों कहकर गाइड ने दोनों मूर्तियों के कानों में दो सलाइयां डालीं। एक की सलाई दूसरे कान से निकल गयी और दूसरी की अन्दर रह गयी। तत्त्व समझाते हुये गाइड ने बतलाया कि जो एक कान से उपदेश सुनकर दूसरे कान से निकाल देता है, वह श्रोता प्रथममूर्ति के समान पांच कोड़ियों का है और जो उसे अपने अन्दर रख लेता है, वह पांच करोड़ का है।

२४ योग्य श्रोता

१ भक्तो वक्तुरगर्वितः श्रुतरुचिश्चाञ्चल्यहीनः पटुः,
प्रश्नज्ञश्च बहुश्रुतोऽप्यनलसोऽनिद्रो जिताक्षः सुधीः ।
दाता त्यक्तकथान्तरः कृतगुणप्रीतिर्न निन्दापरः,
श्रोतुः पुंस इमे चतुर्दश गुणा विद्वज्जनैर्भाषिता ॥

—प्राचीनसंग्रह से

१–भक्त, २–वक्ता से अभिमान नहीं करनेवाला, ३–सुनने की रुचि-वाला, ४–चंचलतारहित, ५–निपुण, ६–प्रश्न को समझनेवाला, ७–बहुश्रुत, ८–अप्रमादी, ९–निद्रा नहीं लेनेवाला, १०–इन्द्रियों को जीतनेवाला, ११–विद्वान्, १२–दाता, १३–व्याख्यान में व्यर्थ बात नहीं करनेवाला, १४–गुणों का प्रेमी एवं निन्दा न करनेवाला। विद्वानों ने श्रोता के ये चौदह गुण बतलाये हैं ।

२ प्रथम श्रोता गुणगेह, नेहभर नयणे निरखै,
हसितवदन हुँकार, सार पण्डितगुण परखै ।
श्रवण दिये गुरु वयण, सयणता राखै सरखै,
भाव भेद सुण पृच्छ, रीझ मन मांही हरखै ॥
बेधक विनय विचार सूं, सार चतुराई अग्गला ।
कहै "**कृपा**" एहवी सभा तब कविजन दाखै कला ।

३ भव्याऽभव्यविचारो, न हि युक्तोऽनुग्रहप्रवृत्तानाम् ।
कामं तथापि पूर्वं, परीक्षितव्या बुधैः परिषद् ॥१॥

वज्रमिवाऽभेद्यमनाः, परिकथने चालिनीव यो रिक्तः,
कलुषयति यथा महिषः, पूनकवद् दोषमादत्ते ॥२॥
जलमन्थनवत् कथितं, बधिरस्येव हि निरर्थकं तस्य,
पुरतोऽन्धस्य च नृत्यं, तस्माद् ग्रहणं तु भव्यस्य ॥३॥

—**अन्ययोगव्यवच्छेद द्वात्रिंशिका**

यद्यपि कृपालु-वक्ताओं को भव्य और अभव्य श्रोताओं का विचार करना युक्त नहीं हैं। तथापि विद्वानों को परिषद् की परीक्षा तो करनी ही चाहिये। श्रोता यदि वज्रवत् अभेद्य-हृदय हो, चालनीवत् उपदेश को निकालनेवाला हो, महिषवत् सभा को कलुषित करनेवाला हो और पूनकवत् दोषग्राही हो, तो उसके सम्मुख ज्ञान सुनाना जल का मन्थन करना है, बधिर को गीत सुनाना है, अन्धे के आगे नाच करना है। अतः योग्य श्रोताओं का ही ग्रहण करना चाहिए।

४ **सच्चे वक्ता और श्रोता**—दो नरकङ्काल थे। एक की हड्डियां गली हुई थीं! दूसरे की हड्डियों में छिद्र थे। तत्त्वज्ञ ने रहस्य बतलाते हुए कहा—प्रथम कङ्काल सच्चे वक्ता का है एवं दूसरा सच्चे श्रोता का है। सच्चे वक्ता जो कुछ कहते हैं, खुद पालन करते हैं, अतः उनकी हड्डियां गल जाती हैं तथा सच्चे श्रोताओं के हृदय में ज्ञान के तीर लगते हैं। अतः हड्डियां सच्छिद्र बन जाती हैं।

२५ अयोग्य श्रोता

१ केइ बैठा ऊंघाय, जाय केइ अधविच ऊठी।
बात कर केइ बिढ़ै, करै बलि कोटि अपूठी।।
केइ स्तवै निज जात, धर्ममति मानैं झूठी।
केइ कहै कूड़ा हेतु, बात सहु पाड़ै पूठी।।
गलै हाथ देई करी, गोडां विच घालै गला।
कहै "कृपा" एहवी सभा, तब कवि नहीं दाखै कला।।

२ निष्फल श्रोता मूढ़ पै, वक्ता-वचनविलास।
हाव-भाव ज्यों तीय कै, पति अन्धे के पास।।

—वृन्दकवि

३ वक्ता श्रोता बाहिरा, बांच गमाया बैण।
सझ श्रृंगार पिउ पै चली, पिउ का फूटा नैण।।

४ गाय-गाय ने तोड़ी घाँटी, तो पिण न मिटी मन री आंटी।
खाय-खाय नैं बधायो मांस, डूबी ऊपर तीन बांस।

५ आंधो सुसरो घूंघट बहू, कथा सुणवा ने आवे सहू।
कहे किसूं नैं समझे किसूं आंखनों ओषध पूठे घसूं।
ऊंडलो कूओ नैं फूटलो बोक, कहे अक्खो ए सगला फोक।

—अक्खाभक्त

६ **कृष्ण की बांसुरी जैसे श्रोता**—एक बार पतझड़ के समय कृष्ण ने बांसुरी बजाई। सारा वन हरा हो गया। द्वारकानिवासी आश्चर्यचकित होकर इस विषय की खूब चर्चा कर रहे थे। एक व्यक्ति ने प्रश्न किया—सारा वन हरा हो गया तो बांसुरी हरी क्यों नहीं हुई ? साधारण मनुष्य इसका उत्तर न दे सके। एक विशेषज्ञानी ने कहा—भाई ! वृक्षों ने कृष्ण के शब्द ग्रहण कर लिये थे, इसलिये वे हरे-भरे हो गये। बांसुरी पोली थी, उसने कृष्ण की आवाज को बिल्कुल नहीं पकड़ा, अतः वह सूखी की सूखी रह गई। जो श्रोता सुनकर कुछ ग्रहण नहीं करते, उन्हें कृष्ण की बांसुरी के समान कहा जाता है।

७ दीधी पिण लागी नहीं, रीते चूल्हे फूंक।
गुरु विचारा क्या करे, चेला ही में चूक ॥

२६ मूर्ख श्रोता

१ जैनमुनि भगवतीसूत्र का व्याख्यान कर रहे थे। उसमें बार-बार **गोयमा-गोयमा** आता था। एक बुढ़िया कहने लगी—गांव के श्रावक कितने निर्दयी हैं। बेचारे साधु ओय मां!—ओय मां! करके चिल्लाते हैं, फिर भी इन्हें व्याख्यान से छुट्टी नहीं देते। सारे लोग बुढ़िया की मूर्खता पर हंस पड़े।

२ पंडितजी भागवत की कथा करते थे। बुढ़िया खूब सिर हिलाकर सुनती थी। सातवें दिन वह रोने लगी। पंडित ने पूछा तब बुढ़िया ने कहा—भाई! मेरी भैंस की पाडी तेरी तरह चिल्ला चिल्लाकर आठवें दिन मर गयी। तेरे भी कल आठवां दिन है। यदि तू मर जायेगा तो पीछे तेरे बाल-बच्चे क्या करेंगे? इसी दुःख से रो रही हूं और मैं कथा में कुछ नहीं समझती।

३ दाढ़ीवाले पंडितजी के भाषण में एक बुढ़िया की आंखों से आंसू टपकते थे। पंडितजी ने उससे रोने का कारण पूछा? बुढ़िया ने कहा—तेरी दाढ़ी ठीक मेरे बकरे जैसी है। बोलते समय मुंह के साथ जब वह हिलती है, मुझे अपना बकरा (जो अभी-अभी मर गया) याद आ जाता है और मैं रोने लगती हूं।

४ रामायण समाप्त हुई। वक्ता ने पूछा, क्यों भाई! कथा समझ में तो आ गई न? एक श्रोता ने कहा—और तो ठीक! राक्षस राम था या रावण? तथा सीता का हरण हुआ था, वह फिर मनुष्य बनी या हिरण ही रह गई?

५ सामवेद का उच्चारण करते हुये पंडित को पागल समझकर मूर्ख श्रोताओं ने लोहा गर्म करके डाम लगा दिया।

६ **उल्टा ज्ञान लेनेवाले मूर्ख श्रोता**—पंडित ने महाभारत की कथा की। एक चौधरी ने कहा—**महाराज बहुत देर हो गई। अगर कुछ पहले** यह कथा सुन लेता तो **दुर्योधन की तरह भी मैं अपने भाइयों को वनवास** दे देता।

चौधरण ने कहा–यदि यह ज्ञान मुझे कुछ पहले मिल जाता तो मैं भी शादी से पूर्व दो-चार पुत्र पैदा करके कुन्ती के समान सतियों में अच्छा नंबर पा लेती। (उसने कर्ण को उत्पन्न किया था।)

पुत्र-वधू ने सास-ससुर को भी मात कर दिया, वह कहने लगी—मैं तो जानती थी कि जिससे विवाह हो गया, स्त्री के लिए वही परमेश्वर है, दूसरे पुरुष की इच्छा करना भी पाप है। लेकिन आज सुनने को मिला कि महासती द्रौपदी ने पांच पति बनाए थे। मेरा पति कई वर्षों से राज-यक्ष्मा (टी.बी.) का शिकार है। अतः अब मैं भी दूसरा पति बनाऊँगी और उसके साथ आनंद से जीवन व्यतीत करूंगी। बेचारा पण्डित इन सबका मुँह ताकने लगा एवं बोला—भले माणसो! तुमने यह क्या ज्ञान लिया, सारा बेड़ा ही गर्क कर डाला।

●

२७ निद्रालु श्रोता

१ पंडितजी की कथा में बजाज नींद लेने लगा। स्वप्न में दुकान पर ग्राहक आया। बजाज ने कपड़ा दिखाकर नौ आने गज कहा। ग्राहक ने छः आने गज लेना चाहा। आखिर बजाज ने पंडितजी का साफा फाड़ते हुए कहा—अच्छा जा-जा ! सात आने गज में ले जा ! सुबह का वक्त है, बेचारे पंडितजी देखते ही रह गये।

१ इसी तरह पुस्तक के पन्ने पलटने की आवाज सुनकर एक निद्रालु-श्रोता ने अनाज की ढेरी पर गाय आई समझकर लाठी चला दी एवं पंडितजी का सिर फूट गया।

३ एक सेठ व्याख्यान में नींद ले रहा था। सेठानी ने दो पतासे मुंह में डाल दिये। दूसरी बार कुत्ता मूत गया और व्याख्यान मीठा-खारा हो गया।

●

तीसरा कोष्ठक

१ शरीर

१ उत्पत्तिसमयादारभ्य प्रतिक्षणं शीर्यन्त इति शरीराणि।

—स्थानांग ५।१।३९५ टीका

उत्पत्तिसमय से लेकर प्रतिसमय क्षीण होते हैं अतः 'शरीर' कहलाते हैं।

२ भोगायतनं शरीरम्।

—नीतिवाक्यामृत ६।३३

जो शुभ-अशुभ कर्म भोगने का स्थान है, वह शरीर है।

३ वागादि पञ्च श्रवणादि पञ्च, प्राणादि पञ्चाऽभ्रमुखादि पञ्च।
बुद्ध्याद्यविद्यापि च काम-कर्मणी, पुर्यष्टकं सूक्ष्मशरीरमाहुः॥

—विवेकचूड़ामणि ९९

वाग्आदि कर्मेन्द्रियाँ, श्रवणादि ज्ञानेन्द्रियाँ, प्राणादि पांच वायु, आकाशादि पांच तत्त्व, बुद्धि, अविद्या, काम और कर्म—ये पुर्यष्टक या सूक्ष्मशरीर कहलाते हैं।

४ देहादिन्द्रियविषया, विषयनिमित्ते च सुख-दुःखे।

—प्रशमरति

इस शरीर से इन्द्रियसम्बन्धी शब्दादि-विषयों की उत्पत्ति होती है एवं विषयसेवन से सुख-दुःख की परंपरा चालू होती है।

५ शरीर का वजन—

शरीर की लम्बाई जितनी इंच हो, वजन यदि उतने ही सेर हों तो वह ठीक माना जाता है। २५-३० वर्ष की आयु के बाद मनुष्य का कद बढ़ना बंद हो जाता है।

३५ से ५० तक की आयु में वजन का बढ़ना खराब है। हल्के एवं चुस्त मनुष्यों की आयु लम्बी होती है। यह दो लाख व्यक्तियों की परीक्षा के बाद बीमा-कम्पनियों का निर्णय है।

—कविराज हरनामदास

६ शरीर का दाहिना अंग—

मस्तिक का बायां भाग दाहिने अंग को और दाहिना भाग बाएँ अंग को संचालित करता है। डॉक्टरों का मत है कि विचार-गर्भित वाणी के उत्पादक, उत्तेजक व संचालक तंतु मस्तिष्क के बाएं भाग में रहते हैं। अतएव दाहिना अंग सक्रिय रहता है। अधिकारी फैसला देते समय, लेखक लिखते समय एवं वक्ता बोलते समय प्रायः दाहिने हाथ को विशेष हिलाते-चलाते हैं। प्राचीन मानसशास्त्री दक्षिण-अंग का फड़कना इसीलिये उत्तम मानते थे, क्योंकि बाएं मस्तिष्क से उत्पन्न नये विचार दक्षिणअंग में ही क्रिया करते हैं। सूर्पणखा ने **शीघ्रमुद्ध्रियतां पादो, जयार्थमिह दक्षिणः**।[१] ऐसा इसीलिये कहा था।

० क्षत्रिय तलवार को बांयीं तरफ इसलिये लटकाते हैं कि काम पड़ते ही दाहिने हाथ से सुगमता के साथ निकाल लें।

—आत्मविकास, पृष्ठ २२-२३ से

---

१ वाल्मीकिरामायण

७ **शरीर कंपन के चार कारण—**

१. क्रोध का आवेश, २. मैथुन का आवेश, ३. चर्चा में पराजय, ४. कम्पनवात।

—आत्मविकास, पृष्ठ ६४-६५

८ पंच सरीरगा पन्नत्ता, तंजहा—
ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए।

—स्थानांग ५।१।३९५

पाँच शरीर कहे हैं—

(१) औदारिक, (२) वैक्रिय, (३) आहारक, (४) तैजस, (५) कार्मण।

२ शरीर के अन्दर

१ **पांच तत्त्व**—वैज्ञानिक मतानुसार शरीर में मुख्यतया पांच तत्त्व हैं—१—प्रोटीन (मांसजातीय-पदार्थ), २—चर्बी (स्निग्ध-पदार्थ घी-तेल आदि), ३—पार्थिवपदार्थ (लोहा-चूना आदि), ४—कार्बोहाईड्रेट (शर्कराजातीय-पदार्थ), ५—जल। इसके अलावा ऑक्सीजन, हाइड्रोजन आदि २३ तत्त्व और भी हैं। ऑक्सीजन के अतिरिक्त सभी पदार्थ पूर्वोक्त पाँचों तत्त्वों में प्रविष्ट हो जाते हैं। शरीर में जल ५७ प्रतिशत, पार्थिव पदार्थ २० प्रतिशत एवं चर्बी, प्रोटीन व शर्करा ये तीनों मिलकर २३ प्रतिशत हैं। उक्त परिणामों में पाँचों तत्त्व रहने से धातुएँ सक्रिय रहती हैं।

२ **शरीर में पाँचभूत** (तत्त्व)—

त्वक् च मांसं तथाऽस्थीनि, मज्जा स्नायुश्च पञ्चमम्।
इत्येतदिह संघातं, शरीरे पृथिवीमयम् ॥२०॥
तेजो ह्यग्निस्तथा क्रोध-श्चक्षुरुष्मा तथैव च।
अग्निर्जरयते यश्च, पञ्चाग्नेयाः शरीरिणाम् ॥२१॥
श्रोत्रं घ्राणं तथाऽऽस्यं च, हृदयं कोष्ठमेव च।
आकाशात् प्राणिनामेते, शरीरे पञ्च धातवः ॥२२॥
श्लेष्मा पित्तमथ स्वेदो, वसा शोणितमेव च।
इत्यापः पञ्चधा देहे, भवन्ति प्राणिनां सदा ॥२३॥
प्राणात् प्रणीयते प्राणी, व्यानाद् व्यायच्छते तथा।
गच्छत्यपानोऽधश्चैव, समानो हृद्यवस्थितः ॥२४॥

उदानादुच्छ्वसिति च, प्रतिभेदाच्च भाषते।
इत्येते वायवः पञ्च, चेष्टयन्तीह देहिनम् ।। २५ ।।

—महाभारत, शान्तिपर्व-अ० १८४

पृथ्वी—शरीर में त्वचा, मांस, हड्डी, मज्जा और स्नायु—इन पाँच वस्तुओं का समुदाय पृथ्वीमय है ॥२०॥

अग्नि—तेज, क्रोध, नेत्र, उष्मा और जठरानल—ये पांच वस्तुएं देहधारियों के शरीर में अग्निमय हैं ॥२१॥

आकाश—कान, नासिका, मुख, हृदय और उदर, प्राणियों के शरीर में—ये पांच धातुमय खोखलापन आकाश से उत्पन्न हुए हैं ॥२२॥

जल—कफ, पित्त, स्वेद, चर्बी और रुधिर—प्राणियों के शरीर में रहने वाली ये पांच गीली वस्तुएं जलरूप हैं ॥२३॥

वायु—प्राण से प्राणी चलने-फिरने का काम करता है, व्यान से व्यायाम (बलसाध्य उद्यम) करता है, अपानवायु ऊपर से नीचे की ओर जाती है, और समानवायु हृदय में स्थित होती है ॥२४॥

उदान से पुरुष उच्छ्वास लेता है और कण्ठ, तालु आदि स्थानों के भेद से शब्दों एवं अक्षरों का उच्चारण करता है। इस प्रकार ये पांच वायु के परिणाम हैं, जो शरीरधारी को चेष्टाशील बनाते हैं ॥२५॥

३ इस शरीर में सात बट्टी साबुन है, दस गैलन पानी है, स्नानघर पोता जाय, इतना चूना है, एक डब्बी सल्फर की गोलियाँ हैं। दो इंच लम्बी कील जितना लोहा है, नव हजार पेंसिलें बने इतना कार्बन है, बाईस-सौ दियासलाइयाँ बनें इतना फासफर्स है और एक चम्मच मेगनेसिया है।

—डा० हेरोल्ड व्हीलर

४ **शरीर में माता-पिता के अंग**—जिन अंगों में रुधिर का भाग अधिक होता है, वे अंग माता के कहलाते हैं। जिन अंगों में वीर्य का भाग अधिक होता है, वे अंग पिता के कहलाते हैं। जिनमें दोनों चीजें बराबर होती हैं, साधारणतया वे अंग दोनों के कहलाते हैं। इस शरीर में माता के तीन

अंग हैं—मांस, लोही और मस्तक की मज्जा। पिता के तीन अंग हैं—हड्डी, हड्डी की मज्जा और केश-श्मश्रु-रोम तथा नख। (सिर के बाल-केश, दाढ़ी-मूंछ के बाल श्मश्रु और काख आदि के बाल रोम कहे जाते हैं।)

—स्थानांग ३।४।२०६

५ पुरुष के पांच कोठे होते हैं और स्त्री के छः कोठे होते हैं। (एक में गर्भ रहता है।) पुरुष के मल निकलने के नव द्वार (दो कान, दो आँख, दो नाक, मुँह, मल-द्वार और मूत्र-द्वार) होते हैं और स्त्री के ग्यारह (दो स्तन अधिक) द्वार होते हैं।

—लोकप्रकाश, पुञ्ज ७ प्रश्न ११

६ **शरीरस्थ धातुएँ और मल—**

रसाद् रक्तं ततो मांसं, मांसान्मेदस्ततोऽस्थि च।
अस्थ्नो मज्जा ततः शुक्रं, शुक्राद् गर्भः प्रजायते ॥६२॥
कफः पित्तं मलाः खेषु, प्रस्वेदो नख-रोम च।
स्नेहोऽक्षित्वग् विशामोजो, धातूनां क्रमशो मलाः ॥६३॥
केचिदाहुरहोरात्र्यात्, षडहादपरे परे।
मासेन याति शुक्रत्व-मन्नं पाकक्रमादिभिः ॥६५॥

—अष्टांगहृदय-शरीरस्थान, अध्याय २

खाये हुए पदार्थ का सार प्रथम हृदय में पहुंचता है, वहां से व्यानवायु द्वारा हृदयस्थ दश मूलशिराओं में होकर सब देह में फैलता हुआ रस बनता है। फिर क्रमशः रस से रक्त, रक्त से मांस, मांस से मेद (चर्बी), मेद से अस्थि (हड्डी) अस्थि से मज्जा (हड्डी का रस), मज्जा से शुक्र और शुक्र से गर्भ की उत्पत्ति होती है ॥६२॥

रस धातु का मल कफ है, रक्त का मल पित्त है, मांस का मल वह है, जो नासिका आदि के छिद्रों से निकलता है, मेद का मल पसीना है, अस्थियों का मल नख और रोम है, मज्जा का मल नेत्र, त्वचा और पुरीष-विष्ठा सम्बन्धी स्नेह है और शुक्र का मल ओज है ॥६३॥

कई आचार्य कहते हैं कि पाकक्रम द्वारा पच्यमान अन्न-रस-रक्तादि क्रम-पूर्वक एक दिन-रात में शुक्र बन जाता है। कई-कई कहते हैं कि छह दिन में अन्न से शुक्र बनता है। अन्य (पराशर) आचार्य कहते हैं कि एक महीने में आहार से शुक्र बनता है ॥६५॥

७ इस शरीर में आठ सेर खून होता है, चार सेर चरबी होती है, दो सेर मस्तक की मज्जा होती है. आठ सेर मूत्र होता है, दो सेर विष्ठा होती है, आधा सेर पित्त होता है, आधा सेर श्लेष्म होता है और एक पाव वीर्य होता है। उन सब धातुओं में जब विकार होता है, तब शरीर का वजन घटता है या बढ़ता है।

—लोकप्रकाश, पुञ्ज ७ प्रश्न ११

३ शरीर का महत्त्व

१ शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ।

—कुमारसंभव ५।३३

शरीर धर्म का सर्वप्रथम साधन है ।

२ धर्मार्थ-काम-मोक्षाणां, मूलमुक्तं कलेवरम् ।

धर्म-अर्थ-मोक्ष-काम—इन चारों का मूलकारण शरीर ही है ।

३ यह तुम्हारा शरीर पवित्र-आत्मा का मंदिर है ।

—बाइबिल

४ यदि कोई पवित्र वस्तु है तो मनुष्य-शरीर ही है ।

—ह्विटमैन

५ शरीररक्षा—

(क) शरीरं धर्मसंयुक्तं, रक्षणीयं प्रयत्नतः ।
शरीरात् स्रवते धर्मः, पर्वतात् सलिलं यथा ।

—स्थानांग ५।३ टीका

धर्मसंयुक्त शरीर की प्रयत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिये । क्योंकि पर्वत से पानी की तरह शरीर से भी धर्म प्रवाहित होता है ।

(ख) मन जावे तो जाणदे, दृढ़कर राख शरीर ।
खैंचे बिना कमान के, किस विध निकले तीर ?

(ग) न कार्यव्यासङ्गे शरीरकर्मोपहन्यात् ।

—नीतिवाक्यामृत १६।६

कार्य की व्यस्तता में भी शरीर के क्रियाकाण्डों का उपहनन नहीं करना चाहिए ।

(घ) बिना शारीरिक उन्नति के आध्यात्मिक उन्नति असंभव है ।

—रामकृष्ण

६ शरीर किसलिए ?

(क) परोपकारार्थमिदं शरीरम् ।
यह शरीर परोपकार के लिए है ।

(ख) पुव्वकम्मक्खयट्ठाए, इमं देहं समुद्धरे ।

—उत्तराध्ययन ६।१४

पूर्वसंचित कर्मों का नाश करने के लिये इस शरीर को धारण करो ।

७ अनेकदोषदुष्टोऽपि, कायः कस्य न वल्लभः ।
अनेक दोषों से दुष्ट होने पर भी यह शरीर सबको प्यारा लगता है ।

८ देहस्नेहोऽस्ति दुस्त्यजः ।

—कथासरित्सागर

देह का स्नेह छोड़ना कठिन है ।

४ शरीर की अनित्यता

१ इमं सरीरं अणिच्चं, असुइ असुइसंभवं। —**उत्तराध्ययन १९।१३**

यह शरीर अनित्य हैं, अशुचि है और अशुचि-रज: वीर्य से उत्पन्न हुआ है।

२ अमेध्यपूर्णे कृमि जाल संकुले, स्वभावदुर्गन्धिनि शौचवर्जिते।
कलेवरे मूत्र-पुरीषभाजने, रमन्ति मूढ़ा विरमन्ति पण्डिताः।

—**चंदचरित्र, पृष्ठ ११४**

यह शरीर अशुचि-पदार्थों से भरा हुआ है, कृमि-समूह से व्याप्त है, स्वभाव से दुर्गन्धिवाला है, पवित्रता-रहित है और मल-मूत्र का भाजन है—ऐसे शरीर में मूर्ख रमण करते हैं और पण्डित विरक्तभाव रखते हैं।

० **अकुरड़ी पर गुरु-शिष्य**—गुरु-शिष्य जा रहे थे। अकुरड़ी आई। शिष्य ने मुँह बिगाड़ कर कहा, जल्दी चलिए दुर्गन्धि आ रही है। गुरु ठहर गये, शिष्य ने चलने के लिए आग्रह किया। गुरु बैठकर कहने लगे—आवाज आ रही है और अकुरड़ी कह रही है कि मैं कल शाम को मिठाई के रूप में हलवाइयों के यहाँ विराजमान थी। मनुष्य आते गये और मुझे खरीद-खरीद कर खाते गये। मैं रात-रात उनके पेट में रही अतएव विष्ठा बनकर यहाँ सड़ रही हूं। शिष्य समझ गया कि जिससे घृणा कर रहा हूं, शरीर में वही गन्दगी भरी पड़ी है।

३ आहारोपचया देहा, परीसहपभंगुरा। —**आचारांग ८।३**

आहार से पुष्ट किया हुआ यह शरीर परीषहों के सम्मुख क्षण-भंगुर हो जाता है।

४ जं पि य इमं सरीरं उरालं आहारोवइयं,
इमं पि य अणुपुव्वेण विप्पजहियव्वं भविस्सति।

—**सूत्रकृतांग २।१।१३**

जो यह आहार से उपचित उत्तम शरीर है, इसे भी क्रमशः अवधि पूरी होने पर छोड़ देना पड़ेगा।

५ जे केई सरीरे सत्ता, वण्णे रूवे य सव्वसो।
मणसा काय वक्केणं, सव्वे ते दुक्खसंभवा ॥

—उत्तराध्ययन ६।१२

जो अज्ञानी शरीर में, वर्ण में, रूप-लावण्य में, मन, वचन, काया से आसक्त हैं; वे सब दुःख भोगनेवाले हैं।

६ असासए सरीरम्मि, रइं नोवलभामहं।
पच्छा पुरा व चइयव्वे, फेणबुब्बुयसन्निभे ॥

—उत्तराध्ययन १९।१३

पानी के बुलबुले के समान अशाश्वत शरीर में मुझे प्रीति नहीं है, क्योंकि यह तो पहले या पीछे छोड़ना ही पड़ेगा।

७ मोह-ममता नैं मन्त्र, मरै तो मारिये,
कनक-कामणी कलंक, टलै तो टालिये।
साधां सेती प्रीत, पलै तो पालिये,
प्रभु भजन में देह, गलै तो गालिये ॥

—एक युवकसन्यासी

५

शरीर की निंदनीयता

१ इदं शरीरं बहुरोगमन्दिरम् ।

—धर्मकल्पद्रुम

यह शरीर अनेकानेक रोगों का घर है ।

२ विग्रहा गदभुजङ्गमालयाः ।

—धर्मबिन्दु

यह शरीर रोगरूप सर्पों का घर है ।

३ को वास्ति घोरो नरकः ? स्वदेहः ।

—शंकरप्रश्नोत्तरी

दृश्यमान घोरनरक कौन है ? अपना शरीर ।

४ हितान्नपानौषधिवर्धितं वपुः, कृतघ्नमन्ते न समं मयैष्यति ।

—ब्रह्मानन्द-गीता

हितकारी अन्न-पानी एवं औषधियों से पुष्ट किया हुआ भी यह कृतघ्न-शरीर मरते समय साथ नहीं चलेगा ।

५ साधो ! इह तनु मिथ्या जानो !
या भितर जो राम वसतु है,
सांचो ताहि पिछानो !!

—गुरुग्रन्थसाहब, महल्ला ६

६ शरीर की उपमाएँ

१ तुलसी ! काया खेत है, मनसा भयो किसान।
पाप-पुण्य दोउ बीज है, बुवै सो लुने निदान ।।

२ यह शरीर एक मोटर है, इसे चलानेवाला ड्राइवर दूसरा ही है। यदि यह स्वतन्त्ररूप से चलता, तो इसे जलाया क्यों जाता ? बच्चा मरने के बाद क्यों नहीं बढ़ता ? प्यारा क्यों नहीं लगता ? खो जाने से ही हा ! हा ! होने लगता था, अब क्यों नहीं छुआ जाता ? क्या निकल गया ? थैली से दाम !

३ यह शरीर एक यंत्र हैं, कर्त्ता चेतन-अन्दर बैठा है, अन्न-जल खींच रहा है, सुख-दुःख का अनुभव कर रहा है एवं मेरा-मेरा पुकार रहा है। लेकिन इतना नहीं सोचता कि मैं कौन हूं ?

४ यह शरीर एक विचित्र मकान है, क्योंकि मालिक के बाहिर जाने पर भी मकान खड़ा रहता है, किन्तु मालिक के निकलते ही यह गिर जाता है।

५ यह तन एक पक्षी का घोंसला है। एक-दूसरे के घोंसले से प्यार करते हैं, किन्तु यह नहीं पूछते कि ऐ घोंसलेवालों ! तुम कहां से आये हो और कौन हो ?

●

७ शरीर का व्यायाम

१ लाघवं कर्मसामर्थ्यं, स्थैर्यं दुःख-सहिष्णुता।
दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च, व्यायामादुपजायते ॥

—**चरकसंहिता ७।३२**

शरीर में हल्कापन, कार्य करने की शक्ति, स्थिरता, दुःख सहने की क्षमता, रोग का क्षय और अग्नि की वृद्धि—शारीरिक व्यायाम से ये लाभ होते हैं।

२ अव्यायामशीलेषु कुतोऽग्निदीपनमुत्साहो देहदाढ्यं च।

—**नीतिवाक्यामृत २५।१६**

व्यायाम न करनेवालों के अग्निदीपन, उत्साह एवं शरीर की मजबूती कहां ?

३ आदेहखेदं व्यायामकालमुशन्त्याचार्याः।

—**नीतिवाक्यामृत २५।१७**

शरीर में खिन्नता न हो, वहाँ तक व्यायाम का समय है—ऐसा आचार्य कहते हैं।

४ श्रमः क्लमः क्षयस्तृष्णा, रक्तं, पित्त प्रतामकः।
अतिव्यायामतः कासो, ज्वरश्छर्दिश्च जायते ॥

—**चरकसंहिता ७।३३**

अधिक व्यायाम करने से थकावट, क्लम, धातुक्षय, प्यास की अधिकता, रक्तपित्त रोग, श्वास, कास, ज्वर, वमन—ये रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

५ अंतरे खोतरे कसरत करे, देव न मारे अपने मरे।

—**हिन्दी कहावत**

६ **व्यायाम के अयोग्य व्यक्ति—**

अतिव्यवाय - भाराध्वकर्मभिश्चातिकर्शिताः।
क्रोध-शोक-भयायासैः, क्रान्ता ये चापि मानवाः॥
बाल-वृद्ध-प्रवाताश्च, ये चोच्चैर्बहुभाषकाः।
ते वर्जयेयुर्व्यायामं, क्षुधितास्तृषिताश्च ये॥

—**चरकसंहिता ७।३६-३७**

अधिक मैथुन करनेवाला, अधिक भार वहनेवाला, अधिक चलने से जो कृश हो गया हो, जो क्रोध, शोक, भय, परिश्रम से आक्रान्त हो तथा जो बालक हो, वृद्ध हो, प्रबल-वात प्रकृतिवाला हो, उच्चस्वर से अधिक बोलनेवाला हो, भूखा-प्यासा हो—इतने व्यक्ति व्यायाम के अयोग्य माने गए हैं।

७ धनुष्य-बाण चलाने का व्यायाम १५ वीं १६ वीं शताब्दी तक इंग्लैण्ड में अनिवार्य था। भारत में तो सर्वमान्य था ही।

८ बुद्धि के व्यायामों में एक शतरंज का खेल भी है। इसका आविष्कार रावण ने मंदोदरी के लिए किया था। चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को सिखाया था। बुद्धकालीन भारत में इसका प्रचार काफी बढ़ा-चढ़ा था।

—**आत्मविकास, पृष्ठ १४०**

८ शरीर का वेग

१ वेगान्न धारयेद् वात - विण् - मूत्र-क्षव-तृट् - क्षुधाम् ।
निद्रा- कास - श्रम-श्वास - जृम्भा-ऽश्रुच्छर्दि - रेतसाम् ।।

—अष्टाङ्गहृदय-सूत्रस्थान ४।१

शरीर के वेग १३ प्रकार के हैं—१ वात (ऊर्ध्ववात-अधोवात), २ मल, ३ मूत्र, ४ छींक, ५ प्यास, ६ भूख, ७ निद्रा, ८ खांसी, ९ श्रम-जनित श्वास, १० जंभाई-उबासी, ११ आंसू, १२ वमन, १३ वीर्य—इनके वेगों को नहीं रोकना चाहिए, रोकने से रोग की उत्पत्ति होती है।

२ मुत्तनिरोहे चक्खुं, वच्चनिरोहे जीवियं चयति ।
उड्ढनिरोहे कोढं, सुक्कनिरोहे भवइ अपुमं ।।

मूत्र का वेग रोकने से नेत्र-ज्योति नष्ट होती है, मल के वेग को रोकने से जीवनशक्ति नष्ट होती है, ऊर्ध्ववायु को रोकने से कुष्ठरोग एवं वीर्य के वेग को रोकने से पुरुषत्व नष्ट होता है।

३ **मन के वेग—**

धारयेत्तु सदा वेगात्, हितैषी प्रेत्य चेह च ।
लोभेर्ष्या - द्वेष-मात्सर्य - रागादीनां जितेन्द्रियः ।।

—अष्टाङ्ग-हृदयसूत्रस्थान ४।२४

लोभ, ईर्ष्या, द्वेष, मात्सर्य एवं रागादि—ये मानसिक वेग हैं। आत्महितैषी और जितेन्द्रियपुरुष को चाहिए कि वह इन्हें रोकने की चेष्टा करे।

●

६ वस्त्र-आभूषण

१ वस्त्र-आभूषण शरीर को सुशोभित एवं अलंकृत करनेवाले हैं। मनुष्य ने जब से सामाजिकरूप धारण किया है, तभी से इनकी आवश्यकता प्रतीत हुई।

२ वासः प्रधानं खलु योग्यताया,
वासोविहीनं विजहाति लक्ष्मीः।
पीताम्बरं वीक्ष्य ददौ तनूजां,
दिगम्बरं वीक्ष्य विषं समुद्रः॥

वस्त्र योग्यता का प्रधान कारण है। वस्त्रहीन को लक्ष्मी छोड़ देती है। देखो! पीतवस्त्रधारी विष्णु को समुद्र ने अपनी पुत्री लक्ष्मी दी एवं दिगम्बर महादेव को विष दिया।

३ वस्त्र पहनने में तीन बातें ध्यान देने योग्य हैं:—वस्त्र आरामदेह हों, सस्ते हों और स्वच्छ हों।

—'जीवनलक्ष्य' से

४ कपड़ा सपेत, घोड़ा कमेत।

० कपड़ा कहे—तूं म्हारी इज्जत राख! हूँ थारी राख सूं।

० कपड़ो फाट गरीबी आई, जूती फाटी चाल गमाई।

— राजस्थानी कहावतें

५ कपड़ा पहनो तीन वार—बुध-वृहस्पति-शुक्रवार।

६ **अद्भुत गाउन :**—फ्रेंच-सुन्दरी श्रीमती **'पाप-सिंगर फ्रैंक्वाइस हार्डी' ने एक** बार सुवर्ण तथा हीरों से निर्मित २० लाख ४० हजार डालर (**लगभग** १ करोड़ ४३ लाख रुपयों) की कीमत का गाउन **पहनकर प्रथम** अंतरराष्ट्रीय हीरक मेले के उद्घाटन के अवसर पर **प्रदर्शन किया** । संसार के इस सर्वाधिक मूल्यवान गाउन का निर्माण पेरिस की **फेशन** बनानेवाली संस्था "पैकोराबान" ने किया था ।

—हिन्दुस्तान, २० **मई, १९६८**

श्रीमती पाप सिंगर फ्रैंकवाइस हार्डी

(वेश कीमती गाउन की सुरक्षा के लिए सशस्त्र पहरेदार फ्रेंच-सुन्दरी के साथ)

७ **पोशाक पर खर्च :**—एक राजा (फिलिप चतुर्थ) इतना खर्चीला था कि उसने अपने ४४ वर्षों के शासनकाल में १ करोड़ ४४ लाख ३८ हजार डालर तो केवल अपनी पोशाक पर खर्च किए थे।

—नवभारतटाइम्स, २२ जून १९६९

८ **अद्भुत गलीचा**—१८ हजार रत्न जड़ा हुआ '**भारत की शान**' नामक यह गलीचा, जो ७५ इंच लम्बा और ५-५ इंच चौड़ा है, ओटावा (कनाडा) में प्रदर्शनी के लिए रखा गया। कीमत चार लाख डालर है।

९ **आभूषण**—

० गहणा धायाँ रा सिणगार, भूखाँ रा आधार।

० एक रूप आपरो, सहँस रूप कपड़ो।
लाख रूप गहणो, करोड़ रूप नखरो॥

—राजस्थानी कहावतें

१० वस्त्रहीनस्त्वलंकारो, घृतहीनं च भोजनम्।
स्तनहीना च या नारी, विद्याहीनं च जीवनम्॥

—सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ १६८

जिस प्रकार बिना घृत का भोजन, बिना स्तन की स्त्री और बिना विद्या का जीवन शोभित नहीं होता, उसी प्रकार बिना वस्त्र का आभूषण भी शोभा नहीं देता।

१०

स्वास्थ्य-आरोग्य

१ धर्मार्थ-काम-मोक्षाणा-मारोग्यं मूलमुत्तमम् ।

—चरकसंहिता

धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष—इन सबका मूलसाधन आरोग्य (स्वास्थ्य) है ।

२ लाभानां श्रेष्ठमारोग्यम् ।

—महाभारत

सब लाभों में आरोग्य—लाभ श्रेष्ठ है ।

३ किं सौख्यमरोगिता जगति जन्तोः ।

प्रश्न—सुख क्या है ?

उत्तर—प्राणियों का रोगरहित रहना ।

४ प्रथम महान् संपत्ति है सुन्दर स्वास्थ्य ।

—एमर्सन

५ गुड हैल्थ अबोव वैल्थ ।

—अंग्रेजी कहावत

तंदुरुस्ती धन से बढ़कर है ।

६ एक तंदुरुस्ती हजार नियामत ।

—पारसी कहावत

सेहत अच्छी तो सब जगह आराम !

७ अपने बदन को तुम अपना घर समझो ।

—अकबर

८ जिसके पास स्वास्थ्य है, उसके पास आशा है। और जिसके पास आशा है, उसके पास सब कुछ है।

—अरबी लोकोक्ति

९ सुखार्थाः सर्वभूतानां, मताः सर्वाः प्रवृत्तयः।
सुखं च न विना स्वास्थ्यं, तस्मात् स्वास्थ्यपरो भवेत्।।

सब जीवों की सब प्रवृत्तियां सुख के लिए होती हैं और सुख स्वास्थ्य के के बिना हो नहीं सकता। अतः मनुष्य को स्वास्थ्य प्राप्त करने में तत्पर बनना चाहिए।

१० अगर तू स्वस्थ शरीर चाहता है, तो उपवास और टहलने का प्रयोग कर! अगर स्वस्थ आत्मा चाहता है तो उपवास और प्रार्थना का अभ्यास कर! टहलने से शरीर को व्यायाम मिलता है और प्रार्थना से आत्मा को! उपवास दोनों को शुद्ध करता है।

—**क्वर्ल्स**

११ त्रय उपस्तम्भा इति-आहारः, स्वप्नो, ब्रह्मचर्यम्।

—**चरकसंहिता-सूत्रस्थान २।३५**

स्वास्थ्य को कायम रखने के लिये तीन उपस्तम्भ-आधार हैं—१–उचित आहार, २–उचितनिद्रा, ३–ब्रह्मचर्य।

११ स्वस्थ-नीरोग

१ समदोषः समाग्निश्च, समधातुमलक्रियः ।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः, स्वस्थ इत्यभिधीयते ।।

—सुश्रुत १५।४१

जिसके दोष-वात-पित्त-कफ - अग्नि-पाचनशक्ति, धातुएँ रस-रक्त-मांस आदि तथा मल-मूत्र की क्रियाएँ सम हों और जिसके आत्मा, इन्द्रियां एवं मन प्रसन्न हों, उसे स्वस्थ-नीरोग कहते हैं।

२ एक स्वस्थ-शरीर आत्मा के लिए अतिथिशाला के समान है और अस्वस्थ बन्दीगृह के समान।

— **बेकन**

६ चरकऋषि ने चरकसंहिता का निर्माण किया, उसका काफी प्रचार हुआ। बड़े-बड़े वैद्यराज चरक की औषधियाँ प्रयोग में लेने लगे। एक बार वैद्यों की परीक्षा करने ऋषि पक्षीरूप से ग्रामों-नगरों में घूमते हुए वैद्यों के द्वारों पर **'कोऽरुक्-कोऽरुक्-कोऽरुक्'** ? यह पद्य बोलकर पूछने लगे कि नीरोग कौन है ३ ? उत्तर में कई वैद्य मकरध्वज खानेवालों को नीरोग कहते थे एवं कई बसंतमालती, वसंतकुसुमाकर और च्यवनप्राश आदि का सेवन करनेवालों को नीरोग बतलाते थे। चरकजी सोचने लगे कि ये तो आरोग्य का मूल केवल औषधियों को मान बैठे हैं। मेरे रहस्य को बिल्कुल ही नहीं समझ पाये कि औषधियाँ तो विशेष-परिस्थिति में ली जाती हैं, सामान्यतया उचित आहार-विहार से ही शरीर को स्वस्थ रखना चाहिए। यों विचार कर आगे बढ़े और ज्यों ही वैद्यराज **वाग्भट्ट** के

द्वार पर पूर्वोक्त पद्य बोले, वाग्भट्ट ने तीन पद्य नए बना डाले ? श्लोक इस प्रकार है :—

कोऽरुक् - कोऽरुक् - कोऽरुक् ?
हितभुग् मितभुक् च शाकभुक् चैव ।
सोऽरुक् - सोऽरुक् - सोऽरुक्,
शतपदगामी च वामशायी च ।।

प्रश्न—स्वस्थ कौन, स्वस्थ कौन, स्वस्थ कौन ?

उत्तर—हितभोजी-मितभोजी और शाकभोजी तथा वह स्वस्थ है—वह स्वस्थ है – वह स्वस्थ है—जो भोजन के बाद सौ कदम टहलता है एवं बायी करवट शयन करता है।

३ नित्यं मिताहार-विहारसेवी, समीक्ष्यकारी विषयेष्वसक्तः ।
दाता समः सत्यपरः क्षमावा-नाप्तोपसेवी स भवत्यरोगः ।।

—**चरकसंहिता**

सदा परिमित-आहार एवं विहार करनेवाला, विचारपूर्वक कार्य करनेवाला, समवृत्तिवाला, क्षमावान और आप्तजनों की सेवा करनेवाला—इन गुणों से युक्त व्यक्ति प्रायः नीरोग होता है ।

४ दायें स्वर भोजन करै, बायें पीवै नीर ।
बायीं करवट सोवतां, होय निरोग शरीर ।।

० भोजनांत सीधे ग्रहे, आठ श्वास पुनि सोल ।
दाहिने करवट होय के, बाम बत्तीस अमोल ।।

— **स्वर-शास्त्र**

५ भुक्त्वा पाणितले घृष्ट्वा, चक्षुषो यदि दीयते ।
जाता रोगाः प्रणश्यन्ति न भवन्ति कदाचन ।।

भोजन के बाद हथेलियों को घिसकर यदि आँखों पर लगाया जाए तो नेत्र-सम्बन्धी पुराने रोग नष्ट हो जाते हैं, और नए उत्पन्न नहीं होते ।

६ दूधे बालू जे करै, निरणा हरड़ै खाय।
औकी दांतण जे करै, तस घर वैद्य न जाय॥

७ **वर्जित वस्तुएं—**

चैत गुड़ बैसाखे तेल, जेठ पन्थ आसाढ़े बेल।
सावण दूध भादो मही, कार करेला कार्तिक दही।
अगहन जीरो पोषे धना, माह मिश्री फागुन चणा।
ये जो बारह महीना बचाय, उस घर वैद्य कभी नहीं आय॥

—राजस्थानी कहावत

१२ रोग

१ विकारो धातुवैषम्यं, साम्यं प्रकृतिरुच्यते ।

—चरकसंहिता ६।४

वातादि दोषों अथवा रसादि दोषों की विषमता का नाम विकार (रोग) है और समता का नाम प्रकृति—स्वास्थ्य है ।

२—रोग का ज्ञान—

निदानं पूर्वरूपाणि, रूपाण्युपशयस्तथा ।
संप्राप्तिश्चेति विज्ञानं, रोगाणां पञ्चधा स्मृतम् ।।

—अष्टांगहृदय-निदानस्थान १।२

रोग का ज्ञान पांच प्रकार से होता है—१–निमित्तकारण से, २–पूर्वरूप से, ३–वर्तमानरूप से, ४–अपराध से अर्थात् जो वस्तु रोगी को सुखकारक हो उससे, ५–संपूर्णलक्षणों से ।

३—रोग के कारण—

(क) हम समझ लें कि हर रोग कुदरत के अज्ञात कानून के भंग का ही परिणाम है ।

—गांधी

(ख) सर्वेषामपि रोगाणां, निदानं कुपिता मलाः ।
तत्प्रकोपस्य संप्रोक्तं, विविधाहितसेवनम् ।।

सभी रोगों का मूलकारण मलों का कुपित होना है और मल कुपित होने का कारण है विविध अहितकारी प्रवृत्तियों का सेवन करना ।

(ग) नवहिं ठाणेहिं रोगुप्पत्ती सिया—
अच्चासणाए, अहियासणाए, अइनिद्दाए, अइजागरिएणं, उच्चारनिरोहेणं, पासवणनिरोहेणं, अद्धाणगमणेणं, भोयण-पडिकूलयाए, इंदियत्थ—विकोवणयाए ॥

—स्थानांग ६।८७४

रोग होने के नौ कारण हैं—
१—अतिभोजन, २—अहित भोजन, ३—अतिनिद्रा, ४—अतिजागरण, ५—मल के वेग को रोकना, ६—मूत्र के वेग को रोकना, ७—अधिक भ्रमण, ८—प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना, ९—अतिविषय सेवन करना।

(घ) अभियुक्तं बलवता, दुर्बलं हीनसाधनम्।
हृतस्वं कामिनं चौर-माविशन्ति प्रजागराः ॥

—विदुरनीति १।१३

बलिष्ठ द्वारा दबाया गया दुर्बल, साधनहीन, जिसके धन का हरण हो गया हो वह, कामी और चौर—इन लोगों के निद्रासंबंधी रोग उत्पन्न होते हैं।

हृदय रोग के पांच कारण—शराब, तम्बाकू, चीनी, पत्नी की सुन्दरता, रसोइये की पाकशास्त्र में कुशलता।

—हिंदुस्तान ८ मई १९७२

हृदयरोग विशेषज्ञों की गोष्ठी में विशेषज्ञों का मत।

(ङ) धांसी काल री मासी।

—राजस्थानी कहावत

१३ रोग के प्रकार

१ वायुः पित्तं कफश्चोक्तः, शारीरो दोषसंग्रहः।
मानसः पुनरुद्दिष्टो, रजश्च तम एव च॥

—चरकसंहिता १।५७

रोग दो प्रकार के हैं—शारीरिक और मानसिक।
वात-पित्त एवं कफ—ये शारीरिक रोग हैं और रज-तम—ये मानसिक रोग हैं।

२ चत्वारो रोगा भवन्ति, आगन्तु-वात-पित्त-श्लेष्मनिमित्ताः।

—चरकसंहिता-सूत्रस्थान २०।३

शारीरिक रोग चार प्रकार के होते हैं—१–आगन्तु (चोट आदि के निमित्त से आया हुआ), २–वातनिमित्त, ३–पित्तनिमित्त, ४–कफनिमित्त।

३ साध्योऽसाध्य इति व्याधि—र्द्विधा - तौ तु पुनर्द्विधा।
सुसाध्यः कृच्छ्रसाध्यश्च, याप्यो यश्चानुपक्रमः॥

—सुश्रुत २

रोग दो प्रकार के हैं—साध्य और असाध्य। साध्य रोग के दो भेद हैं—सुसाध्य एवं दुःसाध्य। असाध्य रोग भी दो प्रकार का है—याप्य (जो औषधि से एक बार शान्त होता है किन्तु मिटता नहीं) और अनुपक्रम (जिस पर औषधि का कोई असर नहीं होता)।

४ सोलह रोग—

गंडी अदुवा कुट्ठी, रायंसी अवमारियं।
कणियं झिमियं चेव, कुणियं खुज्जियं तहा।
उअरिं पास मूयं च, सूणियं च गिलासिणिं।
वेवइं पीठसप्पिं च, सिलिवयं मुहुमेहणिं।
सोलस एते रोगा, अक्खाया अणुपुव्वसो ।।

—आचारांग ६।१

१—गंडमाल, २—कोढ़, ३—क्षयरोग, ४—अपस्मार (मृगी-सन्निपात आदि), ५—नेत्ररोग, ६—शरीर की जड़ता, ७—हीनाङ्गता, ८—कुबड़ापन, ९—पेट का रोग, १०—गूंगापन, ११—शोथ-सूजन, १२—भस्मक (अतिभूख लगना), १३—कंपनवायु, १४—पीठवक्रता, १५—श्लीपद (पैर का रोग), १६—मधु-प्रमेह। क्रमशः—ये १६ रोग कहे गए हैं।

१४ रोगी

१ स्मृतिर्निर्देशकारित्व - मभीरुत्वमथापि च।
ज्ञापकत्वं च रोगाणा-मातुरस्य गुणः स्मृता ॥

—चरकसंहिता ६-६

१—स्मरणशक्ति, २—वैद्य की आज्ञा पालने की प्रवृत्ति, ३—निर्भयता ४—रोगों को अच्छी तरह बता सकना—ये चार रोगी के गुण है।

२ नह्यनाख्यातरोगस्य, रोगिणोऽपि चिकित्सितम्।

—त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित्र

रोग को नहीं बतानेवाले रोगी की चिकित्सा नहीं हो सकती।

३ रोगी चाहता पलक में, हो जाए आराम।
पर, दवा-दवा की रीति से, करती आखिर काम ॥
स्याणप उड़ जाती सकल, बुद्धि चपल बन जाय।
भोग-रोग के चक्र में, चाहे जो फँस जाय ॥
लेने से पहले दवा, पूरा करो विचार।
बाज् दवा करती खड़ा, उल्टा नया विकार ॥

—दोहासन्दोह

४ रोग अगन अर राड़, जाण अलप कीजे जतन।
बधियां पछे बिगाड़, रोक्यो रहे न राजिया !

—सोरठासंग्रह

५ का तो रोगी ठगीजै र, का भोगी ठगीजै।
० साजो खावै अन्न, रोगी खावै धन ॥

—राजस्थानी कहावतें

६ बीमार है वो रूह, जो के दर्दे-आशना[1] नहीं,
बीमार सर जो सामने, हक के झुका नहीं।
बीमार दिल है जिसमें, तहम्मुल[2] जरा नहीं,
बीमार आँख है जो के हकीकतनुमा[3] नहीं ।।

—उर्दू शेर

७ भारत में रोगी के पास जो कोई आता है, कुछ न कुछ दवा बता ही जाता है। अमेरिका में यह रिवाज नहीं है, वहाँ प्रत्येक कुटुम्ब का अपना निश्चित डॉक्टर (फैमिली डाक्टर) होता है, एवं उसी की सलाह से दवा दी जाती है।

---

१ जिसने दर्द को नहीं पहचाना।

२ सबर।

३ वास्तविकता को नहीं देखनेवाली।

१५ रोगी की सेवा

१ गिलाणस्स अगिलाए वेयावच्चकरणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवति ।

—स्थानांग ८

रोगी की सेवा के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए ।

२ सोऊण वा गिलाणं, पंथे गामे य भिक्खवेलाए,
जदि तुरियं णागच्छति, लग्गति गुरुए सवित्थारं ।

—निशीथभाष्य २९७० तथा बृहत्कल्पभाष्य ३७६९

विहार करते हुए, गाँव में रहते हुए, भिक्षा करते हुए यदि सुन पाये कि कोई साधु-साध्वी बीमार है, तो शीघ्र ही वहाँ पहुंचना चाहिये । जो साधु शीघ्र नहीं पहुंचता, उसे गुरुचातुर्मासिक प्रायश्चित्त आता है ।

३ उपचारज्ञता दाक्ष्य-मनुरागश्च भर्तरि ।
शौचं चेति चतुष्कोयं, गुणः परिचरे जने ।।

— चरकसंहिता ८

१—उपचार की जानकारी, २—दक्षता, ३—रोगी के प्रति अनुराग और ४—सच्चाई रखने वाला, सेवा करनेवाले के—ये चार गुण माने गये हैं ।

१६ औषधि

१ बहुता तत्र योग्यत्व-मनेकविधकल्पना।
संपच्चेति चतुष्कोऽयं, द्रव्याणां गुण उच्यते ।।

—चरकसंहिता ६।७

औषधि के चार गुण हैं—

१—अधिकरूप में मिलना।

२— अपने रस-गुण-वीर्य-विपाकादि गुणों से युक्त होना।

३—अनेकविधि (रस-चूर्ण-गोली-अवलेह आदिरूप से) कल्पित होने की योग्यता होना।

४—रोग मिटाने की शक्ति होना।

२ अप्रियमप्यौषधं पीयते।

—नीतिवाक्यामृत ८।११

औषधि अप्रिय हो तो भी उसका सेवन किया जाता है।

३ रुग्ण होना चाहता कोई नहीं,
रोग लेकिन आ गया जब पास हो।
तिक्त औषधि के सिवा उपचार क्या!
शमित होगा वह नहीं मिष्ठान्न से ।।

—दिनकर

४ विषस्य विषमौषधम्।

—संस्कृत कहावत

विष की दवा विष है।

५ एक रोगी इलाज करता-करता हार गया। डॉक्टर ने दवा लिखी, नहीं मिली। जंगल में भटकता-भटकता एक बार प्यासा हुआ। जल का एक कुण्डा भरा था, रोगी ने जलपान किया और निरोग हो गया, कारण वह जहरी सांपों का ऐंठा हुआ था।

६ किं नाम भेषजं कुर्याद्, विकारे सन्निपातिके।

—त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित्र

सन्निपात हो जाने के बाद औषधि क्या कर सकती है?

७ बाद अजमुर्दने सुहरा बनोश दारु।

—पारसी कहावत

मरने के बाद दवाई।

८ न ह्यौषधिपरिज्ञानादेव व्याधिप्रशमः।

—नीतिवाक्यामृत १०।२

औषधि के ज्ञानमात्र से रोग उपशान्त नहीं होता।

१७ कतिपय औषधियाँ

१ हरीतकी मनुष्याणां, मातेव हितकारिणी।
कदाचित् कुप्यते माता, नोदरस्था हरीतकी।

—**आयुर्वेद**

हरड़ मनुष्य के लिए माता के समान हित करनेवाली है। माता कदाचित् कुपित हो जाती है, लेकिन पेट में रही हुई हरड़ नहीं।

२ लकवे के रोगी के लिए मच्छर का डंक लाभकारी है।

—**डॉ. जे. एफ. मार्शल**

३ **ट्रुथ ड्रग** के इन्जेक्शन से मनुष्य सच्ची बात कह देता है।

—**नवनीत, जनवरी १९५३**

४ **सोडियम पेंटोथल** के इन्जेक्शन से अपराधी अपराध को स्वीकार कर लेता है।

—**नवनीत, नवम्बर १९५२**

१८ उत्तम औषधियाँ

१ सर्वोत्तम औषधियां हैं, विश्राम और उपवास।

—**फ्रैंकलिन**

२ **अन्न दवा पानी दवा, दवा नींद अरु काम।**
दवा-दवा धन ! आखिरी, धर्म दवा अभिराम ।।

—**दोहासंदोह**

३ १—सहिष्णुता, २—सम्मानदान, ३—स्वार्थत्याग, ४—सेवा, ५—समता —यह **पंच सकार-चूर्ण** भवरोग का नाशक है।

४ (१) शरीर की नहीं प्राण की रक्षा करो।
(२) शरीर के बजाय वातावरण को शुद्ध करो।
(३) रोगी को नीरोग रहना सिखाओ।
(४) खावो कम और पिओ ज्यादा।
(५) सुविचारों से बड़ी कोई औषधि नहीं है।

—**दार्शनिक इब्बेसिना**

१६ पथ्य

१ डाइट क्योर्स मोर दैन दी डॉक्टर्स।

—अंग्रेजी कहावत

पथ्य ही उत्तम चिकित्सा है।

२ विनैव भेषजैर्व्याधिः पथ्यादेव विलीयते।
न तु पथ्यविहीनस्य, भेषजानां शतैरपि॥

पथ्य रखा जाए तो औषधि के बिना ही रोग मिट जाता है, किन्तु पथ्यहीन रोगी सैकड़ों औषधियाँ खा लेने पर भी निरोग नहीं हो सकता।

३ पथ्ये सति गदार्तस्य, किमौषधिनिषेवणैः।
पथ्येऽसति गदार्तस्य, किमौषधि निषेवणैः॥

रोगी यदि पथ्य से रहता है तो उसे औषधि से क्या ? अर्थात् औषधि लेने की आवश्यकता नहीं है। और यदि पथ्य से नहीं रहता तो उसे औषधि से क्या ? अर्थात् उसको औषधि लेना व्यर्थ है।

४ मुमूर्षाणां नु सर्वेषां, यत्पथ्यं तन्नरोचते।

—वाल्मीकिरामायण ३।५३।१७

जो मरने की तैयारी में होते हैं, उन्हें पथ्य अच्छा नहीं लगता।

५ सर्वं बलवतः पथ्यमिति न कालकूटं सेवेत।

—नीतिवाक्यामृत १६।१४

शक्तिशालियों के लिए सब कुछ पथ्य ही है—ऐसे कहकर जहर न खा लेना चाहिए।

१ गुरोरधीताखिलवैद्यविद्य; पीयूषपाणिः कुशलः क्रियासु।
गतस्पृहो धैर्यधरः कृपालुः, शुद्धोऽधिकारी भिषगीदृशः स्याद् ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार पृ० ४५

जिसने गुरुगम से वैद्यशास्त्र पढ़ा है, जिसके हाथ में अमृत (यश) है, जो क्रिया-कुशल है, धन का लोभी नहीं है, धैर्यवान है, दयालु है और शुद्ध है—ऐसा वैद्य-वैद्यक का अधिकारी माना जाता है।

२ श्रुते पर्यवदानत्वं, बहुशोदृष्टकर्मता।
दाक्ष्यं शौचमिति ज्ञेयं, वैद्ये गुणचतुष्टयम् ॥

—चरकसंहिता ९।६

१–आयुर्वेद का अच्छा ज्ञानी, २–अनुभवी (रोगी एवं औषधियों का), ३–समय के अनुसार युक्ति का ज्ञाता, ४–पवित्र आचरणवाला—वैद्य के—ये चार गुण हैं।

३ मैत्री कारुण्यमार्तेषु, शक्ये प्रीतिरुपेक्षणम्।
प्रकृतिस्थेषु भूतेषु, वैद्यवृत्तिश्चतुर्विधा ॥

—चरकसंहिता ९।२६

१—प्राणीमात्र से मित्रता।

२—रोगियों पर दयाभाव।

३—साध्यरोगों की प्रेमपूर्वक चिकित्सा करना।

४—मरणासन्न-रोगियों के प्रति उपेक्षाभाव रखना (उनकी चिकित्सा हाथ में न लेना)—यों वैद्यों में चार प्रवृत्तियाँ होती हैं।

४ रोगे त्वेकौषधासाध्ये, देयमेवौषधान्तरम् ।

—त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित्र

एक औषधि से रोग न मिटे तो दूसरी औषधि देनी चाहिए ।

५ बादशाह ने हकीम से अपने लिए दवा पूछी । हकीम ने सवालाख रुपयों का नुस्खा लिखवाया । बादशाह भिखारी का रूप बनाकर रात को हकीम के पास गया । हकीम बोला—एक पैसे की मूली लेकर उस पर नमक लगाकर रात को छत पर रख दो एवं सुबह खालो—यों कहकर उसे पैसा भी दे दिया । आश्चर्यचकित बादशाह ने सुबह भेद पूछा ? हकीम ने कहा—ग्राहक की हैसियत के मुताबिक दवा दी जाती है ।

४ रोगं रोगनिदानं, रोगचिकित्सा च रोगमुक्तत्वम् ।
जानाति सम्यगेतद्, वैद्यो नायुःप्रदो भवति ।

वैद्य रोग को, रोगोत्पत्ति के कारण को, रोग की चिकित्सा को और रोग की मुक्ति को जान सकता हैं, किन्तु आयुष्य नहीं बढ़ा सकता ।

७ अपि धन्वन्तरिर्वैद्यः, किं करोति गतायुषि ?

आयुपूर्ण हो जाने पर धन्वन्तरि वैद्य भी क्या कर सकता है ?

८ डॉक्टर ने पादरी का इलाज किया । वे फीस देने लगे, तब डॉक्टर ने हँसकर कहा—मैंने आपको स्वर्गवासी होते बचा दिया और आप मुझे नरकवासी होते बचा देना ।

२१ वैद्यों के प्रकार

१ भिषक्छद्मचरा सन्ति, सन्त्येके सिद्धसाधिताः ।
सन्ति वैद्यगुणैर्युक्ता—स्त्रिविधा भिषजो भुवि ॥

—चरकसंहिता-सूत्रस्थान ११।४०

वैद्य तीन प्रकार के होते हैं :—

१ **छद्मचर** वैद्यों के समस्त उपकरण रखनेवाले ।

२ **सिद्धसाधित** – प्रसिद्ध वैद्यों या बड़े आदमियों के औषधालयों में काम करके नाम कमाने की चेष्टा करनेवाले ।

३ **वैद्यगुणयुक्त**—वैद्य के गुणों से सम्पन्न ।

२ **वैद्य दो प्रकार के होते हैं—**

१ प्राणाभिसर, २ रोगाभिसर । जाते हुए प्राणों को लौटाकर लानेवाला अच्छा वैद्य **प्राणाभिसर** कहलाता है । नए रोगों को बुलाकर रोगी को मारनेवाला मूर्खवैद्य **रोगाभिसर** कहलाता है ।

—चरकसंहिता-सूत्रस्थान २९।५

२२ श्रेष्ठ-वैद्य

१ तदेव युक्तं भैषज्यं, यदारोग्याय कल्पते।
स चैव भिषजां श्रेष्ठो, रोगेभ्यो यः प्रमोचयेत् ॥

—**चरकसंहिता १।१३५**

औषधि वही अच्छी है, जिससे आरोग्य की प्राप्ति हो, और वैद्य वही श्रेष्ठ है, जो रोगों से मुक्त कर दे।

२ हकीम और वैद्य यक्सां है, अगर तक्शीस[1] अच्छी हो।
हमें सेहत से मतलब है, बनप्सा हो या तुलसी हो।

—**अकबर**

३ सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक वह है, जो निदान अधिक करता है एवं औषधियां कम देता है।

—**एच० जो० बोन**

४ चिकित्सक, केवल चिकित्सा करता है, अच्छा करनेवाली तो प्रकृति है।

—**अरस्तू**

●

---

१ निदान—परीक्षण,

२३ निकृष्ट-वैद्य

१ स किं राजा वैद्यो वा, यः स्वजीवनाय प्रजासु दोषमन्वेषयति ।

—नीतिवाक्यामृत ६।४

उस राजा एवं वैद्य से क्या लाभ ? जो अपने जीवन की रक्षा के लिए प्रजा के दोषों (रोगों) को खोजता रहता है ।

२ वातपित्तादयो रोगा, ये चाजीर्णसमुद्भवाः ।
ते सर्वे धनिनां सन्तु, वैद्यनाथ ! तवाज्ञया ।।

—बृहस्पति

शौचादि से निवृत्त होकर निकृष्ट वैद्य सोचा करता है—हे वैद्यनाथ ! आपकी कृपा से वात, पित्तादि एवं अजीर्ण से प्रकट होनेवाले सभी रोग धनी लोगों के हो जाओ !

३ वैद्यराज ! नमस्तुभ्यं, यमराजसहोदर !
यमस्तु हरति प्राणान्, वैद्यः प्राण-धनानि च ।।

—सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ ४५

हे यमराज के सहोदर वैद्यराज ! तुझे नमस्कार है । यम केवल प्राण लेता है, लेकिन वैद्य (तू) प्राण-धन दोनों का हरण करता है ।

४ नाधीतश्चरको येन, सुश्रुतं न च सुश्रुतम् ।
वाग्भटे वाग्भटो नैव, स वैद्यो यमकिंकरः ।।

जिसने चरक नहीं पढ़ा, सुश्रुत नहीं सुना एवं जो वाग्भट का विवेचन करने में समर्थ नहीं, वह वैद्य यम का दूत हैं ।

५ चितां प्रज्ज्वलितां दृष्ट्वा, वैद्यो विस्मयमागतः ।
नाहं गतो न मे भ्राता, कस्येदं हस्तलाघवम् ।।

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ ४५

जलती हुई चिता को देखकर वैद्य विस्मित होकर सोचने लगा—न तो मैं गया और न मेरा भाई गया। हमारे सिवा ऐसी करतूत किस वैद्य में है, जो जाते ही रोगी को खत्म कर दे ?

६ सुनने में आया है कि जयपुर के राजवैद्य **श्रीलच्छीरामजी** के हाथ में इतना यश था, कि वे जहाँ भी जाते, रोगी मरता-मरता बच जाता, और उन्हीं के गुरुभाई का ऐसा हिसाब था कि किसी रोगी के प्राण कहीं अटके हुए होते, तो उनके पधारते ही प्रायः तत्काल निकल जाते।

७ वरमात्मा हुतोऽज्ञेन, न चिकित्सा प्रवर्तिता ।।

—चरकसंहिता ६।१५

अपनी आत्मा को अग्नि में होमना अच्छा है, किन्तु मूर्खवैद्य से चिकित्सा करवाना अच्छा नहीं है।

८ नीम हकीम खतरे जॉन, नीम मुल्ला खतरे ईमान ।

—उर्दू कहावत

९ मूर्ख वैद्य की मातरा 'र' बैकुंठरी जातरा ।

—राजस्थानी कहावत

१० **जानमार तुल्लाखाँ हकीम—**

साल भर लंघन से ज्वर को जराऊं जोर,
फांसी को गले में कसी खांसी को छुड़ाऊं मैं ।
होय जो अजीरन तो तुरत जमालगोटा,
पाव भर दे के दस्त सैंकड़ों कराऊँ मैं ।
मुक्कन से मार कर जहरवाद फोड़ूं,
गुद अंदर भंगदर के नश्तर लगाऊं मैं ।
हैजा में अफीम तीन तोला ही खिलाऊं बस,
जानमारतुल्लाखाँ हकीमजी कहाऊं मैं ।।

२४ चिकित्सा

१ आसुरी मानुषी दैवी, चिकित्सा त्रिविधा मताः ।
शस्त्रैः कषायैर्लोहाद्यैः, क्रमेणान्त्या सुपूजिता ।।

चिकित्सा तीन प्रकार की होती है—

आसुरी, मानुषी और दैवी—ये क्रमशः शस्त्र, कषाय-कसैलापदार्थ एवं लोहादि द्वारा की जाती हैं । प्रथम से द्वितीय और उससे तृतीय श्रेष्ठ है ।

२ रोग दूर करने और शरीर को नीरोग करने की विधि को **चिकित्सा** कहते है । वह कई प्रकार की हैं । जैसे—आयुर्वेदिक, यूनानी, एलोपैथिक होमियोपैथिक एवं प्राकृतिक ।

३ **सम्मोहनविद्या के सहारे शल्यक्रिया (आपरेशन)—**

डॉ० श्री व्ही. एन. उपाध्याय जब मेडिकल कॉलेज में एम. बी. बी. एस. के प्रथमवर्ष के छात्र थे, तब उन्होंने एकबार **पी. सी. सरकार** के जादू के खेल में स्पष्ट देखा कि एक लड़की को काट दिया गया और पुनः उसे जीवित कर दिया गया । तब उनके दिमाग में यह बात आई कि क्यों न इसका प्रयोग चिकित्साविज्ञान में शल्यक्रिया (आपरेशन) के लिए किया जाय ! बस, उन्होंने अनेक जादूगरों से सम्पर्क किया एवं इस विषय की अनेक पुस्तकें पढ़ी । तत्त्व समझ में आया और अपने मित्रों पर प्रयोग करना शुरू किया । कुछ सफलता मिली । फिर उन्होंने अपनी नवविवाहिता पत्नी पर विद्या का परीक्षण किया ।

इच्छा के विरुद्ध सम्मोहन नहीं होता—इस सिद्धान्त के अनुसार सर्वप्रथम उन्होंने अपनी पत्नी की सहर्ष सम्मति लेकर उसे आरामकुर्सी पर बैठाया और उसके सामने छः इंच की दूरी पर अपने हाथ की अंगूठी रखकर कहा—इस अंगूठी के नग पर ध्यान केन्द्रित करो ! ध्यान केन्द्रित हो गया। फिर वे कहने लगे—तुम्हारा सारा शरीर हल्का होता जा रहा है, अब तुम अपनी आँखें खुली नहीं रख सकती। बस, ऐसे कहते-कहते ही स्त्री की आँखें बंद हो गई। फिर डॉक्टर ने कहा—अब तुम आराम से गहरी नींद में सोगई हो और जब तक मैं नहीं उठाऊँगा, तुम नहीं जाग सकोगी। डॉक्टर के इस कथन के साथ ही उनकी पत्नी प्रगाढ़निद्रा में सोगई। इसी क्रम में डॉक्टर ने पुनः कहा—अब तुम्हारा बायाँ हाथ बिलकुल निष्क्रिय और शून्य हो गया है। उसको काटने पर भी तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा। ऐसे कहकर स्त्री के हाथ पर बड़े जोर से पिन चुभोई गई, लेकिन कोई असर नहीं हुआ।

कुछ समय तक वह निश्चलरूप से सोती रही। फिर उसे जागने के लिए डॉक्टर ने कहा—अब तुम्हारा बायाँ हाथ बिलकुल ठीक हो गया है,तुम्हारी नींद धीरे-धीरे कम होती जा रही है, अब तुम्हारी आँखे खुल रही हैं, अब तुम बिलकुल जाग गई हो। डॉक्टर के इतना कहते ही उनकी धर्मपत्नी पूर्ववत् जागृत हो गई और पूछने पर बोली—मुझे किसी भी चीज की चुभन का अनुभव नहीं हुआ।

इस परीक्षण के पश्चात् डॉ० उपाध्याय ने एक रोगी के सिर के सामने सेव के आकारवाले एक ट्यूमर (रसौली) का ऑपरेशन इसी सम्मोहन-विद्या के द्वारा किया। लगभग ३४ मिनट का समय लगा। ऑपरेशन के समय रांची मेडिकल कॉलेज के सभी डॉक्टर एवं स्टाफ के अन्य सदस्य वहाँ उपस्थित थे।

(देखिए, सम्मोहन-क्रिया करते समय के चित्र—पृष्ठ सं० ६३ पर)

सम्मोहनविद्या के सहारे शल्यक्रिया (आपरेशन)

चित्र नं० १

डा० व्ही० एन० उपाध्याय द्वारा सर्वप्रथम अपनी पत्नी पर सम्मोहनविद्या का परीक्षण। श्रीमती डॉ० उपाध्याय सम्मोहित अवस्था में।

चित्र नं० २

सेव के आकार का ट्यूमर (रसोली) का आपरेशन करने के लिए सम्मोहन विद्या का प्रयोग करते हुए डा० व्ही० एन० उपाध्याय।

—साप्ताहिक हिन्दुस्तान, २ मई १९७२

२५ आयुर्वेद एवं नाड़ीविज्ञान आदि

१ हिताहितं सुखं-दुःख-मायुस्तस्य हिताहितम् ।
मानं च तच्च यत्रोक्त-मायुर्वेदः स उच्यते ।।

—चरकसंहिता-सूत्रस्थान १।४०

आयु चार प्रकार की है—१–हितआयु, २–अहितआयु, ३–सुखआयु, ४–दुःखआयु—इन चारों प्रकार की आयु के लिए पथ्य, अपथ्य, इनका मान (प्रमाण-अप्रमाण) और स्वरूप बताया गया हो, उस शास्त्र को **आयुर्वेद** कहते हैं।

२ श्वास के आधार पर आयु—

प्राणी	**प्रति मिनट श्वास**	**आयु**
अजगर	१	दस हजार वर्ष
साँप	३	एक हजार वर्ष
कछुआ	५	पाँच सौ वर्ष
मनुष्य	१३	सौ वर्ष
घोड़ा	३५	पच्चीस वर्ष
कुत्ता	४५	बारह वर्ष

—एक योगी के मतानुसार

३ साधारणतया एक मिनट में १५, एक दिन में २१ हजार ६०० और वर्ष में ७७ लाख ७६ हजार श्वास लिये जाते हैं। क्रोध-भय-कामसेवन आदि के समय श्वास तेज होता है।

- बैठत-पन्द्रह चालतऽठारह, बोलत आवे बीस ।
भोगकाल में चौसठ आवे, निद्रा माहीं तीस ।।

—श्री विलक्षण-अवधूत, पृष्ठ-२६६

४ अवस्था के आधार पर नाड़ी के ठबके और श्वासों की संख्या—

अवस्था	प्रति मिनट ठबके	अवस्था	प्रतिमिनट श्वास
गर्भावस्था में	१४०-१५०	दो मास से दो वर्ष तक	३५
स्तनपान के समय	१००-१४०	दो वर्ष से ६ वर्ष तक	२३
बाल्यअवस्था में	८०-१००	छः वर्ष से १२ वर्ष तक	२०
युवावस्था में	७२	बारह वर्ष से १५ वर्ष तक	१८
वृद्धावस्था में	७५-८०	पन्द्रह वर्ष से २१ वर्ष तक	१६-१८

—संकलित

५ नाड़ी की गति—

नाड़ी धत्ते मरुत्कोपं, जलौका-सर्पयोर्गतिम्,
कुलिङ्क-काक-मण्डूक-गतिं पित्तस्य कोपतः ।
हंस-पारावतगतिं, धत्ते श्लेष्मप्रकोपतः,
लाव-तित्तिर-वर्त्तीनां, गमनं सन्निपाततः ।
स्थित्वा-स्थित्वा चलति या,सा स्मृता प्राणनाशिनी,
अतिशीता च क्षीणा च, जीवितं हन्त्यसंशयम् ।।

—आयुर्वेद

वायु कुपितहोने पर नाड़ी जोंक एवं साँप की गति से चलती है । पित्त का प्रकोप होने पर कुलिक, काक एवं मेंढ़कवत् चलती है । कफ प्रकुपित होने पर हंस एवं कबूतर की तरह चलती है और सन्निपात हो तब लाव, तित्तर और वत्तक के समान चलती है ! ठहर-ठहर कर चलनेवाली नाड़ी प्राणनाशक है तथा अतिशीत एवं अतिक्षीण नाड़ी निःसन्देह जीवित का नाश करती है ।

१ पूर्वभव के स्थूलशरीर छोड़ने के बाद नवीनभव के योग्य स्थूलशरीर बनाने के लिये पहले-पहल जो योग्य पुद्गलों का ग्रहण किया जाता है, उसे **जन्म** कहते हैं।

जन्म के तीन भेद है—

सम्मूर्च्छनजन्म, गर्भजन्म और उपपातजन्म।

नारक, देवता और संज्ञीमनुष्य-तिर्यञ्चों को छोड़कर शेष सब जीवों का समूर्च्छनजन्म है। संज्ञीमनुष्यों-तिर्यञ्चों का जन्म गर्भजन्म है और देवों व नैरयिकों का जन्म उपपातजन्म है।

—लोक-प्रकाश, पुंज ७ प्रश्न १

२ क्षेत्रभूता स्मृता नारी, बीजभूतः स्मृतः पुमान्।
क्षेत्र-बीजसमायोगात् संभवः सर्वदेहिनाम्॥

—मनुस्मृति ९।३३

स्त्री क्षेत्र के समान है और पुरुष बीज के समान है, इन दोनों के संयोग से गर्भज-प्राणियों का जन्म होता है।

३ जायो जायो सब कहे आयो कहै न कोय।
जायो नाम है जनम को रहणों किस विध होय?

—राजस्थानी दोहा

४ स जातो येन जातेन, याति वंशः समुन्नतिम्।
परिवर्तिनि संसारे, मृतः को वा न जायते।

जिस के जन्म से वंश की उन्नति हो, वास्तव में उसी का जन्म सार्थक है। ऐसे तो परिवर्तनशील-संसार में मरने के बाद कौन जन्म नहीं लेता?

२७ जन्मसम्बन्धी अनोखी प्रथाएँ

१ देश-विदेश की अनोखी प्रथाएँ—

इंडोनेशिया में बच्चे के जन्म लेने पर उसकी नाल को बांस के एक विशेष प्रकार के टुकड़े से काटा जाता है और फिर उस नाल को एक मिट्टी के बर्तन में रखकर, उसमें पैसा, कागज का टुकड़ा और पैंसिल, सुई, नमक, दाल-चावल, फूल-फल तथा इत्र डालकर जमीन में गाड़ दिया जाता है।

बच्चे के जन्म के बाद फौरन उसे सुनहरे रंग के पानी से स्नान कराया जाता है। फिर उसे कसकर एक कपड़े में बांध दिया जाता है, जिससे वह हिल न सके। फिर एक मंत्र पढ़कर उसके बिस्तर पर जोर-जोर से घूंसे मारकर उसे लिटा दिया जाता है। इसका मतलब यह होता है कि बालक बड़ा होने पर बिगड़ेगा नहीं।

- **आस्ट्रेलिया** के ईशानकोण में स्थित **मेलेनीशिया** द्वीप में बड़ी विचित्र प्रथा है। अगर किसी के जुड़वां बच्चे हो जायँ और उनमें से एक लड़का और एक लड़की हो तो लड़की को अवश्य मार डालते हैं। या तो वह उसे समुद्र में फेंक देते हैं या उसे जिंदा दफना देते हैं। लेकिन **सुलेमान-द्वीप** और **न्यू हेब्रीडेस** द्वीप में जुड़वा बच्चे शुभ माने जाते हैं।
- **सेन क्रिस्टावेल द्वीप** में तो सब सन्तानों को मार देते हैं और दूसरे द्वीपों से चलते,फिरते बच्चे गोद ले लेते हैं, क्योंकि वहां छोटे बच्चों का लालन-पालन दुःखदायी माना जाता है।
- **फिजी द्वीप** की कुछ जातियों में तो बड़ी ही अजीब प्रथा है। अगर वहाँ

कुटुम्ब का कोई भी सदस्य, चाहे वह बूढ़ा हो या जवान, बेकार समझा **जाये** तो उसे जिन्दा ही गाड़ दियाँ जाता है। इसी प्रकार बालकों के **साथ** भी करते हैं। अगर वे अंगहीन, कुरूप या रोगी हैं तो उन्हें भी **जिन्दा** गाड़ देते हैं। **न्यूकेलीडिया** में बच्चों को बेच देते हैं।

◆ **आस्ट्रेलिया** के मूलनिवासी बच्चे के जन्म लेते ही उसकी नाक एक विशेष प्रकार के गर्मपानी से दबाते हैं, जिससे वह चपटी हो जाय, क्योंकि वहाँ चपटी नाक सुन्दरता का प्रतीक समझी जाती है। एक स्त्री के चाहे जितने बच्चे हों, लेकिन वह पालन सिर्फ दो या तीन का कर सकेगी। शेष को भूखे-प्यासे रखकर या विषैली चीजें खिलाकर मार डालेगी। किसी समय में तो यह भी प्रथा थी कि जो बालक व्यर्थ समझा जाता था, उसे मारकर बड़ा भाई या दादी-बाबा खा जाते थे। लेकिन अब यह प्रथा नहीं है।

—साप्ताहिक हिन्दुस्तान, १६ मई १९७१, पृष्ठ ६२

२ **डेवन शायर** में बच्चे के जन्म लेने के दो-तीन दिन पूर्व एक पनीर का टुकड़ा तैयार किया जाता है बच्चे के पैदा होते ही पनीर के टुकड़े को सर्वप्रथम उस परिवार के **फैमेली डॉक्टर** को खाना पड़ता है और शेष उस परिवार के अन्य सदस्यों को। शिशु के प्रथमबार के कटे हुए नाखूनों तथा बालों को एक केक में रखकर किसी वृक्ष के नीचे गाड़ दिया जाता है। बच्चे को एक वर्ष तक आइना नहीं दिखाया जाता। बच्चे के नामकरण के समय बाइबिल खोली जाती है और जो पृष्ठ खुलता है, उसी में से कोई नाम रख लिया जाता है। बच्चे पर पवित्र-जल भी छिड़का जाता है। अगर पवित्र-जल छिड़कते समय बच्चा रोता नहीं है, तो घर वाले चुटकी भरकर उसे रुला देते हैं।

० अधिकांश जन-जातियों में बच्चे के जन्म के पश्चात् माताएँ कुआँ पूजती हैं, तभी उसे पवित्र माना जाता है। जिन जनजातियों में कुएँ को पूजने की प्रथा है, उनमें शिशु के जन्म पर पिता को बिस्तर पर लेटकर ठीक वैसा ही व्यवहार करना होता है, जैसे—उसी के गर्भ से बच्चा पैदा हुआ हो। शिशु-जन्म के बाद एक निर्धारित अवधि तक जिस प्रकार माता

किसी वस्तु के हाथ नहीं लगाती, ठीक उसी प्रकार पिता भी अस्पृश्य समझा जाता है।

० **आस्ट्रेलिया** में '**सांटाकुंज टुकोपिया**' नामक एक बहुत छोटा स्थान है, इसलिए वहां प्रथम दो लड़कों को छोड़कर शेष सब लड़के मार डाले जाते हैं। इसका कारण वहां के निवासी यह बतलाते हैं कि वहां अधिक मनुष्यों को रहने के लिए स्थान नहीं है। लड़कियां जीवित रहने दी जाती हैं। अतएव वहां पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या तिगुनी है। **वेक्स द्वीप** में भी लड़के मार डाले जाते हैं और लड़कियां जीवित रहने दी जाती हैं, क्योंकि वहां वंश लड़कियों के नाम पर चलता है।

—देश-विदेश की अनोखी प्रथाएं (पुस्तक से)

२८

पुनर्जन्म की वास्तविकता

१ **अमेरिका** के **वर्जिनिया** विश्वविद्यालय में **डॉ० ईयान स्टीवेनसन** ने घोषणा की कि पुनर्जन्म एक वास्तविकता है। उन्होंने विश्वभर के लगभग सभी देशों में पूर्वजन्म-स्मरण की १२०० घटनाओं के शोधकार्य के आधार पर अपना उक्त अभिमत व्यक्त किया। डॉ. स्टीवेनसन ने बताया कि लगभग पिछले बारह वर्षों से वे सतत इस गवेषणा-कार्य में लगे हुए हैं। पूर्वजन्म की स्मृति की घटनाएं भारत के अतिरिक्त अन्य देशों, जैसे—लंका, वर्मा, थाइलैंड, तुर्की, लेबनान आदि में तथा युरोप और अमेरिका में भी घटित हुई हैं। इनमें से अधिकांश घटनाओं की जांच की गयी तथा पूर्वजन्म स्मरण करनेवाले व्यक्तियों ने (जिनमें अधिकांशत: छोटे बच्चे होते हैं), जिन बातों की जानकारी दी, वे सही पाई गयी हैं।

—**नवभारतटाइम्स**, **२४ अक्टूबर १९७२**

२ **प्रकाशचन्द्र**—

१४ जुलाई १९६६ के दिन मथुरा से पच्चीस मील दूर **कोसी** नामक गाँव में छाताग्रामनिवासी **व्रजलाल वार्ष्णेय** अपने दस वर्ष के पुत्र **प्रकाशचन्द्र** (जो पूर्व जन्म मे यहाँ के **भोलानाथजैन** का पुत्र **निर्मलकुमार** था) को लेकर आए। दस हजार की जनता उसे देखने इकट्ठी हुई। बच्चे ने अपनी दुमंजली दुकान पहचान ली, किन्तु भावीवश भोलानाथ उस दिन दिल्ली गए हुए थे। आने के बाद पता पाकर वे अपनी बड़ी पुत्री **तारा** को लेकर अपने पूर्वजन्म के पुत्र निर्मल से मिलने गये। प्रकाशचन्द्र पिता और बहन को पहचान कर रोने लगा। साथ-साथ

भोलानाथ और तारा की भी आंखें डबडबा गई। आग्रह करने पर ब्रजलाल प्रकाश को लेकर फिर **कोसी** गए। पूर्वजन्म के पिता ने पुत्र मांगा, लेकिन ब्रजलाल ने देने से इन्कार कर दिया। आखिर बच्चे को अच्छी तरह पढ़ाने का आग्रह करके बिदाई दी। बच्चे ने पांच वर्ष की उम्र से ही कोसी-कोसी की रटना लगा रखी थी। वह कहा करता था—यहाँ मूंज के माचे हैं, मेरे कोसी के घर में निवार के पलंग हैं। बच्चा चेचक की बीमारी से मरा था।

—नवभारतटाइम्स, २३ जुलाई १९६१

३ **स्वर्णलता—**

छतरपुर (जबलपुर) के श्री एम० एल० मिश्रा की द्वादशवर्षीय पुत्री **स्वर्णलता** पिछले दो जन्मों की बातें बताती है। वह **असमीभाषा** में गीत गाती है एवं नृत्य करती है जबकि वह कभी **असम** नहीं गई। **सेठ गोविन्ददास** मध्यप्रदेश के मुख्य मन्त्री तथा उच्च अधिकारियों ने उक्त बालिका से काफी बात-चीत की एवं आश्चर्य का अनुभव किया।

—हिन्दुस्तान, ६ मई १९६२

४ **गोपाल अग्रवाल—**

गोपाल—आसफअली रोड, दिल्ली स्थित एक पैट्रोल पम्प के मैनेजर का पुत्र है तथा अपने पिता के लिए ढाई वर्ष की आयु से ही एक समस्या बना हुआ है। गत रविवार को उसके पिता उसकी बातों से तंग आकर गोपाल को **मथुरा** ले गये। ढाई वर्ष की आयु से ही वह कहने लगा था कि मैं पहले जन्म में मथुरा में था। वहाँ मेरी एक फैक्टरी भी है। मथुरा जाकर गोपाल एक मकान के सामने खड़ा हो गया और बोला यही मेरा घर है। फिर वह फैक्टरी गया और बोला कि यहीं मेरे छोटे भाई ने गोली मारकर मेरी हत्या की थी, तब मेरी आयु ३५ वर्ष की थी।

गोपाल के पिता ने नवभारतटाइम्स के प्रतिनिधि को भेंट के दौरान बताया कि जब यह ढाई साल का था तब एक दिन अचानक बोला—मैं मथुरा के एक मालदार घर का हूं। वहाँ मेरे पिता अभी तक हैं।

बच्चे की बात को पिता ने पहले अनसुना कर दिया पर वह बार-बार दोहराता रहा—मेरा नाम **शक्तिप्रसाद** है, सन् १६४८ में मेरे भाई ने सम्पत्ति के झगड़े के कारण मेरी हत्या कर दी थी। गोपाल जब शक्तिप्रसाद की विधवा के सामने पहुँचा, तो उसे पहचान तो लिया पर उससे बात करने को राजी न हुआ और बोला—यह रुपये के लिए मुझसे झगड़ती रहती थी। एक दिन मैंने इससे पाँच हजार रुपये माँगे पर इसने न दिये और कहा कि फैक्टरी से जाकर ले आओ। उसी दिन फैक्ट्री में मुझे गोली मार दी गयी।

—नवभारतटाइम्स, २६ मार्च १६६५

●

२६ गर्भ

१ गर्भ में जीव की उत्पत्ति—

स्त्री की नाभि के नीचे फूल की नाल के समान दो नाड़ियाँ हैं। उनके नीचे-नीचेमुखवाली फूल के डोंडे-तुल्य योनि होती है। उसके नीचे आम की मंजरियों के समान मांस-मंजरियां होती हैं, जो ऋतुकाल में फूटती हैं और उसमें से लोही की बूदों में से जितनी भी बूंदें पुरुष-वीर्य से मिश्रित होकर कोशाकार योनि में गिरती हैं, वे जीवों की उत्पत्ति के योग्य बन जाती हैं।

—तन्दुलवैचारिक-प्रकीर्णक के आधार से

२ गर्भस्थित जीव का भोजन—

गर्भ के नाभि स्थान पर कमलनाल के समान दो नाड़ियां होती हैं, जो माता के शरीर से सम्बद्ध होती हैं। उन नाड़ियों के द्वारा गर्भस्थित जीव माता के खाये हुए रस विकारों के साथ उसके खून को खींचता है एवं उससे वृद्धि को प्राप्त होता है। गर्भस्थ जीव के मल-मूत्र आदि नहीं होते। वह जो भी आहार करता है, उसे कान, आँख आदि शरीर के अंगों के रूप में परिणत कर लेता है। **—भगवती १।७ गर्भाधिकार**

३ गर्भ-गत जीव बाहर की बातें भी सुन सकता है—

(क) गर्भ में रहकर कई जीव तो सन्तों का उपदेश सुनकर धर्म-रंग में रंगे जाकर स्वर्गगामी बन जाते हैं तथा वैक्रियलब्धिवाले कई जीव लड़ाई की बातें सुनकर गर्भ में रहते हुए लब्धि द्वारा सेना बनाकर शत्रुओं से संग्राम भी करने लग जाते हैं और दुर्भावनाओं से मरकर नरकों में चले जाते है।

—भगवती १।७ गर्भाधिकार

(ख) गर्भस्थित **अभिमन्यु** ने **अर्जुन** से सुनकर चक्रव्यूह-भेदन की विद्या पढ़ी। —**महाभारत**

(ग) गर्भ स्थित **अष्टावक्र ऋषि** ने अपने पिता **कोहल ऋषि** के मुख से **वेदमन्त्रों** का अशुद्ध उच्चारण सुनकर उन्हें टोक दिया। क्रुद्ध पिता ने **शाप** देकर पुत्र को अष्टावक्र बना दिया। (अष्टावक्र के शरीर के आठ स्थान टेढ़े-मेढ़ थे)। —**महाभारत**

४ **प्राणियों की गर्भस्थिति—(लगभग)**

प्राणी	गर्भस्थिति	प्राणी	गर्भस्थिति
१ मनुष्य	सवा नौ मास लगभग	११ बकरी	५ महीने
२ ऊँट	११-१२-१३ महीने	१२ बिल्ली	८ सप्ताह
३ कुत्ता	९ सप्ताह	१३ भेड़	५ महीने
४ खरगोश	१ महीना	१४ भेड़िया	६२ दिन
५ गधा	१२ महीना	१५ रीछ	६ महीने
६ गाय	९-१० महीने	१६ शेर	१०८ दिन
७ भैंस	१० महीना १० दिन	१७ सूअर	१६ सप्ताह
८ घोड़ा	११ महीना	१८ सियार	६२ दिन
९ जिराफ	१४ महीने	१९ हाथी	२१ महीने
१० बन्दर	७ महीने	२० हरिण	८ महीने

—**कमल-नाहटा के संग्रह से**

५ **गर्भ का पता लगानेवाली ट्यूब—**

एक भारतीय हारमोन औषधि निर्मात्री फर्म ने एक ऐसी परीक्षण-ट्यूब तैयार की है, जिसके द्वारा महिलाओं के गर्भधारण के एक सप्ताह बाद गर्भ का पता लगाया जा सकता है।

उस ट्यूब में महिला अपने मूत्र की कुछ बूँदें पानी में मिलाकर उसे डेढ़-दो घंटे के लिए छोड़ दे, तो कांच की नली के तले में बननेवाले एक पीले छल्ले से गर्भ की पुष्टि हो जाती है।

—**हिन्दुस्तान, १५ सितम्बर १९७२**

सोलह संस्कार

हिन्दुधर्म में गर्भाधान से मृत्यु तक निम्नलिखित सोलह संस्कार, माने गये हैं—

१ **गर्भाधान**—ऋतुदान से पहले औषधिसेवन।

२ **पुंसवन**—गर्भधारण के बाद ब्रह्मचर्य-पालन।

३ **सीमन्तोपनयन**—छठे महीने गर्भिणी की प्रसन्नता का उपाय।

४ **जातकर्म**—जन्म के बाद होम आदि करना।

५ **नामकरण**—नाम की स्थापना करना।

६ **निष्क्रमण**—चौथे महीने बालक को सूर्य-चन्द्र के दर्शन करवाना, बाहर निकालना।

७ **अन्नप्राशन**—आठ मास के बाद अन्न खिलाना।

८ **चूड़ाकर्म**—मुण्डन (झडूला उतारना)।

९ **यज्ञोपवीत**—ब्राह्मण को ८ वें वर्ष, क्षत्रिय को ११ वें वर्ष और वैश्य को १२ वें वर्ष जनेऊ धारण करना।

१० **वेदारम्भ**—वेद पढ़ना शुरू करना।

११ **समावर्तन**—पढ़ने के बाद स्नातक-पद लेना।

१२ **विवाह**—अग्नि की साक्षी से स्त्री-पुरुष का पत्नी-पति के रूप में परिणत होना।

१३ **गार्हपत्य**—गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना।

१४ **वानप्रस्थ**—पचास वर्ष की आयु के बाद वन में जाकर रहने लग जाना।

१५ **सन्यास**—सन्यासी बन जाना।

१६ **अन्त्येष्ठि**—मृत्यु के बाद किया जानेवाला क्रियाकांड।

—मनुस्मृति के आधार पर

३१ बालक

१ चाइल्ड इज दी फादर ऑफ मैन ।

—वर्डस वर्थ

बालक आदमी का बाप है ।

२ एक बुद्धिमान पुत्र प्रसन्न-पिता बनता है ।

—बाइबिल

३ जंगली बछेड़े ही सुन्दर घोड़े बनते हैं ।

—प्लटार्च

४ खेतों में पड़ा कपास और अनाज ओढ़ने एवं खाने के काम नहीं आता। संस्कारित होने पर ही कपड़ा तथा रोटी बनकर उपयोगी होता है, उसी प्रकार बच्चे भी संस्कारित होकर आदर्श बनते हैं ।

५ आज तुम जिस जगह खड़े हो, अन्त में सफलता पानेवाले भी वहीं खड़े हैं । तीस साल बाद तुम विचार कर देखना कि उस समय जो देश के प्रभावशाली वक्ता, कवि, राष्ट्र व धर्म के उद्धारक होंगे; वे इस समय तुम्हारे ही बराबर खड़े हैं ।

—टाल्पेज

६ वृष्टि होने के बाद बच्चे मिट्टी के घर बनाते हैं एवं उनके लिए लड़ने भी लगते हैं । लोग उन्हें मूर्ख कहते हैं, किन्तु इतना नहीं सोचते की हम भी तो मिट्टी के घरों के लिए सिर फोड़ रहे हैं ।

—धनमुनि

७ मिट्टी का खिलौना फूटते ही बच्चा रोने लगता है, उसे देखकर लोग हंसते हैं, किन्तु हंसनेवाले भी तो बच्चे ही हैं।

८ **बालक की उक्ति—**

अंत में माता-पिता के खेल का सामान हूं मैं।
जो विचारें सो बनालें ! देव हूं, शैतान हूँ मैं ॥

९ मानव मस्तिष्क का विकास शिशु के पालने से प्रारम्भ होता है।

—टी. कोगन

१० वीर नेपोलियन से किसी ने पूछा—आपने यह वीरता कहां से सीखी ? उत्तर मिला—माता के दूध के साथ मिली हुई है।

११ आज बालक में मां-बाप का क्या रहा ? कहा भी है—

तिफ्लू में बू आए क्या, मां-बाप के इतवार की।
दूध तो डिब्बों का है, तालीम है सरकार की ॥

—उर्दू शेर

१२ शुद्धोऽसि, बुद्धोऽसि, निरञ्जनोऽसि,
संसार—माया — परिवर्जितोऽसि।

मदालसा महासती पुत्र को लोरी देते समय कहा करती थी—हे पुत्र ! तू शुद्ध है, बुद्ध है, निरञ्जन है और संसार की माया से रहित है।

३२ बालकों के गुण और दोष

१ बालकों में स्वाभाविक छः गुण और तीन दोष होते हैं।

छः गुण—१—कोमलता, २—विनोदप्रियता, ३—अनुकरणप्रियता, ४—चञ्चलता, ५—स्वतन्त्रता, ६—जिज्ञासा वृत्ति।

तीन दोष—१—रोना, २—लड़ना, ३—दूसरों की शिकायत करना।

२ विश्वास और निर्दोषता शिशु के अतिरिक्त किसी में नहीं पाये जाते।

—दाँते

३ आदर्श बालक के विशेष गुण—

१—वह शान्त-स्वभावी होता है, २—उत्साही होता है, ३—सत्यनिष्ठ होता है, ४—धैर्यशील होता है, ५—सहनशील होता है, ६—अध्यवसायी (अपने उद्यम को कभी नहीं छोड़नेवाला) होता है, ७—समचित्त होता है, ८—साहसी होता है, ९—आनन्दी होता है, १०—विनयी होता है, ११—उदार होता है, १२—ईमानदार और आज्ञाकारी होता है।

—कल्याण—बालकअंक, पृष्ठ २०

४ जगत्प्रसिद्ध आदर्श-बालक—

भक्त बालकों में—ध्रुव, प्रह्लाद, शुकदेव, मीराबाई, आदि।

गुरुभक्तों में—अर्जुन, एकलव्य आदि।

मातृ-पितृ भक्तों में—गणेशजी, राम, भीष्म, श्रवणकुमार आदि।

वीरों में—लव-कुश, अभिमन्यु, वीरबादल, आल्हा-ऊदल, पृथ्वीसिंह, राणाप्रताप, दुर्गादास राठौड़ आदि।

ईमानदारों में—वीरेश्वर मुखोपाध्याय, गोपालकृष्ण गोखले आदि ।

सत्यवादियों में—सुकरात, नेपोलियन आदि ।

धर्म पर बलिदान होनेवालों में—गुरुगोविन्दसिंह के पुत्र, मुरलीमनोहर, हकीकतराय आदि ।

मेधावियों में—रोहक, बीरबल, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ।

चतुरबालिका—बायोला, राजेलिया, ओलरिच आदि ।

नेताओं में—राममोहनराय, तिलक, गांधी, अरविंद, टैगोर, सुभाषचन्द्र आदि ।

इन सबका बचपन अपने-अपने क्षेत्र में अत्यद्भुत था । इनके चरित्र 'कल्याण बालकअंक' से पढ़ने योग्य है ।

३३ बालकों के निर्माण की कुछ विधियां

१ अच्छे बच्चों के निर्माण का सर्वश्रेष्ठ उपाय है, उन्हें प्रसन्न रखना।

—बाइल्ड

२ शिशुओं को वही शिक्षा दो, जिन पर उन्हें चलना चाहिए।

—बाइबिल

३ जो-जो बातें बच्चों को सिखानी है, उनमें माता-पिता एवं शिक्षकों को भी सावधान रहना चाहिए। जैसे—बच्चों के सामने—

(क) गाली-गलौज नहीं बकनी चाहिए।

(ख) किसी से भी अधिक हंसी-मजाक नहीं करनी चाहिए और न अश्लील बातें ही करनी चाहिए।

(ग) किसी को भी डांटना-डपटना अथवा किसी से दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए।

(घ) नशीली वस्तु आदि का सेवन नहीं करना चाहिए।

(ङ) अपनी स्त्री आदि के साथ अनुचित ढंग से व्यवहार एवं वार्तालाप न करना चाहिए।

—'कल्याण' बालकअंक, पृष्ठ २३०

४ अभिभावक को विशेष ध्यान देने योग्य कई बातें!

(क) भारतीय संस्कृति में बच्चों के सुन्दर और प्यारे नाम रखने की प्रथा है, इस प्रथा को न बिगाड़ो।

(ख) बच्चों को ऐसी आदत डालो कि वे सोकर रोते हुए न उठें, हंसते हुए उठें!

(ग) बच्चों के अन्दर भय पैदा करना, उनको नीचा दिखलाना, अपमानित करना या मारना बुरा है।

(घ) बच्चों को ऐसी कहानियां सुनाओ, जिनसे उनमें उत्साह और देशाभिमान पैदा हो, उनकी हिम्मत बढ़े; उनके हृदय में धर्म का भाव पैदा हो !

(ङ) बच्चों को 'तू' मत कहो, 'तुम' कहो ! 'आप' कहना तो और भी अच्छा है, इससे उनको भी आप कहने की आदत बचपन में ही पड़ जाएगी।

(च) कोई छोटा बच्चा कुछ कहना चाहे तो उसकी बात पहले सुन लो, पर यदि वह किसी की शिकायत करे, तो सहसा उस पर कोई कार्रवाई न करो !

(छ) बच्चों को पहले भोजन दो ! सबसे छोटे बच्चे से शुरू करो।

(ज) बच्चों को निश्चत समय पर खाना दो ! हर वक्त खाने की आदत बुरी हैं ! निश्चित समय पर ही शौच, स्नान आदि की भी उनमें आदत डालो।

(झ) भूत-प्रेत की या दूसरी डरानेवाली कहानियां बच्चों को मत सुनाओ ! उन्हें अंधेरे में जाने से मत डराओ !

(ञ) बच्चों को नंगा मत रखो, कम से कम जांघिया या लँगोट पहनाए रखो।

(ट) जितनी जल्दी हो सके, बच्चों को अपने आप चलने, खाने और अलग सोने की आदत डालो। उनका बिछौना बहुत नरम नहीं होना चाहिए।

(ठ) बच्चों से कोई चीज टूट-फूट जाये तो उनको मारो मत, उनको समझा दो, जिससे वे भविष्य में वैसी असावधानी न करें। अच्छा तो यह होगा कि ऐसी चीजें वहाँ रक्खो जहां उनका हाथ न जाय।

—**'कल्याण' बालकअंक, पृ० २३६**

५ गलती करने पर बच्चों को धमकाओ मत, अन्यथा वे झूठ बोलना सीख जायेंगे।

५ कहीं-कहीं धमकाना भी आवश्यक है। कहा भी है—

पीयूषमपिबतो बालस्य किं न क्रियते कपोलहननम्।

—नीतिवाक्यामृत १०।१५

दूध न पीने पर क्या बालक के थप्पड़ नहीं मारा जाता!

६ रोते बच्चे को भय दिखाकर चुप रखना भी उसके लिये हानिकारक है।

० मेम और साहब छोटे बच्चे को नौकर के पास छोड़कर कार्यवश गांव गए। पीछे से बच्चा रोने लगा। नौकर ने अन्धेरे कोठे में उसे **हाउ** कहकर डरा दिया। भयभीत बच्चा रातभर चुपचाप पड़ा रहा। दूसरे दिन मेम-साहब आए। बच्चे को गुमशुम देखकर कारण पूछा? नौकर ने सच्चा हाल कहा। साहब ने उसका भय निकालने के लिये अन्धेरे कोठे में काले कागज का राक्षसाकार एक **हाउ** बनाया। फिर बच्चे के सामने उसे पिस्तौल से मार कर उसका बहम निकाला।

७ भारतवर्ष में अधिकांश माताएँ बच्चों को डरा-धमका कर चुप रखने की कोशिश करती हैं। जैसे—राजस्थान में कई माताएँ कहती हैं—बाबा! ई नन्हियै रा कान काट लै रे! ईनैं पकड़ लै रे! आदि-आदि।

८ अपने बालक को चुप रहना सिखाइये! वह जल्दी ही बोलना सीख जायेगा।

—फ्रैंकलिन

३४ जन्म-मृत्यु एवं बाल-मृत्यु

कतिपय देशों की जन्म-मृत्यु एवं बाल-मृत्यु की तालिका (प्रति सहस्त्र)

देश का नाम	वर्ष	जन्म दर	मृत्यु दर	बाल-मृत्यु दर
भारत	१९६०-६४	३८·४०	१२·९०	१३९ (१९५१-६१)
पाकिस्तान	१९६३	४३·३०	१५·४०	१४५·६०
जापान	१९६६	१३·७०	६·८०	१८·५०
ब्रिटेन	१९६६	१७·९०	११·८०	१९-६०
आयरलैंड	१९६६	२१·६०	१२·१०	२४·९०
नार्वे	१९६५	१७·५०	९·१०	१६·४० (१९६४)
स्वीडेन	१९६६	१५·८०	१०·००	१३·३० (१९६५)
डेन्मार्क	१९६६	१८·४०	१०·३०	१८·७० (१९६५)
फ्रान्स	१९६६	१७·५०	१०·७०	२१·७०
स्वीट्जरलैंड	१९६६	१८·१०	९·३०	१७·८० (१९६५)
रूस	१९६६	१८·२०	७·३०	२६·५०
चेकोस्लावाकिया	१९६६	१५·६०	१०·००	२३·७०
अमेरिका	१९६६	१८·५०	९·५०	२३·४०
कनाडा	१९६६	१९·७०	७·५०	२३·६० (१९६५)
आस्ट्रेलिया	१९६६	१९·३०	९·००	१८·२०
न्यूजीलैंड	१९६६	२२·५०	८·९०	१७·७०

—यू० एन० डेमोग्राफिक इयरबुक, १९६६

३ बाल-मृत्यु के प्रधान कारण—

(१) बाल विवाह ।
(२) बहुत छोटी अवस्था में गर्भाधान ।
(३) प्रसव की दूषित रीति ।
(४) प्रसूतिगृहों के दोष ।
(५) माता-पिता के असंयमपूर्ण जीवन ।
(६) माता-पिता में गर्भाधान तथा बाल-पोषण के ज्ञान का अभाव ।
(७) दरिद्रता ।
(८) शुद्ध खाद्य-द्रव्य का अभाव ।
(९) गोदुग्ध का अभाव ।

—**'कल्याण'-बालकअंक पृष्ठ ४२३**

३५ बालकों को बिगाड़ने एवं सुधारनेवाले अभिभावक

१ **गुड़-मूंगफली**—सीतापुर (सौराष्ट्र) में एक बार हम सरकारी गेस्ट हाउस में ठहरे हुए थे। संध्या-प्रतिक्रमण के बाद मैं जाप-ध्यान कर रहा था। एक बूढ़ा वहां आकर एक तरफ बैठ गया और गुड़-मूंगफली खाने लगा। संतों ने कारण पूछा तो उसने कहा—क्या करूं घर ले जाऊं तो बच्चे मुझे खाने ही न दें, अतः जब भी खाने का मन होता है, चुपके से यहाँ बैठकर खा लेता हूं। सुनकर विचार हुआ कि ऐसे बूढ़े ही बालकों की आदत को बिगाड़ते हैं। इन्हें देखकर बच्चे भी चोरी से खाना-पीना सीख जाएंगे।

—**धनमुनि**

२ **दो पतासे**—छुट्टी के दिन बच्चा बाजार में घूम रहा था। एक दूकान में गल्ले के पास कुछ पैसे पड़े थे। दुकानदार सो रहा था। बालक ने एक पैसा चुराया और घर आकर माता के सामने सारी बात कही। माता ने खुश होकर उसे दो पतासे दिए। बस, उसी दिन से बच्चा चोरी में प्रवृत्त हो गया और आगे जाकर एक बड़ा चोर बन गया। कोतवाल के प्रयत्न से पकड़े जाने पर राजा ने उसे फांसी पर लटकाने का हुक्म दे दिया। पता पाकर माता ज्योंही आकर उससे मिलने लगी, पापी ने माता की नाक (दांतों से) काट खायी। राजा के पूछने पर पर चोर ने कहा—मुझे

चोर बनानेवाली—यह मेरी माता ही है। अगर उस दिन दो पतासे न देकर दो थप्पड़ लगा देती, तो आज मेरी यह दुर्दशा क्यों होती ?

—**व्याख्यानरत्नमंजूषा के आधार पर**

३ **बालक का सुधार बचपन में ही संभव** –

पाकी हांडी कानडा, चढ़ै न शोभा थाय।
काचा रूंखनैं केवट्यां, मोड़ै ज्यूं मुड़ जाय॥

० सेठानी पति के साथ हर रोज झगड़ा किया करती थी। उसकी पुत्री **सुन्दरबाई** भी उसी तरह झगड़ालू बन गई। लोग उसे लेने से इन्कार होने लगे। आखिर एक दूरदेशवर्ती विधुर सेठ से उसकी शादी की गई ! बरात विदा हुई। वर-वधू एक बैलगाड़ी में बैठे थे और उनके आगे दहेज में प्राप्त वर्तनों की गाड़ी चल रही थी। ताल की जमीन आने पर वर्तन खड़बड़ाने लगे। सेठ ने लाठी से उन्हें फड़ा-फड़ फोड़ डाले। लोगों ने रोका तब बोला—ये तो बर्तन हैं, खड़-बड़ाट करेगी तो मैं सेठानी का भी सिर फोड़ डालूंगा। सुन्दरबाई समझ गई और उसने अपनी आदत वदल डाली।

एक बार पिता पुत्री से मिलने के लिए गया। पुत्री ने काठे दाल-चावल वनाए। थाली में परोसकर पति के सामने देखने लगी। पति ने बायीं आँख दिखाई—इसका मतलब था—तेल डालना, पिता की थाली में तेल परोसना अशक्य था, अतः धीरे से बोली—बाबे से भी बायीं। पति ने दाईं आँख दिखलाई और सुन्दरबाई ने घी परोस दिया। पिता अचंभित होकर दामाद से कहने लगा कि आपने सुन्दर को तो आंखों से समझा लिया, लेकिन इसकी माता का सुधार कर दो, तो मैं भी निहाल हो जाऊं। दामाद ने फूटी हांडी देकर कहा—इसके कान लगवा लाइये। सेठ कुम्हारों के यहाँ काफी भटका लेकिन उसके कान नहीं लग सके। दामाद ने समझाते हुए कहा—सुन्दर की माता पक्की हांडी हो गई, अब उसका सुधार नहीं हो सकता।

४ सुसंस्कारी मनोहर—

मढार (गुजरात) निवासी **बापूभाई अहमदाबाद** में रहते हैं। उन्होंने अपने पुत्र **मनोहर** को यह शिक्षा दी कि बेटा ! कभी चोरी मत करना और झूठ मत बोलना। फिर उन्होंने रुपयों-पैसों की पेटी बिना ताले के रखनी शुरू कर दी। फलस्वरूप मनोहर इतना सुसंस्कारी बन गया कि कई बार पैसों के लिए घंटों रो लेता, लेकिन पेटी में से पैसा निकालना उसके लिए हराम था।

सत्यवादी भी इतना बना कि एक बार इन्सपेक्टर आनेवाला था। मास्टर ने बच्चों से कहा—देखो ! मेरे लिए इन्सपेक्टर पूछे, तो इतनी संख्या से अधिक ट्यूशन मत बतलाना। (अक्सर अध्यापक लोग नियम से ज्यादा ट्यूशन करते हैं।) मनोहर ने कहा—मास्टर जी ! पिताजी ने मना किया है, अतः मैं तो झूठ नहीं बोलूंगा। आप हमेशा निर्दिष्ट संख्या से अधिक ट्यूशन करते हैं। मास्टर घबरा कर आया और बाबूभाई से कहने लगा कि मैं तो आज से मनोहर को नहीं पढ़ाऊंगा। क्योंकि यह सच बोलकर मुझे नौकरी से बरखास्त करवा देगा। बाबू भाई अपने पुत्र की सच्चाई पर प्रसन्न हुये।

—धनमुनि

३६ बालकों की सरलता

१ दाऊ शैल्ट एन्टर दी किंगडम ऑफ गॉड ऐज चिल्ड्रन। ईसामसीह कहा करते थे कि जो इस बच्चे की तरह सरल होगा, वही ईश्वरीय-राज्य में जाएगा।

२ ध्रुव, प्रह्लाद, निचिकेता, शुकदेव एवं सनकादि बालकों के जीवन पढ़ने से पता चलता है कि बालक कितने निर्लेप एवं सरल होते हैं।

३ **कतिपय उदाहरण—**

(क) पिता ने कहा—बेटा झूठ मत बोला करो! पुत्र ने पूछा—झूठ क्या होता है?

(ख) पुत्र ने पूछा—मां! कृष्ण कैसे होते हैं?
माता ने कहा—काले! पुत्र चौंककर बोला, तब फिर तू हरे कृष्ण-हरे कृष्ण! क्यों करती है?

(ग) माता ने कहा—बेटा! दो पैसों की धूप ले आ। पुत्र—पैसे क्यों खर्च रही हो, धूप तो अपने आप आ जायेगी।

(घ) कई आदमी सेठ से मिलने आए बच्चे ने दौड़कर खबर दी। सेठ ने कहा—जा कह दे, सेठ जी यहाँ नहीं हैं। सरल बालक ने बाहर आकर कहा—भाई! सेठजी ने कहा है—जा कह दे! वे यहाँ नहीं हैं।

(ङ) भोले बालक की कथा भी सरलता की अद्‌भुत शिक्षा देनेवाली है। जैसे—दिवाली के त्योंहार पर गली में बच्चों को मिठाई आदि खाते देख-

कर बालक ने माता से मिठाई माँगी। माँ ने कहा—बेटा, तेरे मौसाजी गुजरे हुए हैं अतः अपने घर कढ़ाई नहीं चढ़ सकती। बच्चे ने हठ किया, अतः माता ने कुछ बना दिया और उसे खिलाते हुए कहा—देख बेटा! **रांड हुई तो मौसी हुई ले तू तो तेरा खाले,** लेकिन मौसी से यह बात मत कह देना। बच्चा खा-पीकर मौसी के घर पहुंचा। मौसी ने पूछा—बेटा! तूने क्या खाया? बच्चा बोला, मैंने सकरपारे-खजलियाँ आदि कई चीजें खायी थीं, लेकिन मेरी माँ ने बताने की मनाई की है अतः मैं नहीं बताता। यों कहते हुए सारी बात कह दी।

(च) छोटा-सा राजकुमार (जिसकी माता सख्त बीमार थी) खेलता-खेलता विमाता के महल में जा पहुंचा। विमाता उसे छुरी से मारने लगी। सरल बालक ने कहा—मां! **तू हमाले घर च्यूं नहीं आती?** छुरी गिर गई एवं विमाता ने उसे हृदय से लगा लिया। फिर जीवन भर उससे पुत्र जैसा व्यवहार रखा।

(ज) पंचवर्षीया बालिका ने रोते हुए पुलिसवालों से कहा—मेरे पिताजी नोट छापते हैं, किन्तु मुझे नए कपड़े नहीं बनवा देते। आप उनसे कह-सुन-कर मेरे लिए कपड़े बनवा दीजिए। पुलिसवालों ने छापा मारकर जाली नोट बनानेवाले (उस बाप) को गिरफ्तार कर लिया।

—**(काहिरा) नवभारतटाइम्स**, ६ अप्रेल १९६६

४ **बालक का पोस्टकार्ड—**

मां-बेटे को दूध पिलाया करता थी। चीनी पूरी हो गई। घर में गरीबी थी। बेटे ने कहा माँ! फीका दूध अच्छा नहीं लगता माँ बोली—बेटा! चीनी तो भगवान भेजेंगे तभी आएगी? बेटे ने पूछा—मां भगवान कहाँ रहते हैं? माता ने कहा—बैकुंठ में! बच्चे ने एक कार्ड लिखा—भगवान मैं आपका बच्चा हूं मेरे से फीका दूध नहीं पिया जाता, अतः जल्दी से जल्दी चीनी भेजने की कृपा करें। ज्यों

ही बच्चा कार्ड को लेटर-बॉक्स में डालने गया,वह ऊंचा था अतः बच्चे के हाथ न पहुंचे। वह उछल-उछल कर डालने का प्रयत्न कर रहा था। इतने में एक सेठ आया और बोला—ला बेटा ! मैं डाल दूँ तेरा कार्ड ! बच्चे ने कार्ड दे दिया। सेठ ने पढ़कर उसे लेटर-बॉक्स में डाल दिया और उसी वक्त उसके घर पाँच सेर चीनी भेज दी। बच्चा खेलता-कूदता घर पहुंचा। माता ने कहा—बेटा ! ले मीठा दूध पीले ! तेरे लिए भगवान ने चीनी भेज दी है।

३७ बालकों की उच्छृंखलता

१ कस्य नोच्छृङ्खलं बाल्यं, गुरुशासनवर्जितम् ।

—**कथासरित्सागर**

गुरु के नियन्त्रण से शून्य किसका बचपन उच्छृंखल नहीं होता ।

२ कहदो चाहे सहज में, बच्चों को कोई बात ।
उत्तर देंगे तड़क के, लड्डू-सा साक्षात ।।
बच्चों को होता अगर, बचपन का कुछ भान ।
तो माँ-बापों का कभी, नहीं करते अपमान ।।

—**दोहा-संदोह**

३ **बाल-अपराध**—

भारत के अन्दर १९५८ में बाल-अपराध २९७७४, सन् १९५९ में ४७९२५, सन् १९६२ में ५३८०३ हुए ।

—**हिन्दुस्तान, ३० सितम्बर १९६३**

४ **अमरीका के बच्चों की विचित्र स्थिति**—

शपथ-ग्रहण के एक विशेष अवसर पर **राष्ट्रपति जानसन** ने अमरीकी बच्चों के अंधकारमय भविष्य के आँकड़े प्रस्तुत करते हुए कहा—"अमरीका के कुल बच्चों के दस प्रतिशत को १८ वर्ष की अवस्था तक पहुंचने के पूर्व ही बाल अपराध-न्यायालय में जाना पड़ जाता है ।"

लगभग दस लाख बच्चों को हरसाल अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देनी पड़ती है । पाँच लाख बच्चे मस्तिष्क की अवसन्नता से पीड़ित हैं और लगभग पाँच लाख ही मृगी के शिकार हैं ।

—**हिन्दुस्तान, २४ जून १९६८**

३८ आश्चर्यकारी बालक-बालिकाएँ

१ १० अक्तूबर १९६३, मेरठ-छावनी के सरकारी-अस्पताल में एक बालक पैदा हुआ। उसके ३२ दांत थे एवं वह अंग्रेजी में बोलने भी लगा था।

—**हिन्दुस्तान, १२ अक्टूबर १९६३**

२ **१७ वर्षीय लड़के के फेफड़े से बच्चा :**—(लन्दन १३ अप्रेल, ना०) **फ्रांस** के **जीन जैक्यूज** नामक एक १७ वर्षीय लड़के के दाहिने फेफड़े से सर्जरी की सहायता द्वारा नौ इंच लम्बा एवं तीन पौण्ड १५ औंस वजनवाला एक बच्चा निकाला गया। उसके शरीर में हड्डियाँ, नाल एवं दाँत भी विद्यमान थे। आश्चर्यचकित डॉक्टरों का कहना है कि यह बच्चा जीन-जैक्यूज के जुड़वें भ्रूण का ही एक हिस्सा था, जिसे १७ वर्ष पूर्व उसके साथ ही पैदा हो जाना चाहिये था। छाती में दर्द की शिकायत करने पर उक्त बच्चा निकाला गया। अब वह दर्द ठीक-ठाक है।

—**नवभारतटाइम्स, १५ अप्रेल १९६४**

३ १२ **वर्षीय बालक विली ब्लाउ** (जिसकी क्रुद्धआँखों से आग की लपटें निकलती थीं।) विली ब्लाउ पर किसी भूत का साया समझकर उसके पिता '**हीरम ब्लाउ**' ने उसे घर से निकाल दिया। जहाँ भी वह गया, वहाँ आग जरूर लगी। एक पड़ौसी किसान को उस पर दया आ गई और वह उसे अपने घर ले गया। एवं नजदीक के एक स्कूल में भर्ती करा दिया।

एक दिन विली ने स्कूल में भी अपना करिश्मा दिखा दिया। सबक याद नहीं कर लाने के कारण मास्टरनी ने उसकी लानम-मलामत की। विली ने क्रोध भरी आँखों से मास्टरनी की मेज की तरफ देखा और तुरन्त वहाँ रखे कागज-पत्रों से आग की लपटें निकलने लगीं। यह देखकर मास्टरनी ने उसे निकाल देने की धमकी भी दी। विली ने झुँझला कर कमरे की छत की ओर गौर से देखा और दूसरे ही क्षण वहाँ आग की लपटें उठती दिखाई देने लगीं ; सारे स्कूल में हलचल मच गई। पुलिसवालों ने आकर जाँच-पड़ताल की और उन्होंने विली पर कड़ी निगरानी रखनी शुरू कर-दी। एकदिन विली इस कड़ी निगरानी से उकता गया और उसी दिन शाम को उसकी आँखें आग पर आग लगाने लगीं। आखिर पुलिस ने उसे पकड़कर ईंट की दीवारोंवाली जेल में बन्द कर दिया। टाउनबोर्ड की बैठक के निश्चय के अनुसार विली को शहर से निकाल दिया गया। लेकिन, उसने अपने इस बहिष्कार का बदला लेने का निश्चय किया। लगभग आधी रात के समय एकबार फिर सारे शहर में खलबली मच गई। इस बार तमाम कोशिशों के बावजूद स्कूल की सारी इमारत जल कर राख हो गई। इसके बाद विली का कहीं पता नहीं चला। **न्यूयार्क हेराल्ड** नामक पत्र में १६ अक्टूबर १८८६ को इस विचित्र घटना का विस्तृत वर्णन प्रकाशित हुआ था।

—**विचित्रा-वर्ष ३, अंक ४, १९७१**

४ द्विलिङ्ग शिशु—

दक्षिणी **सालामारा** (असम) के स्वास्थ्य-सेवाकेन्द्र के चिकित्सा-अधिकारी के अनुसार आठ मील दूर स्थित **हमीदाबाद** नामक एक गाँव में एक ऐसे बच्चे का जन्म हुआ है, जिसके स्त्री और पुरुष दोनों की ही जननेन्द्रियाँ हैं, परन्तु दोनों ही पूर्ण नहीं हैं।

उन्होंने बताया कि मैं बच्चे की देखभाल रख रहा हूं। यह सम्भव है कि जब यह बच्चा वयस्क हो जायगा तब कोई भी एक जननेन्द्रिय पूर्णतः

विकसित हो जायेगी और तभी उसका पुरुष अथवा स्त्री होना निश्चित किया जा सकेगा। इसी परिवार में इस प्रकार का यह दूसरा बच्चा जन्मा है। इससे पहले ३० वर्ष पूर्व ऐसा बच्चा हुआ था कि बड़ा होने पर उसका व्यवहार लड़कियों जैसा हुआ। माता-पिता ने अल्पायु में ही उसकी शादी एक पुरुष के साथ करदी, परन्तु उसका निधन शीघ्र ही हो गया। बालिका जब १५ वर्ष की हुई तो उसका स्वभाव बदलने लगा और २० वर्ष की आयु होने पर वह पूर्णतः पुरुष बन गई। अभी दो वर्ष पूर्व ही उसकी शादी एक लड़की से हुई है और अब वह पिता भी बन चुका है।

—नवभारतटाइम्स, २० जनवरी १९६९

५ हैदराबाद के उस्मानिया अस्पताल में एक अजीब केश आया था। एक १४ मास के बालक का पेट गर्भवती स्त्री की तरह फूल रहा था। ऐक्सरे लिया गया और ऑपरेशन करके उस बालक के पेट से ६-७ इंच का एक शिशु निकाला गया। निकालते ही नवजात शिशु मर गया। उसके सभी अंग यथास्थान थे।

—धर्मयुग, २३ फरबरी १९६४

६ रामगढ़—(शेखावटी) में एक दशवर्षीया बालिका के मुँह से रंगीन धागा निकलता है। विस्मित लोग उसे मिठाई आदि खिलाते हैं एवं मुँह से जो धागा निकलता है, उसे ले जाते हैं।

—नवभारतटाइम्स, २२ नवम्बर १९६५

७ धुरी (पंजाब) स्टेशन के पास क्वार्टर में पेटवान के घर वि० सं० २०१२ **जन्माष्टमी** की रात को दो कन्याएं उत्पन्न हुईं। पेट से ऊपर दो थी **एवं नीचे** का भाग एक था अर्थात् पैर दो और हाथ, कान, आँख चार-**चार थे**। लोगों ने उन्हें **चतुर्भुजी-लक्ष्मी** का अवतार माना, चित्र लिये **गए, दिल्ली** तक के यात्री दर्शनार्थ आए। गाड़ी भी क्वार्टर के पास **ठहरने लगी**। लोग रुपये, पैसे-वस्त्र आदि चढ़ाने लगे। वे १३-१४ दिन

जीवित रही। मरने के बाद उनका शव **पटियाला म्यूजियम में रखा गया।** देखिए चित्र—

दो जुडवां लड़कियां

८ **१४ जून, इलाहाबाद—रामसुन्दर** ब्राह्मण की पुत्री जिसकी आयु तीन वर्ष ६ महीने है एवं जो तीन फुट ऊँची है, उसने गर्भ धारण किया है। प्रारम्भ में लड़की के शरीर में असामान्य परिवर्तन हुए।

—हिन्दुस्तान, २१ जून १६६५

६ **इटली** की **रोजेटा प्रस्फेरो** बालिका ऊपर से गिराने पर फुटबॉल की तरह उछलती थी एवं उसके पीड़ा भी नहीं होती थी।

१० **कोकेश** में रहनेवाली १२ वर्ष की एक कन्या के शरीर में चुम्बक का-सा आकर्षण था। वह चलती थी तब थाली, लोटा, शीशी, तस्तरी वगैरह चीजें नाचने लग जाती थीं।

११ **नीग्रो**—सबसे लम्बी नीग्रो-लड़की आठ फिट दो इंच है।

चौथा कोष्ठक

१ यौवन

१ यौवनं जलरेखेव।

—तत्त्वामृत

पानी की लकीर की तरह यौवन देखते-देखते नष्ट हो जाता है।

२ जलदपटलतुल्यं यौवनं वा धनं वा।

—शुभचन्द्राचार्य

यौवन और धन बादलवत् दृष्टविनश्वर हैं।

३ वात्याव्यतिकरोत्क्षिप्त-तूलतुल्यं हि यौवनम्।

—योगशास्त्र

आँधी के झटके से भटकती हुई अर्कतूली की तरह यौवन अस्थिर है।

४ यौवनं त्रिचतुराणि दिनानि।

—उपदेशमाला

यौवन तीन-चार दिन का है।

५ It was a nine days wonder

इट वाज ए नाइन डेज वंडर।

—अंग्रेजी कहावत

चार दिनों की चाँदनी, फिर अन्धेरी रात।

६ यौवनं कुसुमोपमम्।

—गरुड़पुराण

यौवन पुष्प की तरह शीघ्र ही कुम्हला जाता है।

७ जराक्रान्तं हि यौवनम् ।

—शुभचन्द्राचार्य

यौवन बुढ़ापे से घिरा हुआ है ।

८ कानां केसां लोयणां, कर गोडाँ दाँतांह ।
एतां माँह् विखो पड़ै, जोबनियो जातांह ।।

—कालूगणी से श्रुत

९ यौवन एक भूल है, संपूर्ण मनुष्यत्व एक संघर्ष और वार्धक्य एक पश्चात्ताप ।

—डिजराइली

१० जुवानी मां रल्युं ते रात नुं दल्युं ।
० सियाला नी खेड़ ने, जुवानी नो दीकरो,
चौमासा नो खेड़ ने शियाला नी चाकड़ी ।

—गुजराती कहावतें

२ यौवन का अनर्थकारित्व

१ यौवनं धन-संपत्तिः, प्रभुत्वमविवेकिता ।
एकैकमप्यनर्थाय, किमु यत्र चतुष्टयम् ?

—हितोपदेश-कथारम्भ ११

यौवन, धन-संपत्ति, प्रभुत्व-ऐश्वर्य, अविवेकीपन—इनमें प्रत्येक अनर्थकारी है । जहां ये चारों मिल जाएँ, वहां की तो बात ही न पूछिये ?

२ जवानी दीवानी है और बुढ़ापा कुढ़ापा है ।

—हिन्दी कहावत

३ एक जोवन दूजो धन पल्लै, साहिब करै तो सीधो चल्लै ।

—राजस्थानी कहावत

४ **युवक—**

बूढ़ों की हर बात पर, करते युवक मखौल ।
खुलती आँखें किन्तु जब, घटता तन का तोल ।।

—दोहासंदोह

●

३ जरा-वृद्धावस्था

१ जीवा णं भंते ! किं जरा—सोगे ?
गोयमा ! जीवा णं जरावि सोगेवि !
से केणट्ठेणं भंते !
जाव सोगेवि ! जे णं जीवा सारीरं वेयणं वेयंति, तेसि णं जीवाणं जरा। जे णं जीवा माणसं वेयणं वेयंति तेसि णं जीवाणं सोगे।

—भगवती १६।२

भगवन् ! क्या जीवों के जरा एवं शोक हैं।
हाँ गौतम ! हैं।
भगवन् ! किस अपेक्षा से ?
गौतम ! शारीरिक-वेदना की अपेक्षा से जरा है एवं मानसिक-वेदना की अपेक्षा से शोक है।

२ मिनातिश्रियं जरिमा तनूनाम्।

ऋग्वेद १।१७९।१

जरा शरीर की शोभा को बिगाड़ देती है।

३ वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं।

—उत्तराध्ययन १३।२६

हे राजन् ! जरा मनुष्य की सुन्दरता को समाप्त कर देती है।

४ जरा धुतारी धोबणी, धोया देश विदेश।
बिन पाणी बिन साबुणे, धोला कर दिया केश॥

—राजस्थानी दोहा

५. वृद्धावस्था यमराज का नोटिस है—

वैष्णवीमान्यता के अनुसार एकबार यम के दूत एक वकील को धर्मराज के पास ले गये। उन्होंने वकीलजी का हिसाब देखकर कहा—इन्होंने धर्म बिल्कुल नहीं किया, पाप ही पाप किया है, अतः इन्हें नरक में भेज दो! वकीलजी ने दलील दी कि आपने जो बिना नोटिस दिये ही मेरे पर वारंट निकाल कर मुझे गिरफ्तार कर लिया, यह कानून के विरुद्ध है। धर्मराज ने कहा—हमने आपको कई नोटिस दिए हैं। जैसे—सर्वप्रथम आपके केश श्वेत किए, फिर क्रमशः आँखों की ज्योति मंद की, कानों में बहरापन प्रकट किया, दाँत गिराए एवं घुटनों में दर्द पैदा किया, लेकिन आपने हमारे नोटिसों की बिल्कुल परवाह नहीं की।। तब हमें वारंट जारी करना ही पड़ा। अब वकीलजी को क्या बोलना था—चुपचाप नरक की ओर रवाना हो गए।

६ जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं एवं वियाणाहि।

—**उत्तराध्ययन ४।१**

जरा से ग्रस्त हो जाने के बाद कोई शरणभूत नहीं है—ऐसा जानो!

७ जरादण्ड-प्रहारेण, कुब्जो भवति मानवः।
गतं यौवनमाणिक्यं, वीक्षते तत् पदे-पदे॥

जरा के दण्ड-प्रहार से मनुष्य कुबड़ा हो जाता है। वह खोए हुए यौवन-रूपी माणिक को कदम-कदम पर खोज रहा है।

८ अधः पश्यसि किं वृद्ध! पतितं तव किं भुवि?
रे रे मूर्ख! न जानासि, गतं तारुण्यमौक्तिम्॥

—**चाणक्यनीति १७।२०**

अरे वृद्ध! नीचे क्यों देख रहा है, क्या कुछ तेरा गिर गया? बच्चों के पूछने पर बूढ़ा बोला—रे मूर्खों! यौवनरूपी मोती गिर गया है, उसे खोज रहा हूं।

९ वदनं दशनविहीनं, वाचो न परिस्फुटा गता शक्तिः।
अव्यक्तेन्द्रियशक्तिः, पुनरपि बाल्यं कृतं जरया।

मुंह दंतविहीन हो गया, वाणी अस्फुट हो गई, ताकत चली गई व इन्द्रियों का बल प्रकट नहीं रहा, इस प्रकार जरा ने दुबारा बचपन ला दिया।

१० old age is the sccond childhood.
ओल्ड एज इज दि सेकिण्ड चाइल्डहुड ।

—अंग्रेजी कहावत

बुढ़ापा दूसरा बचपन है।

११ अलंकरोति हि जरा, राजामात्य-भिषग् यतीन् ।
विडम्बयति पण्यस्त्री - मल्ल-गायन - सेवकान् ।।

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ ६६

राजा, मंत्री, वैद्य और यती—इन चारों को जरा अलंकृत करती है और वेश्या, मल्ल, गायक और नौकर—इन चारों की विडम्बना करती है।

४ वृद्ध

१ गात्रं संकुचितं गतिर्विगलिता भ्रष्टा च दन्तावलि-
दृष्टिर्नश्यति वर्धते वधिरता वक्त्रं च लालायते ।
वाक्यं नाद्रियते च बान्धवजनो भार्या न शुश्रूषते,
हा ! कष्टं पुरुषस्य जीर्णवयसः पुत्रोऽप्यमित्रायते ।।

—पंचतंत्र २।१८६

गात्र सिकुड़ जाता है, गति स्खलित हो जाती है, दाँत गिर जाते हैं, आँख की ज्योति नष्ट हो जाती है, बहरापन बढ़ जाता है, मुँह से लार गिरने लगती हैं, भाई-बिरादरीवाले आदर नहीं करते, स्त्री सेवा नहीं करती हा ! हा ! वृद्ध हो जाने के बाद बेटा भी दुश्मन बन जाता है ।

२ बूढ़ा नै भावै खीचड़ी रे, मांहीं घी रे सुवास ।
बहुआं घाले घाटड़ी रे, मांहें खाटी छास ।
बुढ़ापो आवियो जीवां ! बांधो धरमरी पाल ।।

—राजस्थानी गीत

३ डोकरी रै कह्यां खीर कुण रांधै ।

—राजस्थानी कहावत

४ अद्यैव कुरु यच्छ्रेयो, वृद्धत्वे किं करिष्यसि ।
स्वगात्राण्यपि भाराय, भवन्ति हि विपर्यये ।

—योगवाशिष्ठ ६, १६२।२०

जो अपने कल्याण का काम है, उसे आज ही करले, वृद्ध होकर क्या करेगा ? वृद्धावस्था में अपने शरीर के अवयव भी भारभूत हो जाते हैं।

५ यही आंगन यही देहरी, यही सुसर को गाम ।
दुलहिन-दुलहिन टेरता, बुढ़िया पड़गयो नाम ।।

—हिन्दी दोहा

६ पुरुष भवे प्रायीक, वर्ष चालीसां मीठो,
कड़ुवो होय पचास,साठ तिहां क्रोध पइट्ठो।
सत्तरां सगो न कोय अस्सियां आस न कांई,
नाह नबे में होय, हंसै सब लोक-लुगाई।
सौ हुवो-सौ हुवो सब कहै, सब तन हो गयो जोजरो।
घर की पतिव्रता यूं कहे, अब मरे तो सुधरे डोकरो ।।

—भाषाश्लोकसागर

७ मरै न मांचो छोड़े।

—राजस्थानी कहावत

८ **वृद्ध और वृद्धत्व का संवाद—**

धरित्र्यामनाकारितः कोऽपि कस्य-
गृहे नैवयातीति वार्ता श्रुताथ।
न तुभ्यं मयादायि हूतिः कथं तद्,
अरे वार्धक्य ! त्वं समायात आशु ? ।।६२।।
शिशुत्वं त्वया हारितं खेलयित्वा,
युवत्वे युवत्या सहाऽभोजि सौख्यम्।
कृतो न त्वया सत्यधर्मः कदापि,
ह्यतो ज्ञापनार्थं समायात आशुः ।।६३।।

—प्रास्ताविक-श्लोकशतक

वृद्ध—सुना है कि बुलाए बिना कोई किसी के समीप नहीं जाता। अरे बुढ़ापा ! मैंने तो तुझे निमन्त्रण नहीं दिया, फिर तू मेरे पास कैसे आ गया ?

बुढ़ापा—तूने बचपन खेल-कूद में खो दिया, जवानी में स्त्री के साथ-भोग करता रहा, किन्तु सत्य-धर्म का सेवन कभी नहीं किया अतः तुझे समझाने के लिये बिना बुलाये ही आ गया।

५

वृद्धों का सम्मान

१ वृद्धस्य वचनं ग्राह्यम् ।

वृद्धों की बात ग्रहण करने योग्य होती है ।

२ विद्या-विनय वृद्ध्यर्थं वृद्धसेवैव शस्यते ।

—शुभचन्द्राचार्य

विद्या एवं विनय की वृद्धि के लिए वृद्ध पुरुषों की सेवा प्रशस्त मानी गई है ।

३ न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा,
वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम् ।
धर्मो न वै यत्र न सत्यमस्ति,
सत्यं न तद् यच्छलमभ्युपेतम् ।

—विदुरनीति ३।५८

वास्तव में वह सभा नहीं, जिसमें वृद्ध-बूढ़े न हों, वे वृद्ध नहीं, जो धर्म न समझायें, वह धर्म नहीं, जिसमें सत्य न हो, और वह सत्य नहीं जिसमें छल हो ।

४ वसती वैद तपेसरी, प्रोहित तंदुल पान ।
ये नौ जूना चाहिए, राजा शाह दीवान ।।

◆ वैद ब्राह्मण नैं वाणियो, चौथा डोढ़ीदार ।
इतरा तो दाना भला, कर्म करै मोट्यार ।।

—राजस्थानी दोहे

५ नराँ, नाहराँ, दिगंबराँ, पाकाँ ही रस होय ।

—राजस्थानी कहावत

६ **वृद्ध कैसे होते हैं**—यह जानना एक बुद्धिमत्ता का कार्य है और जीवनयापन की कला एक शिष्टतम पाठ है ।

—एमी. एल.

७ **अनुभवी वृद्ध**—कुछ तरुण सेवकों ने राजा से प्रार्थना की राजन् ! पके हुए केशवाले और जीर्ण शरीरवाले बूढ़ों को न रखकर यदि आप नवयुवकों को सेवा में रखें तो सम्भव है, राज्य शीघ्रातिशीघ्र उन्नत हो सके । अच्छा, सोचेंगे ! ऐसे कहकर राजा ने कुछ दिनों के बाद सभा में ऐसा प्रश्न किया—युवको एवं वृद्धो ! कहिए—यदि कोई मेरे शिर में लात मारे तो क्या दण्ड देना चाहिए ? युवकों ने तत्काल जबाब दिया कि उसको उसी क्षण मार देना चाहिए ।

राजा ने वृद्धों की ओर देखा । उन्होंने कुछ सोच-विचार कर निश्चय किया कि महारानी के सिवा राजा के शिर में लात मार ही कौन सकता है ? यह प्रश्न राजा ने हमारा बुद्धिबल देखने के लिए किया है, अस्तु ! ऐसे विचार-विमर्श करके उन्होंने राजसभा में आकर कहा—महाराज ! हमारी समझ में तो यही आता है कि आपके शिर में लात मारनेवाले का आपको खूब सम्मान करना चाहिए । राजा प्रसन्न हुआ एवं वृद्धों की भूरि-भूरि प्रशंसा करके उन्हें ऊंचे पदों पर नियुक्त किया ।

—नंदी टीका के आधार से

६

वृद्धों के प्रकार

१ दस थेरा पन्नत्ता, तं जहा—
गामथेरा, नगरथेरा, रट्ठथेरा, पसत्थारथेरा, कुलथेरा, गणथेरा, संघथेरा, जाइथेरा, सुअथेरा, परियायथेरा।

—**स्थानांग १०।७६१**

दस प्रकार के स्थविर (वृद्ध) कहे हैं :—

१ **ग्रामस्थविर**—गाँव में व्यवस्था करनेवाले बुद्धिमान एवं प्रभावशाली व्यक्ति।

२ **नगरस्थविर**—नगर के मानीय एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति।

३ **राष्ट्रस्थविर**—राष्ट्र के माननीय मुख्यनेता।

४ **प्रशास्तृस्थविर :**—धर्मोपदेश देनेवालों में प्रमुखव्यक्ति।

५ **कुलस्थविर :**—लौकिक एवं लोकोत्तर (धार्मिक) कुलों की व्यवस्था करनेवाले एवं व्यवस्था तोड़नेवालों को दण्डित करनेवाले व्यक्ति।

६ **गणस्थविर** :—गण की व्यवस्था करनेवाले व्यक्ति।

७ **संघस्थविर** ;—संघ की व्यवस्था करनेवाले व्यक्ति। (धर्मपक्ष में एक आचार्य की संतति को या **चान्द्र** आदि साधुसमुदाय को **कुल** कहते हैं। कुल के समुदाय को अथवा सापेक्ष तीन कुल के समूह को **गण** कहते हैं तथा गणों के समुदाय को **संघ** कहते हैं।)

८ **जातिस्थविर**—साठ वर्ष की आयुवाले वृद्धव्यक्ति।

९ **श्रुतस्थविर**—स्थानाङ्ग-समवायाङ्ग शास्त्र के ज्ञाता मुनिराज।

१० **पर्यायस्थविर**—बीस वर्ष की दीक्षापर्यायवाले साधु।

२ यम्हि सच्चं च धम्मो च, अहिंसा सञ्ञमो दमो।
स वे वन्तमलो धीरो, थेरो ति पवुच्चति॥

—**धम्मपद १९।६**

जिस में सत्य, धर्म, अहिंसा संयम और दम है, वस्तुतः वही विगतमल धीर व्यक्ति स्थविर कहा जाता है।

७ वृद्ध ऐसा चिंतन करें !

१ बालपने न संभार सक्यो कुछ, जानत नांहि हिताहित हीको।
जोवन वेश बसी वनिता उर, लाग रह्यो नित ही लिछमी को।
होय के बृद्ध विगोयदियो नर ! डारत क्यों नरके निज जी को।
आए हैं श्वेत अजों शठ चेत, गई सो गई अब राख रही को ।।१।।

—भूधरदास

◆ संत की संगति नांह करी,
न धरी चित्त में हित सीख कही को।
नीत-अनीत कुरीत करी नित,
जीवत ही ग्रहि मूढ़मती को।
या जमवार में आय गिंवार तैं,
मारी इतादिन भार मही को।
रे सुन जीव ! कहै ध्रमसीह,
गई सौ गई अब राख रही को ।।२।।

२ फरीदा ! तेरी दाढ़ी उत्ते, आ गया बूर।
अग्गूं नेडां रह गया, पच्छू रह गया दूर ।।

—पंजाबी पद्य

३ यातं यौवनमधुना, वनमधुना शरणमेकमस्माकम्।
स्फुरदुरुहार-मणीनां, हा ! रमणीनां गतः कालः ।।

—सुभाषितरत्नभाण्डागार पृष्ठ ३९१

यौवन व्यतीत हो गया अतः अब हमें वन की शरण लेनी चाहिए। खेद है कि अब रत्नमय हारों से चंचल वक्षस्थलवाली स्त्रियों के साथ रहने का समय चला गया।

४ द्युभिर्हितो जरिमा सू नो अस्तु !

—ऋग्वेद-१०।५९।४

हमारी वृद्धावस्था दिन-प्रतिदिन सुखमय हो।

५ यदि वृद्धावस्था की झुरियां पड़ती हैं, तो उन्हें हृदय पर मत पड़ने दो, कभी आत्मा को वृद्ध न होने दो।

—जेम्जगार फील्ड

६ यदि बूढ़ा चाहता नहीं, बूढ़ी का सहवास।
कैसे चाहे युवती फिर, बूढ़े से घरबास ।।

—दोहा-संदोह

८ जीवन

१ आरभस्वेमाममृतस्य श्नुष्टिम् ।

—अथर्ववेद ८।२।१

यह (जीवन) अमृत की लड़ी है । इसे अच्छी तरह मजबूती से पकड़े रखो ।

२ जीवन एक पुष्प है और प्रेम उसका मधु ।

—विक्टरह्यूगो

३ जीवन एक बाजी के समान है । हार-जीत तो हमारे हाथ नहीं है, लेकिन बाजी का खेलना हमारे हाथ में है ।

—जर्मीटेलर

४ जीवो जीवस्य जीवनम् ।

—सुभाषितरत्नखंडमंजूषा

एक जीव के आधार से ही दूसरे का जीवन टिकता है ।

५ मत्स्य एव मत्स्यं गिलति ।

—शतपथब्राह्मण १।८।१।३

बड़ी मछली छोटी मछली को निगलती है ।

६ जीवन और कुछ नहीं है, केवल मृत्यु को कुछ समय के लिए टालना है ।

—शोपेनहॉवर

७ हम आते हैं और रोते हैं—यही जीवन है ।
हम जंभाई लेते हैं और मर जाते हैं—यही मृत्यु है ।

—असोन-द-चांसेल

८ जीवन का द्वार तो सीधा है, पर मार्ग संकीर्ण है।

—संतमेथ्यु

६ साधारण जीवन में एक ही विधान है—यौवन भूल है, जवानी संघर्ष है और बुढ़ापा पश्चात्ताप।

—डिजरायली

१० उष्ण एव जीविष्यन्, शीतो मरिष्यन्।

—शतपथब्राह्मण ८।७।२।११

जीनेवाला गर्म और मरनेवाला ठंडा होता है।

११ जीवन के प्रथम चालीस वर्ष पाठ्य हैं और द्वितीय तीस वर्ष इस पर व्याख्या।

—शोपेनहॉवर

१२ बीस वर्ष की अवस्था में अभिलाषा प्रधान होती है, तीस वर्ष की अवस्था में बुद्धि और चालीस वर्ष की अवस्था में निर्णयशक्ति प्रधान होती है।

—फ्रैंकलीन

१३ **मनुष्य जीवन के सौ वर्ष**—

वैष्णवी कल्पना के अनुसार ईश्वर ने मनुष्य, बैल, कुत्ते एवं उल्लू को ४०-४० वर्ष की आयु देकर पृथ्वी पर भेजना चाहा। बैल आदि इन्कार हुए एवं अपने लिए २०-२० वर्ष की आयु रखी। शेष सबके २०-२० वर्ष मनुष्य ने ले लिए। अतएव मनुष्य ४० वर्ष तक तो अपना जीवन जीता है फिर २० वर्ष तक बैल की तरह (पुत्रादि के लिए) दौड़ता हुआ, फिर २० वर्ष तक कुत्ते की तरह भौंकता हुआ और शेष २० वर्ष तक दिन में उल्लू की तरह अंधरूप से जीवन व्यतीत करता है।

६ जीवन के हेतु आदि

१ विद्या शिल्पं भृतिः सेवा, गोरक्ष्यं विपणिः कृषिः ।
धृतिर्भैक्ष्यं कुसीदं च, दश जीवन-हेतवः ।।

—मनुस्मृति १०।११६

जीवन निभाने के ये दस साधन माने गए हैं—

१–विद्या, २–शिल्पकला, ३–नौकरी, ४–सेवा, ५–गोरक्षा, ६–व्यापार, ७–खेती, ८–सन्तोष, ९–भिक्षा, १०–ब्याज ।

२ **जिन्दगी के तीन मार्ग**—१–आधिभौतिक (जड़वाद), (२)–आधिदैविक—(बुद्धिवाद), ३–आध्यात्मिक (आत्मवाद) ।

६ **जीवन के चार सूत्र**—१–क्लेश हो ऐसा बोलो मत, २–रोग हो ऐसा खाओ मत, ३–कर्ज हो ऐसा खर्चो मत, ४–पाप हो ऐसा करो मत ।

—**जीवनलक्ष्य से**

४ विनोबा अपने जीवन के सूत्र की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि "रसायन-शास्त्र की भाषा में पानी का सूत्र—**एच-टू-ओ** है, यानी दो भाग हाइड्रोजन और एक भाग ऑक्सीजन मिलकर पानी बनता है, उसी प्रकार जीवन का सूत्र—**एम-टू-ए** है—दो भाग मेडीटेशन (चिंतन-मनन) और एक भाग एक्टीविटी (प्रवृत्ति) ।

—**नवभारतटाइम्स, ११ सितम्बर १९७१**

५ **जीवन के तीन सिद्धान्त—**

(क) जीव जीव का भोजन है । —**डार्विन**

(ख) जीओ और जीने दो ! —**हक्सले**

(ग) जिलाने के लिए जीओ ! —**गाँधी**

१० जीवन की अस्थिरता

१ अणिच्चे खलु भो ! मणुयाणजीविए कुसग्गजलबिन्दुचंचले ।

— दशवैकालिकचूलिका १

ओह ! मनुष्यों का जीवन अनित्य है एवं डाभ की अणी पर ठहरे हुए जलबिन्दुवत् चंचल है ।

२ जीवियं चेव रूवं च, विज्जुसंपायचंचलं ।

—उत्तराध्ययन १८।१३

यह जीवन और रूप—सौन्दर्य बिजली की चमक के समान चंचल है ।

३ उद्घाटितनवद्वारे, पञ्जरे विहगोऽनिलः ।
यत्तिष्ठति तदाश्चर्यं, प्रयाणे विस्मयः कुतः ।।

—सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ ३८४

इस शरीररूप पींजरे में—दो कान, दो आंख, दो नाक मुंह, मूत्रद्वार मलद्वार—ये नव द्वार खुले हुए हैं । इसमें श्वासरूप पंछी जो ठहरता है, वह आश्चर्य है, उसके उड़ जाने में नहीं अर्थात् जीना आश्चर्य है, मरना नहीं ।

४ जीवन एक खिले हुए फूल के समान है, कुछ समय के बाद अपने आप ही कुम्हलाकर गिर पड़ेगा ।

५ संयोगा विप्रयोगान्ता, मरणान्तं ही जीवितम् ।

कात्यायन-स्मृति

आखिर संयोग वियोग के रूप में, और जीवन मरण के रूप में परिणत होनेवाला है ।

६ क्षणिक प्रकाश देनेवाले दीपक बुझो ! जीवन तो केवल चलती-फिरती छाया (क्षणिक प्रकाश) है ।

—शेक्सपियर

७ तिनका सम जीवित है जग में,
सुत-मित्र-सहोदर है किनका ।
किन कारन भूल रह्यो भवफंद में,
सार है धर्म दया जिनका ।
जिन कानन रामचरित्र सुन्यो,
सोहि केवल जन्म दिया तिनका ।
तिनका जब ध्यान लगा प्रभु से,
तो कहा जमराज करे तिन का ।।

—भाषाश्लोकसागर

११ जीवन से लाभ

१ जीवन्नरो भद्रशतानि पश्यति ।
जीवित व्यक्ति सैंकड़ों सुख देख लेता है ।

२ एति जीवन्तमानन्दो, नरं वर्षशतादपि ।

—वाल्मीकिरामायण ५।३४।६

जीवित मनुष्य को सौ वर्ष के बाद भी आनन्द प्राप्त हो जाता है ।

३ जीएगा नर तो फिर वसेगा घर ।
- सिर सलामत तों पगड़ी पचास ।
- जान है तो जहान है ।

—हिन्दी कहावत

४ जीवतो माणस सौ बाना जुए ।
- कोठी हशे तो ढांकण घणाय मलशे ।

—गुजराती कहावतें

५ दृषद्भिः सागरो बद्ध, इन्द्रजिन्मानवैर्जितः ।
वानरैर्वेष्टिता लङ्का, जीवद्भिः किं न दृश्यते ?

—चन्दचरित्र, पृष्ठ ७६

पत्थरों ने समुद्र को बांध डाला, मनुष्यों ने इन्द्रजित् को जीत लिया और वानरों द्वारा लंका घेरली गई । जीवित व्यक्ति क्या-क्या नहीं देखते ?

१२ श्रेष्ठ जीवन

१ पञ्ञाजीविं जीवितमाहु सेट्ठं ।

—सुत्तनिपात १।१०।२

प्रज्ञामय (बुद्धियुक्त) जीवन को ही श्रेष्ठ जीवन कहा है ।

२ अच्छा जीवन ज्ञान और भावनाओं तथा बुद्धि और सुख का संमिश्रण होता है ।

—सुकरात

३ स्वाभिमान, आत्मज्ञान और आत्मसंयम—ये तीन ही जीवन को अलौकिक शक्ति की ओर ले जानेवाले हैं ।

—टेनीशन

४ जीवन एक कहानी के सदृश है, वह कितनी लंबी है—यह नहीं वरन् कितनी अच्छी है—यह विचारणीय विषय है ।

—सेनेका

५ एक विद्वान् ने कहा—
लिविंग इज कीलिंग अर्थात् जीना दूसरों को मारना है । तत्काल प्रश्न हुआ कि फिर श्रेष्ठजीवन कैसे हो ?
विद्वान् ने उत्तर दिया—
कीलिंग लीस्ट लिविंग बेस्ट अर्थात् वही जीवन श्रेष्ठ है, जिसमें कम हिंसा हो ।

६ यस्मिन् श्रुतिपथायाते, दृष्टे स्मृतिमुपागते ।
आनन्दं यान्ति भूतानि, जीवितं तस्य शोभते ।।

—योगवाशिष्ठ

जिसके श्रवण से, दर्शन से और स्मरण से प्राणी आनन्द पाते हैं, वास्तव में उसी का जीवन शोभायुक्त है।

७ वाणी रसवती यस्य, भार्या पुत्रवती सती।
लक्ष्मीर्दानवती यस्य, सफलं तस्य जीवितम्॥

—**सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ १०२**

जिसकी वाणी सरस है, स्त्री पुत्रवती एवं सती है और लक्ष्मी दानवती है, उसी का जीवन सफल है।

८ एक दिन दुपहर को संत कबीर सूत सुलझा रहे थे। बनारस के एक विद्वान् ने आकर उनसे पूछा—गृहस्थ बनूं या साधु? कबीर ने उत्तर न देकर अपनी स्त्री से कहा—सूत सुलझाना है अतः दीपक लाओ! स्त्री बिना किसी तर्क के फौरन दीपक ले आई। विद्वान् कुछ नहीं समझा। फिर उसे लेकर कबीर एक वृद्धसाधु के स्थान पर गए एवं आवाज दी, महाराज! जरा नीचे आइए, दर्शन करना है। साधु आया। कबीर बोले—अच्छा चले जाइए, हो गए दर्शन। साधु ऊपर पहुंचा ही था कि फिर आवाज दी। बेचारा नीचे आकर पूछने लगा—क्या काम है? कबीर ने कहा—प्रश्न पूछना था किन्तु अभी तो भूल गए। साधु को इस प्रकार कई बार नीचे बुलाया एवं ऊपर भेजा, फिर भी वह गर्म नहीं हुआ।

कबीर आगन्तुक विद्वान् से कहने लगे, भाई! यदि ऐसी क्षमा रख सको तो साधु-जीवन अच्छा है और वैसी विनीत-स्त्री हो तो गृहस्थजीवन भी अच्छा ही है।

८ हम ऐसा जीवन व्यतीत करें कि दफनानेवाले भी दो आँसू बहा दें।

—**पैट्रार्क**

९ याद है कि वक्ते-पैदाइश, सब हँसते थे और तू रोता।
ऐसी रहनी रहो कि मरते वक्त, सब रोते रहें और तू हँसता।

—**उर्दू शेर**

१० तुम अपने जीवन को इतना पवित्र रखो कि कोई तुम्हारी निन्दा करे, फिर भी लोग उसका विश्वास न करें।

—अमूल्यशिक्षा से

११ **What is life ?**

Life is to live, to live is to act, to act is to do something good, to do something good is to love humanity, to love humanity is to love God, **so to live is to love,** the difference is only of I & O I means selfness. O means Zero or nothing, So in the real sence of the world, life is to reduce your I in to O,

वाट इज लाइफ ?

लाइफ इज टु लिव, टु लिव इज टु ऐक्ट, टु ऐक्ट इज टु डु समथिंग गुड, टु डु, समथिंग गुड इज टु लव ह्यूमेनिटी, टु लव ह्यूमेनिटी इज टु लव गोड, **सो टु लिव इज टु लव**, दी डिफरेंस इज औनली औफ आई ऐन्ड ओ. आई मीन्स्, सेल्फनेस ओ मीन्स् जीरो और नथिंग, सो इन दी रीयल सेन्स ऑफ दी वर्ल्ड, लाइफ इज टु रिड्यूस यौर आई इन टु ओ।

—एक अंग्रेज विचारक

जीवन क्या है—जीवन जीने के लिए है, जीना कुछ करने के लिए है, करना कुछ सत्कर्म करने के लिए है, सत्कर्म करना मनुष्यता से प्रेम करने के लिए है, मनुष्यता का प्रेम भगवान से प्रेम करने के लिए हैं। सार यह निकला कि **जीवन प्रेम के लिए है**। "लिव" और "लव" में केवल "आई" एवं "ओ" का अन्तर है। "आई" का अर्थ खुदगर्जी है तथा "ओ" का अर्थ शून्य अथवा कुछ नहीं है। अतः विश्व का वास्तविक सत्य यही है कि "लिव" (जीवन) में विद्यमान "आई" को "ओ" में बदल दो अर्थात् खुदगर्जी को खत्म करके प्रभु के प्रेमी बन जाओ !

१३ निकृष्ट जीवन

१ स जीवति गुणा यस्य, यस्य धर्मः स जीविति।
गुण-धर्मविहीनस्य, जीवितं निष्प्रयोजनम् ॥

—चाणक्यनीति १४।१२

जिसके अन्दर गुण और धर्म विद्यमान है, उसी का जीवन सच्चा जीवन है। गुण और धर्महीन जीवन निरर्थक है।

२ जीवन्तोऽपि मृताः पञ्च, श्रूयन्ते किल भारते।
दरिद्रो व्याधितो मूर्खो, प्रवासी नित्यसेवकः ॥

—पंचतंत्र १।२।८६

(१) दरिद्र, (२) रोगी, (३) मूर्ख, (४) विदेश में भ्रमण करनेवाला, (५) दूसरों की सेवा करनेवाला (नौकर) ये पाँच जीवित भी मृतकों के के समान हैं। ऐसे महाभारत में सुना जाता है।

३ धिग् जीवितं ज्ञातिपराजितस्य,
धिग् जीवितं व्यर्थ - मनोरथस्य।
धिग् जीवितं शास्त्र-कलोज्झितस्य,
धिग् जीवितं चोद्यमवर्जितस्य ॥

—सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ १८०

जो स्वजनों से पराजित है, व्यर्थ संकल्प-विकल्प करनेवाला है, शास्त्र एवं कला से शून्य है और निरुद्यमी है—इन सभी का जीवन धिक्कार का पात्र है।

४ प्रथमे नार्जिता विद्या, द्वितीये नार्जितं धनम्।
तृतीये नार्जितं पुण्यं, चतुर्थे किं करिष्यति ?

—**सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १६९**

जिसने जीवन के पहले भाग में विद्या नहीं पढ़ी, दूसरे भाग में धन नहीं कमाया और तीसरे भाग में धर्म-पुण्य नहीं किया। वह चौथे भाग में क्या कर सकेगा ?

५ जवानी के दिन जो गंवाते फिरे, बड़े होके चिमटा बजाते फिरे।
जो फूलों की सेजों में लेटा करे, खड़े होके कांटा समेटा करे।
समेटे जो गरमी में फूलों का रस, न शरदी में क्यों शहद चाटे मगस ।।

—**उर्दू शेर**

६ बिना लक्ष्य का जीवन जीनेवाला, **कहाँ जाना है**—यह निश्चय किए बिना रेलगाड़ी में चढ़ बैठनेवाले व्यक्ति के समान मूर्ख है।

७ **तीन के बिना जीवन व्यर्थ है—**

१—बिना दया के जीवन व्यर्थ है,

२—बिना परोपकार के जीवन व्यर्थ है,

३—बिना उदारता के जीवन व्यर्थ है।

—**'तीनबात' पुस्तक से**

८ गुजर की जब न हो सूरत, गुजर जाना ही बेहतर है।
हुई जब जिन्दगी दुश्वार, मर जाना ही बेहतर है।।

—**उर्दू शेर**

१५ आयु

१ जिसकी विद्यमानता में जीव जीता है एवं पूरा होने पर मरता है या जिसके उदय से जीव एक गति से दूसरी गति में जाता है अथवा स्वकृतकर्म से प्राप्त नरकादि—दुर्गति से निकलना चाहते हुए भी नहीं निकल सकता, उसको **आयु** अथवा **आयुष्यकर्म** कहते हैं ।

—प्रज्ञापना २३।२ टीका

२ **आयु के चार भेद**—१—नरकायु, २—तिर्यञ्चायु, ३—मनुष्यायु, ४—देवायु । नरकायु और देवायु जघन्य दस हजार वर्ष की है, एवं उत्कृष्ट तेंतीस सागरोपम की है। तिर्यञ्चायु एवं मनुष्यायु जघन्य अन्तमुहूर्त की है और उत्कृष्ट तीन पल्योपम की है ।

—प्रज्ञापना ४

३ **नरकादि-आयुबन्ध के कारण—**

चउहिं ठाणेहिं जीवा णेरइयत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—
महारंभयाए, महापरिग्गहयाए, पंचिंदयवहेणं, कुणिमाहारेणं।
चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—
माइल्लयाए, नियडिल्लयाए, अलियवयणेणं, कूडतुल-कूडमाणेणं।
चउहिं ठाणेहिं जीवा मणुस्सत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—
पगइभद्दयाए, पगइविणीययाए, साणुक्कोसयाए, अमच्छरियाए।
चउहिं ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्मं पगरेंति तं जहा—
सरागसंजमेणं संजमासंजमेणं, बालतवोकम्मेणं, अकामणिज्जराए।

—स्थानांग ४।४।३७३

चार कारणों से जीव नरक का आयुष्य बाँधता है—

१—महारम्भ से—तीव्र-कषायपूर्वक-जीवहिंसा करने से,

२—महापरिग्रह से—वस्तुओं पर अत्यन्त मूर्च्छा करने से,

३—पञ्चेन्द्रिय जीवों का वध करने से,

४—मांस का भोजन करने से।

चार कारणों से जीव तिर्यञ्च का आयुष्य बाँधता है—

१—माया-कपट करने से,

२—निकृति-गूढ़-माया करने से, (ढोंग करके दूसरों को ठगने से),

३—असत्य बोलने से,

४—झूठा तोल-माप करने से अर्थात् माल लेते समय बड़े और देते समय छोटे माप-तोल का उपयोग करने से।

चार कारणों से जीव मनुष्य का आयुष्य बांधता है—

१—प्रकृतिभद्रता यानी सरल स्वभाव से,

२—प्रकृति की विनीतता से (विनीतस्वभाववाला होने से),

३—दयावान होने से,

४—मत्सर-ईर्ष्याभाव न रखनेवाला होने से।

चार कारणों से जीव देवता का आयुष्य बांधता है—

१—सराग-अवस्था में संयम पालने से,

२—श्रावकपना पालने से,

३—अकामनिर्जरा से,

४—अज्ञान-अवस्था में काय-क्लेश आदि तप करने से।

४ अल्पायु—दीर्घायु—

तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउअत्ताए कम्मं पगरेंति तं जहा—
पाणे अइवाइत्ता भवइ, मुसं वइत्ता भवइ, तहारूवं समणं वा, माहणं वा, अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभित्ता भवइ।

तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा—
णो पाणे अइवाइत्ता भवइ, णो मुसं वइत्ता भवइ, तहारूवं समणंवा माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभित्ता भवइ।

—स्थानांग ३।१।१२५

तीन कारणों से जीव अल्प-आयु बांधता है—

१—जीवहिंसा करने से,

२—झूठ बोलने से,

३—श्रमण-निर्ग्रन्थों को अप्रासुक-अनेषणीय आहार आदि देने से।

तीन कारणों से जीव दीर्घ-आयु बांधता है—

१—जीवहिंसा छोड़ने से,

२ –झूठका परित्याग करने से,

३—साधुओं को प्रासुक-एषणीय आहार आदि देने से।

५ कम से कम अल्पआयु २५६ आवलिका की होती है। निगोद के जीव इसी अल्पआयु के हिसाब से एक मुहूर्त में ६५५३६ भव करते हैं—इनका दुःख नरक से भी अधिक माना गया है।

●

१३ लम्बी आयुवाले व्यक्ति

१६० वर्षीय वृद्ध बाबा पूरणसिंह

१ एक सौ साठ वर्षीय पूरणसिंह ने कहा—"आज के लोग बहुत पापी और अधर्मी हैं। महाराजा रणजीतसिंह का युग बहुत अच्छा था, लोग धर्म पर आस्था रखते थे और सच बोलते थे, लेकिन आज चारों ओर झूठ का बोलवाला है। दसवें बादशाह गुरु गोविन्दसिंह ने मुझे एक बार स्वप्न में दर्शन दिये और कहा—"झूठ मत बोलना। मुझे अब भी कभी-कभी दसवें बादशाह गुरु गोविन्दसिंह के दर्शन होते रहते हैं।" बाबा पूरणसिंह का कहना है कि उन्होंने महाराजा रणजीतसिंह का युग देखा है और वे अब १६० वर्ष के हो गए हैं और पता नहीं कितने दिन और जीवित रहेंगे? जालन्धर

(पंजाब) की एक बस्ती खेल के निवासी बाबा अपनी दीर्घायु का रहस्य खुश्क **रोटी दाल और चाय बतलाते हैं।**

. —धर्मयुग, १३ फरवरी १९७२

['अपने वतन में' से साभार]

२ रूस में १०० वर्ष से अधिक लम्बी आयुवाले लगभग ३० हजार व्यक्ति हैं, उनमें ४०० महिलाएँ भी हैं। लम्बी आयुवाले व्यक्तियों में से एक व्यक्ति ने अभी-अभी अपना १६४ वां जन्म दिन मनाया है। वह सोवियत रूस के **अजरबैजान**के ताल्यिस पर्वत श्रेणी पर बहुत ऊंचाई में बसे हुए **दारजाबू** गाँव में रहता है एवं उसका नाम **शिराली मुस्लिमोव** है। इतनी लम्बी आयु होने पर भी वह बहुत स्वस्थ है।

— हिन्दुस्तान, ४ जुलाई १९६९ यून्यू के अनुसार

तथा सोवियतभूमि, अंक २०, अक्टूबर १९६५ के आधार से।

३ तुर्की और सोवियत संघ की सीमा के समीप **सार्प** गाँव में एक वृद्धा रहती है, उसका नाम **हेटिस नाइन** है। आयु १६८ वर्ष की है, फिर भी वह पूर्ण स्वस्थ है। वृद्धा का जन्म सन् १७९५ में हुआ था, उस समय संयुक्तराज्य अमेरिका के राष्ट्रपति **वाशिंगटन** पदारूढ़ थे। सन् १८५३-५५ में हुए क्रीमिया के युद्ध की बातें उसे अच्छी तरह याद हैं। इसी युद्ध में घायल होकर उसका पुत्र मरा था।

—नवभारतटाइम्स, २ जून १९६३ के आधार से

४ १८० वर्षीय **मुहम्मद अयूब**, जो विश्व के सबसे बूढ़े व्यक्ति बताए जाते हैं **वह** पूर्वोत्तर ईरान के **सब्जावार** क्षेत्र के निवासी हैं। (देखिए क्रमशः तीनों **के** चित्र पृष्ठ २२७ पर)

—वीर अर्जुन, ११ जनवरी १९७० के आधार से

५ **गोलपाड़ा** जिले के **किशनवारी** ग्राम का मुंशी **उमेदअली** एशिया का **सबसे वृद्ध** व्यक्ति माना जाता है। अली की आयु इस समय १८२ वर्ष की **है। इस अवस्था में** भी उसके अंग बहुत मजबूत हैं तथा दृष्टि और श्रवण **शक्ति बिलकुल** ठीक हैं।

शिराली मुस्लिमोव[1]

हैटिस नाइन[2]

मुहम्मद अयूब[3]

---

१. सोवियत रूस के अजरबैजान के ताल्यिस पर्वतश्रेणी के उच्चशिखर पर बसे **दारजाबू गांव** का निवासी १६४ वर्षीय **शिराली मुस्लिमोव** ।

२. तुर्की और सोवियत संघ की सीमा पर स्थित **सार्प** गांव की निवासिनी १६८ वर्षीय वृद्धा **हैटिस नाइन**"

३. पूर्वोत्तर ईरान के **सब्जावार** क्षेत्र के निवासी १८० वर्षीय **मुहम्मद अयूब** ।

आगरा की वृद्ध जनसम्मानसमिति ने उमेदअली का सम्मान करने और उसे **उचित पुरस्कार** देने की घोषणा की है। उसका परिवार अब ८०० सदस्यों का है, जिसमें उसके पोते और परपोते भी शामिल हैं।

मुंशी उमेदअली को आशा है कि वह अभी कम से कम दस वर्ष तक और जीवित रहेगा।

—हिन्दुस्तान, ३० दिसम्बर, १९६८ के आधार से

६ काहिरा में एक आदमी है जिसकी आयु लगभग २०० वर्ष की है और नाम **अमर-शाहत** है। उसकी पहली शादी ४२ वर्ष की आयु में तथा दूसरी शादी १२० वर्ष की आयु में हुई थी। उसका कहना है कि जब वीर **नेपोलियन** ने मिश्र को छोड़ा था, उससे कुछ समय पूर्व ही उसकी पहली शादी हुई थी।

—हिन्दुस्तान, १२ अप्रेल १९५२ के आधार से

७ **लम्बी आयुवाले कतिपय पशु-पक्षी—**

मिश्र के गीध ११२ साल तक जीते हैं। सुनहले ऊकाब ११४ वर्ष तक, तोते १०२ वर्ष तक, हँस ६० वर्ष तक, सारस ४३ वर्ष तक, मोर ४० वर्ष तक, बुलबुल २५ वर्ष तक, गिलहरी १५ वर्ष तक और सियार १४ वर्ष तक जिन्दा रहते हैं।

—साप्ताहिक हिंदुस्तान

१६ कतिपय देशों की औसत आयु

क्र० सं०	देशों के नाम	समय	पुरुष	स्त्री
१	नार्वे	१९५६-६०	७१·३२	७५·९०
२	स्वीडन	१९६१-६५	७१·६०	७५·७०
३	कनाडा	१९६५-६७	६८·७५	७५·१८
४	फ्रान्स	१९६४	६८·००	७५·१०
५	आस्ट्रेलिया	१९६०-६२	६७·९२	७४·१८
६	स्वीट्जरलैंड	१९५९-६१	६९·५०	७४·८०
७	डेनमार्क	१९६३-६४	७०·३०	७४·६०
८	यू० के० (इंगलैंड)	१९६३-६५	६८·३०	७४·४०
९	यू० एस० ए०	१९६८	६६·६०	७४·४०
१०	न्यूजीलैंड	१९६०-६२	६८·४४	७३·७५
११	चेकोस्लोवाकिया	१९६४	६७·७६	७३·५६
१२	जापान	१९६५	६७·७३	७२·९५
१३	आइलैंड	१९६०-६२	६८·१३	७१·८६
१४	रसिया	१९६७-६८	७०·००	७०·००
१५	मैक्सिको	१९६५-७०	६१·०३	६३·७३
१६	मारीशस	१९६१-६३	५८·६६	६१·८६

क्र० सं०	देशों के नाम	समय	पुरुष	स्त्री
१७	सिलोन	१९६२	६१·९०	६१·४०
१८	ब्राजील	१९६५-७०	६०·७०	६०·७०
१९	लिबिया	१९६५-७०	५२·१०	५२·[illegible]०
२०	पाकिस्तान	१९६२	५३·७२	४८·८०
२१	अलजीरिया	१९६५-७०	५०·७०	५०·७०
२२	चाइना	१९६५-७०	५०·०	५०·०
२३	केन्या	१९६५-७०	४७·५०	४७·५०
२४	भारतवर्ष[1]	१९५७-५८	४५·२३	४६·५७
२५	बर्मा	१९५४	४०·८०	४३·८०
२६	इथोपिया	१९६५-७०	३८·५०	३८·५०
२७	घाना	१९६०	३७·८०	
२८	अफगानिस्तान	१९६५-७०	३७·५०	३७·५०

—यू० एन० डेमोग्राफिक इयरबुक—१९६६ तथा १९७०-७१

●

१—इस समय भारतवर्ष की औसत आयु ५२ वर्ष है।

आयुः—क्षय

१ आयु दो प्रकार की है—अपवर्तनीय और अनपवर्तनीय। बाह्य-शस्त्रादि का निमित्त पाकर जो आयु बीच में टूट जाती है अर्थात् स्थितिपूर्ण होने के पहले ही शीघ्रता से भोग ली जाती है, वह **अपवर्तनीय** आयु है। जो आयु अपनी पूरी स्थिति भोगकर ही समाप्त होती है, बीच में नहीं टूटती वह **अनपवर्तनीय** आयु है।

२ **अपवर्तनीय और अनपवर्तनीय आयुवाले व्यक्ति—**

औपपातिक-चरमोत्तमदेहाऽसंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः।

—**तत्वार्थसूत्र २।५३**

देव, नारक, चरमशरीरी (उसी भव में मोक्ष जानेवाले जीव), उत्तम-पुरुष (तीर्थंकर—चक्रवर्ती आदि ६३ शलाकापुरुष) तथा असंख्यातवर्ष की आयुवाले मनुष्य-तिर्यञ्च (युगलिक)—ये अनपवर्तनीय-आयुवाले होते हैं एवं शेष जीव दोनों ही प्रकार की आयुवाले होते हैं।

३ **आयु टूटने के सात कारण—**

सत्तहिं ठाणेहिं आउ भिज्जइ, तं जहा—
अज्झवसाण-निमित्ते, आहारे वेयणा पराघाए।
फासे आणपाणू, सत्तविहं भिज्जए आउ।

—**स्थानांग ८।२५**

सात कारणों से आयुष्य टूटता है :—

१ **अध्यवसान**—राग, स्नेह या भयरूप प्रबल आघात के लगने से।

२ **निमित्त**—खड्ग, मुद्गर एवं दण्ड आदि शस्त्रों के प्रहार लगने से।

३ **आहार**—अधिक भोजन या विषादियुक्त भोजन करने से।

४ **वेदना**—अक्षिशूल—उदरशूल आदि द्वारा असह्यवेदना-(पीड़ा) होने से।

५ **पराघात**—गड्ढे-कूप आदि में गिरने रूप बाह्य-आघात लगने से।

६ **स्पर्श**—शरीर में विष फैलानेवाली वस्तु के स्पर्श से अथवा सर्प आदि जहरी-जन्तुओं के काटने से।

७ **आनप्राण**—श्वास की गति बन्द हो जाने से।

४ सेणे जह वट्टयं हरे, एवं आउखयंमि तुट्टइ।

—सूत्रकृतांग २।१।२

जैसे—बाज, चिड़िया आदि पक्षियों को हर लेता है, वैसे, आयु क्षीण होने पर काल जीवन को नष्ट कर देता है।

५ ताले जह बंधणच्चुए, एवं आउखयंमि तुट्टइ।

—सूत्रकृतांग २।१।६

जिस प्रकार ताल का फल वृन्त से टूट कर नीचे गिर पड़ता है, उसी प्रकार आयु क्षीण होने पर प्रत्येक प्राणी जीवन से च्युत हो जाता है।

६ गब्भाइ मिज्जंति बुया बुयाणा, नरा परे पंचसिहा कुमारा।
जुवाणगा मज्झिम थेरगा य, चयंति ते आउखए पलीणा॥

—सूत्रकृतांग ७।१०

आयु क्षीण होने पर कई जीव गर्भावस्था में मर जाते हैं, कई स्पष्ट बोलने की अवस्था में, कई उससे पहले ही कुमारावस्था में, कई युवा होकर, कई आधी उम्र के होकर एवं कई वृद्ध होकर मर जाते हैं।

७ कुतः कुशलमस्माकं, गलत्यायुर्दिने-दिने।
मिलनेवाले पूछा करते हैं कि **कुशल-क्षेम है**? किंतु हमारा कुशल कहां है, आयुष्य तो दिन-दिन घटता जा रहा है।

८ बिना खेवटिये नाव चलावत, सो तो बुड्यो क-बुड्यो क-बुड्यो है।
देवी के आगे महीष खड्यो फिर, सो तो गुड्यो क-गुड्यो क-गुड्यो है।
जे नर जोगी को संग करे लियो,सो तो मुंड्यो क-मुंड्यो क-मुंड्यो है।
दाखत है **ब्रह्मानन्द** तेरो यह,हंस उड्यो क-उड्यो क-उड्यो है॥१॥

घड़ियाल के पास कटोरी धरी रहै, सो तो भरी क-भरी क-भरी है ।
काठ चिताबिच बैठी सती फिर, सो तो बरी क-बरी क-बरी है ।
सिंह के आगे खड़ी रहे बाकरी, सो तो मरी क-मरी क-मरी है ।
दाखत है **ब्रह्मानन्द** तेरी यह, देह पड़ी क-पड़ी क-पड़ी है ।।२।।

काठ के शीश करोत धरी जब,सो तो कट्यो क-कट्यो क-कट्यो है ।
दूध में कांजी मिलाय धरी फिर,सो तो फट्यो क-फट्यो क-फट्यो है ।
बलवंत से निर्बल आय अड़्यो फिर,सो तो हट्यो क-हट्यो क-हट्यो है ।
दाखत है **ब्रह्मानन्द** तेरो यह,आयु,घट्यो क-घट्यो क-घट्यो है ।।३।।

फागण बाय लग्यो तरुपान के, सो तो खिर्यो क-खिर्यो क-खिर्यो है ।
बेलु के थंभ पे महल चिण्यो फिर,सो तो गिर्यो क-गिर्यो क-गिर्यो है ।
कूड़ी ही बात दृढ़ाय कहे नर,सो तो फिर्यो क-फिर्यो क-फिर्यो है ।
दाखत है **ब्रह्मानन्द** तेरो यह आयु भिड्यो क-भिड्यो क-भिड्यो है ।।४।।

९ न हि स्वमायुश्चिकिते जनेषु ।

—**ऋग्वेद** ७।२३।२

कोई मनुष्य अपनी आयु-जीवनकाल को नहीं जानता ।

मरण

१ आयुष्यकर्म के समाप्त होने पर शरीर से प्राणों का निकल जाना **मरण** कहलाता है।

—**लोकप्रकाश**, पुंज ७।१७

२ **भयसीमा मृत्युः।**

—**सुभाषितरत्नखंडमंजूषा**

भय की अन्तिम सीमा मृत्यु है।

३ **मरणं हि प्रकृतिः शरीरिणां, विकृतिर्जीवनमुच्यते बुधैः।**

—**रघुवंश ८।८७**

विद्वानों का कहना है कि मरण देहधारियों की प्रकृति है और जीवन विकृति है।

४ **जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः।**

—**योगवाशिष्ठ**

जन्मधारी का मरण निश्चित है।

५ अमराई रा बीज बोय र कोई को आयो नी।
० ऊगसी जको आथमसी।
० कोठी में घाल्या ही को जीवैनी।
० मौत रो कोई दारु कोनी।
० खूटी नें बूंटी कोनी।
० बकरे की मां किता थावर टालसी।

—**राजस्थानी कहावतें**

६ पवनतणीं परतीत, किण कारण काठी करै ।
इण री आहि ज रीत, आवै के आवै नहीं ॥

—श्रीकालुगणी से श्रुत

७ मरतां किसा गाडा जूतै है ।

—राजस्थानी कहावत

८ डैथ डिफाइस डॉक्टर

—अंग्रेजी कहावत

जाको मारै सांइयां, राख सकै न कोय ।

९ हथोड़ो छूटो हाथ सूं, पड़ियो आय कपाल ।
झरोखो झिलतो रह्यो, बिच में कर गयो काल ।
खाय न सकियो खीचड़ी, पुर ने सकियो आश ।
सोय न सकियो सेझ में, यूंही गयो निराश ॥

—राजस्थानी दोहे

सेठ ने बड़ी ही उमंग से महल बनवाया । प्रायः तैयार हो चुका था । एक दिन भोजन के समय थाली में परौसी हुई खिचड़ी छोड़कर ज्योंही महल का काम देखने लगा, अचानक कारीगर के हाथ से हथौड़ा छूटकर सेठ के सिर पर गिरा और वह मर गया ।

१० सोते समय मौत को सिरहाने एवं जागते समय सामने खड़ी समझकर काम करो ।

१६ मृत्यु की निर्दयता

१ कवलयन्नविरतं जङ्गमाजङ्गमं,
जगदहो ! नैव तृप्यति कृतान्तः ।
मुखगतान् खादतस्तस्य करतलगतै-
र्न कथमुपलप्स्यतेऽस्माभिरन्तः ।।

—शांतसुधारस १

अहो ! इस चराचर संसार का निरन्तर भक्षण करता हुआ भी यह काल नहीं अघाता । अपने मुख में आए हुए प्राणियों को चबाते हुए उस काल की मुट्ठी में रहे हुए हम कैसे नहीं मरेगें ? हमें अवश्य मरना ही होगा ।

२ माली आवत देख के, कलियां रही पुकार ।
फूले-फले चुन लिए, काल हमारी बार ।।

३ जहेह सीहोव मियं गहाय, मच्चू नरं नेइ हु अंतकाले ।

—उत्तराध्ययन १३।२२

सिंह जैसे मृग को पकड़ कर ले जाता है, वेसे ही अन्तसमय मृत्यु भी प्राणी को ले जाती है ।

४ तुरग-रथेभनरावृतिकलितं, दधतं बलमस्खलितं,
हरति यमो नरपतिमपि दीनं, मैनिक इव लघुमीनम् ।
विनय ! विधीयतां रे ! श्रीजिनधर्मः शरणम्,
प्रविशति वज्रमये यदि सदने, तृणमथ घटयति वदने ।
तदपि न मुञ्चति हत ! समवर्ती, निर्दय-पौरुषनर्ती ।।

—शांतसुधारस २

जैसे—मच्छीमार छोटी मछली को पकड़ता है, उसी प्रकार चतुरंगिणी सेना से परिवृत महाबली राजा हो, चाहे हीन-दीन गरीब हो, यह यम (मृत्यु) सबका संहार कर डालता है। चाहे कोई वज्रमय घर में घुस जाये अथवा मुँह में तृण ले ले। सब पर समानरूप से वर्तनेवाला एवं अपने क्रूर पराक्रम से नाचनेवाला यह काल किसी को नहीं छोड़ता। अतः रे जीव ! धर्म की शरण ले ले।

५ चलती चक्की देख के, दिया कबीरा रोय।
दुईपट भीतर आइ के, साबत गया न कोय॥

६ हाड़ जरै ज्यों लाकड़ी, केश जरै ज्यों घास।
सब जग जरता देख के, भए कबीर उदास॥
एक दिन ऐसा होएगा, कोउ काहू का नांहि।
घर की नारी को कहै, तन की नारी जाय॥

—**कबीर**

७ मातुलो यस्य गोविन्दः,पिता यस्य धनंजयः।
अभिमन्यू रणे शेते, कालोयं दुरतिक्रमः॥

—**भगवान व्यास**

कृष्ण जिसके मामा थे और अर्जुन जिसके पिता थे, वह वीर अभिमन्यु रणभूमि में सो गया अतः यह काल दुरतिक्रम है।

८ कदा कथं कुतः कस्मि-न्नित्यतर्क्यः खलोऽन्तकः।
प्राप्नोत्येव किमित्याध्वं, यतध्वं श्रेयसे बुधाः।

—**आत्मानुशासन ७८**

कब कैसे,किधर से और कहां आऊँगी ? ऐसी तर्कणा न करती हुई यह दुष्ट मौत आ जाती है अतः निश्चित क्यों बैठे हो ? धर्म का उद्यम करो !

९ न विज्जई सो जगति प्पदेसो, यथट्ठियं नोपसहेय्य मच्चू।

—**धम्मपद १२७**

संसार में ऐसा कोई स्थान नहीं, जहां रहनेवाले को मृत्यु न दबाये।

२०　मृत्यु की अप्रियता

१ ब्रह्मा ने नारद से पूछा—अकेले ही कैसे आए ? नारद ने कहा—भगवन् ! कोई भी आना नहीं चाहता। मैंने एक वृद्ध चौधरी से कहा—चलो भगवान के दरबार में ! चौधरी बोला - क्या करूं ! बेटी ब्याहनी है, खेत काटना है, मामला भरना है—ऐसे कहता-कहता मर गया एवं अपने ही घर में कुत्ता हो गया। फिर उससे चलने के लिए कहा, उत्तर मिला—क्या करूं घर पर पहरा लगाना है ? एक दिन किसी ने अचानक लाठी मार दी, कुत्ता मर कर सांप हो गया। पुनः कहने पर बोला—मेरे ही पीछे क्यों पड़े हैं आप ?

२ ओघड़ फकीर दो मुर्दा-खोपड़ियां हाथ में लेकर देख रहा था कि कौन-सी अमीर की है और कौन-सी फकीर की। एक राजा वहां से गुजरा और उसे देखकर कहने लगा—क्या ही खूब होता ! सेहत रहती-बीमारी न होती, दौलत ही दौलत होती, मुफलसी न होती, जिन्दगी रहती-मौत न होती।

फकीर हंसकर कहने लगा—नादान ! अगर बीमारी न होती तो धर्म की भावना कैसे होती ? सभी दौलतमन्द होते तो तेरी मुलाजमत कौन करता ? तथा अगर मौत ही न होती तो तू राजा कैसे बनता ?

३ कुंभार ना घड्या ने माणस ना जण्या बधा जीवे तो धरती पर समाय नहिं।

—गुजराती कहावत

२१ मृत्यु-विज्ञान

१ यावद्बद्धो मरुद्देहे, यावच्चित्तं निराकुलम् ।
यावद् दृष्टिभ्रुवो मध्ये, तावत्कालभयं कुतः ॥

—हठयोगप्रदीपिका ४०

जब तक वायु शरीर में निबद्ध है, मन शान्त है और दृष्टि भोंहों के मध्य-भाग में स्थित है, वहाँ तक मृत्यु का भय नहीं होता ।

२ श्वास दाहिना जो चले, तीन रात दिन तीन ।
काया बारह मास है, अमृत जान प्रवीण ॥१॥
दो दिन तक पिंगल चले, आयु वर्ष दो जान ।
आठ प्रहर से आयु है, वर्ष तीन पहचान ॥२॥
इड़ा माहिं जो श्वास है सोलह दिन एक साथ ।
एक मास जीवन रहे, कहते अमृत नाथ ॥३॥
सूर्य और गति श्वास की, दिवस तीस इकतीस ।
दो दिन जीवन शेष है, अमृत बिस्वाबीस ॥४॥
बाएँ नहीं दाहिने नहीं, चले सुषुम्ना श्वास ।
घड़ी पांच के प्राण हैं, अमृत का विश्वास ॥५॥
इड़ा पिंगला है नहीं, नहीं सुषुम्ना होय ।
मुख से श्वासोच्छ्वास है, चार घड़ी तन खोय ॥६॥
भानु चले जो रात को चन्द चले दिन माहिं ।
दूर मृत्यु संशय नहीं, रोग न काया पाहिं ॥७॥

—श्रीविलक्षणअवधूत-स्वरोदय अंग ८

२२ मृत्यु का भय

१ मरणसमं नत्थि भयं।
मरण के समान दूसरा कोई भय नहीं है।

२ दुख री दाधी डोकरी, कहै परमेश्वर मार।
साप ज कालो नीकल्यो, न्हाठी घर सूं बार॥

—**राजस्थानी दोहा**

३ **आप विदेह कैसे** ? **मैत्रेयी** के इस प्रश्न पर राजा **जनक** ने कहा—मौका आने पर उत्तर दूंगा। एक दिन **'मैत्रेयी को शाम के चार बजे फाँसी होगी'** ऐसा हुक्म देकर उन्हें खाने का निमन्त्रण दिया। भयभीत मैत्रेयी ने भोजन किया, भोजन अलौना था लेकिन मैत्रेयी को कुछ पता नहीं लगा। जनक ने समझाते हुए कहा—आपका मरण चार बजे निश्चित था फिर भी आप बेभान हो गईं। मेरा मरण तो अनिश्चित है, फिर मुझे देह का भान कैसे रहे। देह का भान न रहने से ही मुझे **विदेह** कहते हैं।

४ **बादशाह** बहुत मोटा-ताजा था। कुछ हल्का होने के लिये **लुकमान हकीम** से दवा पूछी ! उसने कहा—चालीस दिनों में मर जाओगे ! मरने के भय से बादशाह का खाना-पीना छूटा एवं शरीर का वजन घट गया।

५ पग मूकतां पाप छे, जोतां झेर छे ने माथे मरण छे—एम बिचारी आज ना दिवस मां प्रवेश कर !

—**श्रीमद्राजचन्द्र**

२३ मरते समय भी निर्भय

१ न संतसंति मरणंते, शीलवंता बहुस्सुया।

—उत्तराध्ययन ५।२९

चारित्रवान्-बहुश्रुत महात्मा मरण के समय भयभीत नहीं होते।

२ सूखे नारियलवत् आत्मा व शरीर को भिन्न समझनेवाले ही मरते समय निर्भय रह सकते हैं।

३ यस्मिन् दण्डधरः स्मरिष्यति सखे ! सोप्यस्ति कोपि क्षणः।

—संवेगद्रुमकन्दली

अरे मित्र ! वह क्षण कितना विचित्र होगा, जबकि यमराज तुम्हारा स्मरण करेगा।

४ अयि मौत ! आकर मुझे अपना डंक मार दिखला।

—हजरतमसीह

५ जा मरने से जग डरै, मो मन में आनन्द।
कब मरिहों कब पाइहों, पूरन परमानन्द॥

—कबीर

६ हे प्रभो ! अब मैं अपनी आत्मा को तुम्हारे हाथ में सौंपता हूं।

—अमेरिका को खोजनेवाला कोलम्बस

७ अब मैं अपनी जिन्दगी का आखिरी नाटक करने जा रहा हूं।

—शेक्सपियर

८ अब मैं इस दुनिया से विदा ले रहा हूं।

—भारत में अंग्रेजी हकूमत की शुरुआत करनेवाला रोबर्टक्लाइव

उत्तममरण

१ दो मरणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं
णिग्गंथाणं निच्चं वन्नियाइं जाव अणुन्नायाइं भवन्ति,
तं जहा—पाओवगमणे चेव, भत्तपच्चक्खाणे चेव।

—स्थानांग २।३।१०२

श्रमण भगवान महावीर ने दो प्रकार के मरण साधुओं के लिए प्रशस्त कहे हैं—यावत् उनकी आज्ञा है—पादपोपगमन और भक्तप्रत्याख्यान।

२ ऑल्स वेल दैट एंड्स बेल।

—अंग्रेजी कहावत

जिसका अंत (मरण) अच्छा है, उसका सब कुछ अच्छा है।

३ साथ जन्म के मरण को, जिसने जान लिया।
वह हंसता रोता नहीं, तत्त्व पिछान लिया॥

◆ अमर बनाए जो हमें, है उसकी दरकार।
मरण बढ़े जिस मरण से, वो न हमें स्वीकार।

—दोहा-संदोह

४ आनन्द से जीने के लिए सैंकड़ों शास्त्र, हजारों युक्तियां और लाखों करोड़ों औषधियां हैं। जैसे—जिन्दगी को बचाने के लिए वैद्यक शास्त्र, जिन्दगी को टिकाने के लिए पाकशास्त्र, जिन्दगी की सहायता के लिए कृषि—विद्या, एवं जिन्दगी को सुखमय बनाने के लिए व्यापार का निर्माण हुआ है, लेकिन आनन्दपूर्वक कैसे मरना इसकी विधि केवल महर्षियों की वाणी में है। उसका सार यही है कि मरते समय शान्त बनजाओ, पापों की आलोचना करलो और प्रभु के चरणों में अपना सर्वस्व अर्पण करदो!

—संकलित

●

२५ अमरत्व

१ क्रियाकाण्ड से, प्रजनन से व धन से नहीं, अमरत्व तो त्याग से मिलता है।

—वेद

२ जो अपने जीवन की आहुति देता है, वही अमरजीवन पाता है।

—ईसा

३ अगर तुम अमर बनना चाहते हो तो पढ़ने लायक चीजें लिखो और लिखने लायक काम करो !

४ जो कुछ मानवीय है, वह सब अमर है।

—बुल्लवर लिटन

५ श्रेष्ठ व्यक्ति कभी नहीं मर सकता।

गेटे

६ बिना अमरत्व की भावना से प्रेरित हुए आजतक किसी ने अपने देश के लिए प्राणार्पण नहीं किया।

—सिसेरो

२६ मरने के बाद

१ व्हाइल देअर इज लाइफ, देअर इज होप

—अंग्रेजी कहावत

जब तक सांसा तब तक आशा ।

२ सांस त्यां सुधी आश, जीवै त्यां सुधी जंजाल अने दम त्यां सुधी दवा ।

—गुजराती कहावत

३ डैथ बिफॉर डिसआनर ।

—अंग्रेजी कहावत

जब तक प्राण, तब तक मान ।

४ आँख मीचाणी के नगरी लूंटाणी ।

◆ आप मुवां जग प्रलय !

◆ मरनार ने उचकनार नी शी फिकर ।

—गुजराती कहावतें

५ मरयां पछै कुण देखण आवै ।

० उभां पगां री सगाई है ।

० मरयोड़ां लारै को मरीजै नी ।

राजस्थानी कहावतें

६ दाराणि य सुया चेव, मित्ताणि तह बंधवा,
जीवंतमणुजीवंति, मयं नाणुव्वयंति ते।

—उत्तराध्ययन १८।१४

स्त्री, पुत्र, मित्र और स्वजन जीते जी के ही साथी हैं, मरने पर साथ नहीं चलते।

७ मरते ही जितने यार थे, अगयार हो गए।
खाक में मिलाने को, तैयार हो गए।।

—उर्दू शेर

८ लीला की लगन माँह ज्ञान की जगन नाँह,
जग न रहाय नर! तउ न रहायवो।
चले जर कौन-वट्ट को न यहाँ करत हठ,
नदी तट तरु कौन भांति ठहरायवो।
सपना जहान तामें अपना निदान कौन,
जपना किसन! जान तातें दुःख जायवो।
मोह में मगन सगमग ना धरै है पग,
नग न चलेंगे संग नगन चलायवो।

—किसनबावनी

९ जैते मनि मानिक हैं जोरे मनि-मानिक है,
धरा में धरे हैं सो तो धरा ही धराय वो।
एक भूख राख! भूख राख मत भूषन की,
वह भूख राख जन भूख न बनायवो।
देह-देह-देह! फिर पायवो न एह देह,
कहा जानूं यह जीव कौन जोन जायवो।

गमन के समय नग गनन-गनन देख,
नग न चलेंगे संग नगन चलायवो

—भाषाश्लोकसागर

९ अब तो घबरा कर, यह कहते हैं कि मर जाएँगे।
पर मर कर भी चैन न पाया तो किधर जाएँगे ?

—उर्दू शेर

१० **मृत जीवित नहीं होता—**

(क) उज्जड़ खेड़ा फिर बसै, निर्धन धनिया होय।
वीत्या दिन नहिं बाहुड़े, मुआ न जीवित होय॥

—राजस्थानी दोहा

(ख) डेड मैन टेल्स न्यूटल।

—अंग्रेजी कहावत

मरा हुआ आदमी माथा नहीं उठाता।

(ग) मसाणा गयोड़ा मुड़दा आगै ही पाछा आया हा !

—राजस्थानी कहावत

११ **मरने के बाद प्रशंसा—**

मूई भैंसनां मोटा डोला, मूई भैंसुनुं घी घणुं।
० जीवता लाखनां ने मूआ सवालाखनां।

—गुजराती कहावत

१२ **मरने के बाद गति—**

पंचविहे जीवस्स निज्जाणमग्गे पन्नत्ते, तं जहा—
पाएहिं, ऊरूहिं, उरेणं, सिरेणं सव्वंगेहिं। पाएहिं निज्जाणमाणे णिरयगामी भवइ, ऊरूहिं णिज्जाणमाणे तिरियगामी भवइ, उरेणं णिज्जाणमाणे मणुयगामी भवइ, सिरेणं णिज्जाणमाणे देवगामी भवइ, सव्वंगेहिं णिज्जाणमाणे सिद्धिगइ—पज्जवसाणे पन्नत्ते।

—स्थानांग ५।४६१

जीव निकलने के पांच मार्ग माने गये है—१ पैर, २ जङ्घा, ३ हृदय, ४ मस्तक ५ सर्वअङ्ग ।

(१) जो जीव दोनों पैरों से निकलता है, वह नरकगामी होता है ।

(२) दोनों जंघाओं से निकलनेवाला जीव तिर्यञ्चगति में जाता है ।

(३) हृदय (छाती) से निकलनेवाला जीव मनुष्य गति में जाता है ।

(४) मस्तक से निकलनेवाला जीव देवों में जाकर पैदा होता है

(५) जो जीव सभी अंगों से निकलता है, वह जीव सिद्धगति में जाता है ।

२७ मरण के भेद आदि

१ पंचविहे मरणे पन्नत्ते, तं जहां—
आवीचियमरणे, ओहिमरणे, आतिंतियमरणे, बालमरणे, पंडितमरणे।
—भगवती १३।७।४९६

पाँच मरण कहे हैं—

१ **आवीचिमरण**—आयुकर्म के भोगे हुए पुद्गलों का प्रत्येक क्षण में अलग होना आवीचिमरण है।

२ **अवधिमरण**—नरक आदि गतियों के कारणभूत आयुकर्म के पुद्गलों को एक बार भोग कर छोड़ देने के बाद जीव फिर उन्हीं पुद्गलों को भोग कर मृत्यु प्राप्त करें तो बीच की अवधि को अवधिमरण कहते हैं—अर्थात् एक बार भोगकर छोड़े हुए परमाणुओं को दुबारा भोगने से पहले-पहले जब तक जीव उनका भोगना शुरू नहीं करता, तब तक अवधिमरण होता है।

३ **आत्यन्तिकमरण**—आयुकर्म के जिन दलिकों को एक बार भोग कर छोड़ दिया है, यदि उन्हें फिर न भोगना पड़े तो उन दलिकों की अपेक्षा जीव का आत्यन्तिकमरण होता है।

४ **बालमरण**—व्रतरहित प्राणियों की मृत्यु बालमरण है।

५ **पण्डितमरण**—सर्वविरतिसाधुओं की मृत्यु को पण्डितमरण कहते हैं।

२ **मृत्यु के द्वार**—

अनुचितकर्मारम्भः, स्वजनविरोधो बलीयासि स्पर्धा।
प्रमदाजनविश्वासो, मृत्योर्द्वाराणि चत्वारि ॥
—हितोपदेश २।१४८

(१) अनुचितकार्य का प्रारम्भ (२) स्वजनों का विरोध (३) बलिष्ठों के साथ ईर्ष्या (४) स्त्रियों का विश्वास। ये चार मृत्यु के द्वार हैं।

३ **मृत्यु के कारण—**

(क) दुष्टभार्या शठं मित्रं, भृत्युश्चोत्तरदायकः।
ससर्पे च गृहे वासो, मृत्युरेव न संशयः॥

—चाणक्यनीति १।५

दुष्ट स्त्री, ठग मित्र, मुख पर उत्तर देनेवाला नौकर और सर्पसहित घर में निवास—ये चारों ही निःसंदेह मृत्यु के कारण हैं।

(ख) हिचकी खाँसी उबासी, तीनूं काल री मासी।

— राजस्थानी कहावत

४ **पांच भूतों का दिया हुआ मकान**—खास काम के लिए एक वणिक ने पंचों से मकान लिया, लेकिन मूर्खतावश मालिक बन बैठा। आखिर वारंट निकला। पांच भूत पंच हैं, आत्मा वणिक हैं, मनुष्यशरीर समय पर खाली न करने से मृत्यु वारंट लेकर आती है।

५ चोद्दस्सरज्जुलोए, गोयम ! बालग्गकोडिमित्तंपि।
तं नत्थि पएस जत्थ, अणंतमरणे न संसारे॥

—महानिशीथ अ० ५

चौदह रज्ज्वात्मक लोक में बाल के अग्रभाग जितना भी स्थान खाली नहीं है, जहाँ इस जीव ने अनन्तबार मरण प्राप्त न किया हो।

१ आत्महत्या के कई कारण हैं जैसे—धार्मिकता का अभाव, बेकारी, रोग, परीक्षा में असफलता, व्यापार में घाटा, दहेज-प्रथा, असफल-प्रेम आदि-आदि।

२ भारत में प्रतिवर्ष आत्महत्याएँ लगभग एक लाख तक पहुंच जाती हैं। उनमें पहला नम्बर मद्रास का है। फिर क्रमशः आन्ध्र, मैसूर, बंगाल एवं महाराष्ट्र का है। दिल्ली में प्रतिचालीस घंटों में एक आत्महत्या होती है।

विश्व में आत्महत्या करनेवाले ६२ प्रतिशत तीस वर्ष से नीची आयु के हैं, जिनमें २० प्रतिशत अठारह वर्ष तक हैं और ४२ प्रतिशत अठारह से तीस वर्ष की उम्रवाले हैं। विश्व में हर तीसरे विद्यार्थी की मृत्यु आत्म-हत्या से होती है।[1]

—जैनभारती पृष्ठ २७, १६ जून १९६८ से संकलित

३ **तांत्रिक मोतीलाल की आत्महत्या—**

बांदा (उत्तर-प्रदेश) से ६४ किलोमीटर दूर कमासीन गाँव का निवासी मोतीलाल सिद्धहस्त तांत्रिक था। वह देखते-देखते सांप को काट कर जोड़ देता था। इससे उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई थी।

---

१ अमरीका में हर ४५ मिनिट में एक आत्महत्या होती है एवं हर १२० मिनिट में एक व्यक्ति पागल होता है।

गत २८ सितंबर को उसने यह परीक्षण आदमी पर करने की सोची और तो कोई नहीं मिला, वह अपने छह वर्ष के बच्चे को गांव के बाहर ईंट के भट्टे पर ले गया और अबोध बच्चे की गर्दन काटकर तंत्रविद्या के बल पर जोड़ने का प्रयत्न करने लगा, पर उसमें वह बुरी तरह विफल रहा। इससे खिन्न होकर उसने रेल से कटकर आत्महत्या कर ली। पुलिस को उसके कपड़े से एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था कि उसने उक्त विफलता के कारण आत्महत्या कर ली।

—**नवभारतटाइम्स ६, अक्टूबर १९७२**

२६ अन्तिम-संस्कार की अनोखी प्रथाएँ

१ मनुष्य जीवन का अन्तिम अध्याय होता है—मृत्यु। मृत्यु के बाद मानव-शव का विभिन्न देशों में विभिन्न प्रकार से अन्तिम-संस्कार किया जाता है। कहीं शव को जलाया जाता है, कहीं कब्र खोदकर दफना दिया जाता है और कहीं-नदी, समुद्र, या पोखरों में बहा दिया जाता है। परन्तु कई देशों में मानव-शव का अन्तिम संस्कार इस रूप में किया जाता है कि जिसे, जान—सुनकर हमें आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है।

क. **मैक्सिको** के लोग मृत्यु पर खुशियां मनाते हैं। मृत्यु भी एक नया जीवन है—ऐसी उनकी धारणा है। मैक्सिको के लोगों की **'शव-पेटी'** चमकदार रंग और चित्रों से सुसज्जित होती है। जनाजे में लोग गाते-बजाते हैं और कब्र पर हरसाल उनके सम्बन्धी एवं मित्रगण संगीतगोष्ठी का आयोजन करते हैं। इस तरह वहाँ सामूहिक रूप से मरणोत्सव मनाया जाता देखकर, स्वयं अपने लिए ही दूकानों में जाकर शवपेटी पसन्द करना, शवयात्रा के समय कौन-कौन-से राग और गीत गाए जाएँ तथा मरने के बाद कब्र पर हरसाल होनेवाली गोष्ठियों में किस-किस को बुलाया जाए और कौन-कौन-से पकवान बनाएँ जाएँ, ऐसा निर्णय वे पूर्णतः वसीयत के रूप में छोड़ जाते हैं।

ख. बौद्धमतावलम्बी होने के कारण **बर्मा** में मृत्यु को निर्वाण के रूप माना जाता है, जिसका अभिप्राय है—मनुष्य का दुःखों से छुटकारा। अतः

मृत्यु के अवसर पर बर्मी लोग रोना-पीटना बुरा समझते हैं। उसकी शवयात्रा भी विचित्र-प्रथाओं से युक्त होती है। शव को एक गाड़ी पर ले जाया जाता है। शवयात्रा का मार्ग ऐसा नियत किया जाता है कि उसमें **पैगोडा** (बौद्धमन्दिर) अवश्य पड़े। **पैगोडा** को आते ही गाड़ी को रोक दिया जाता है और उसे आगे-पीछे काफी झुलाया जाता है। इस समय लोग खूब बाजे बजाते हैं। इन सबका अभिप्राय यह है कि मृतक की आत्मा भगवान बुद्ध की शरण में जा पहुंची।

ग. आस्ट्रेलिया की कुछ आदिमजातियाँ स्वाभाविकरीति से मृत्यु होने में विश्वास नहीं करतीं। मौत का कारण वे जादू-टोना ही समझती हैं। इसलिए मरने से संबन्ध रखती हुई कई रस्में उनमें होती हैं। जब व्यक्ति मृत्युशय्या पर पड़ता हैं,उसी समय से शोक की रस्म का आरम्भ हो जाता है। लोग रोते-चिल्लाते अचेत होने लगते हैं। औरतें अपनी जांघ पर घाव करने लगती हैं। कभी-कभी घाव इतने गहरे किए जाते हैं कि स्त्रियाँ खड़ी भी नहीं रह सकतीं। मृत्यु-शय्या पर पड़े व्यक्ति की मृत्यु होते ही स्त्री-पुरुष छड़ी-लाठी हाथ में लेकर भोंकते-पीटते जुलूस बनाकर निकलते हैं। उस मौके पर एक-दूसरे के आघात से बचने की कोशिश नहीं की जाती, इस लिए बहुत से लोगों का शरीर लहू-लुहान हो जाता है। फिर लाश को लेजाकर पेड़ की खोह में रख दिया जाता है। तीन दिन बाद लोग जाकर उस खोह को देखते हैं और पता लगाते हैं कि वहाँ कोई पशु-पक्षी का चिह्न तो विद्यमान नहीं है। यदि कोई चिह्न उन्हें मिलता है तो वे चिह्न द्वारा शत्रु का पता लगाते है। जिसके जादू से व्यक्ति मारा गया है, उससे पूरा-पूरा बदला लेते हैं।

घ. **अफ्रीका के पायुदान कबीले** में जब कोई व्यक्ति दूसरे कबीले के लोगों से लड़ते हुये मारा जाता है, तब उसके शव को घर लाया जाता है और उसकी विधवा पत्नी अपने मृतक-पति का सिर काट लेती है। पत्नी उसकी खोपड़ी को खाल और बालों से अलग करके धोती है और फिर

अपने गले में पहन लेती है। लोग मृतक-पति के तरकश में से एक तीर निकाल कर उसकी खोपड़ी में घोंप देते हैं। ताकि दूसरों को यह मालूम हो जाय कि उसका पति लड़ता हुआ मारा गया है। जितने दिनों तक मृतक का मातम रहता है, उतने दिनों तक विधवा उस खोपड़ी को गले में डाले रहती है। इसके बाद उसे उतार कर अपनी झोंपड़ी के दरवाजे पर टांग देती है। इस सम्बन्ध में सबसे विचित्र बात यह है कि जिस स्त्री को अपने मृतक पति का सिर नहीं मिलता, उसे अत्यन्त भाग्यहीन समझा जाता है और गांव से बाहर रहना पड़ता है।

च. **तिब्बत** की अन्त्येष्टिक्रिया भी बड़ी विचित्र है। वहां पर कफन की आवश्यकता नहीं होती, केवल दो लकड़ियों पर आड़ी-आड़ी दो लकड़ियाँ बांध दी जाती हैं। इसी पर मृत व्यक्ति को रख दिया जाता है। मुर्दे के ऊपर श्वेत रंग का कपड़ा डाल दिया जाता है। फिर उसे आसानी से दो आदमी उठा ले जाते हैं। इसके पश्चात् एक लामा (पुरोहित) बुलाया जाता है और अन्त्येष्टि क्रिया के लिए शुभ मुहूर्त पूछा जाता है। **चार तरह की क्रियाएं होती है।**—पानी में बहाना, अग्नि में जलाना, धरती में गाड़ना या जीव-जन्तुओं को खिलाना। लामा जो भी क्रिया उचित समझता है, करवा देता है।

छ. **दक्षिणी** अमेरिका के सबसे विशाल देश **ब्राजील** में एक पर्वतीय क्षेत्र का नाम **डेलायो** है। वहाँ साल-भर तक एक भिन्न प्रकार की हवा चला करती है। उस हवा में यह गुण है कि शव कितने ही वर्षों तक खुला क्यों न पड़ा रहे, वह विकृत नहीं होता। इसी कारण, उस प्रदेश के निवासी अपने मुर्दों को न तो कब्र में गाड़ते हैं और न जलाते हैं बल्कि पहाड़ी के अंदर किसी सुरंग में मुर्दों को दीवार के सहारे खड़ा कर देते हैं। मृतक के शरीर से वस्त्र भी नहीं उतारते। कई युगों के बाद भी ऐसे शव, दूर

से जीवित-मनुष्य के समान लगते हैं, किन्तु काफी समय के बाद मुर्दे धीरे-धीरे सूखने लगते हैं और सूखकर मिट्टी में मिल जाते हैं।

ज. **सुमात्रा द्वीप** से उत्तर की ओर पहाड़ियों के अंचल में निवास करनेवाले बौनों की बस्ती में जब कोई मर जाता है, तब ये लोग तुरही बजाते हैं और लाश को जमीन में गाड़ कर गांव से बाहर भाग जाते हैं। कुछ महीनों बाद लौटकर लाश को कब्र से निकालते हैं और समुद्र के जल से उसे धोते हैं। मृतक के प्रति श्रद्धा जाहिर करने के लिये अस्थि-पंजर के चौगिर्द नाचते हैं। उसकी खोपड़ी अलग करके मृतक के सबसे अधिक प्रियजन को दे दी जाती है, जिसे वह रस्सी में बांधकर गले में लटका लेता है।

झ. **मलाया** में एक जाति रहती है **सकाई**। इस जाति के लोगों में मृत्यु का इतना भय होता है कि जब किसी व्यक्ति की गांव में मृत्यु हो जाती है तो पूरा का पूरा गांव जला दिया जाता है। अन्त्येष्टिक्रिया की यह विनाशलीला देखना जहां आश्चर्यजनक होता है, वहीं इनके विश्वास को देखकर भी कम कौतूहल नहीं होता। इनका विश्वास है कि मरने के बाद भी मृत व्यक्ति को भोजन की आवश्यकता होती है। इसलिए मृतक-शरीर के मुँह में बांस की एक नली लगा दी जाती है और वह नली इतनी बड़ी होती है कि कब्र के बाहर भी इसका ऊपरी भाग निकला रहता है। इस नली के द्वार से परिवार के लोग प्रतिदिन भोजन तथा पानी पहुंचाते रहते हैं, किसी सरदार या मुखिया के मरने पर उसकी अर्थी इतनी बड़ी बनाई जाती है कि उसे सौ-सवा सौ आदमी से कम उठा ही नहीं सकते।

ट. **आस्ट्रेलिया**—की कई जन-जातियों में यह प्रथा है कि यदि किसी स्त्री का पति मर जाए, तो उसका जीवन बड़ा ही दुःखमय हो जाता है। उसे बहुत दिनों तक मातम मनाना पड़ता है। अन्त्येष्टिक्रिया के पहले स्त्री को अपना सिर मूंडना पड़ता है और प्रायः दो वर्ष तक उसे मौनव्रत

धारण किए रहना पड़ता है। इस अवधि में वह केवल संकेतों द्वारा बात-चीत करती है। विधवाओं को अपने मृतपति की कब्र पर एक झोंपड़ी बनानी पड़ती है और सफेद मिट्टी की एक टोपी, (जिसका वजन चार-पाँच सेर के लगभग होता है,) पहनकर उसी झोंपड़ी में रहना पड़ता है। माताएँ अपने मृत बच्चों को महीनों और कभी-कभी वर्षों तक लिए घूमती रहती हैं। बच्चे की लाश धूएँ तथा अन्य कई तरीकों से अच्छी तरह सुखा ली जाती है।

—'देश-विदेश की अनोखी प्रथाएँ' (पुस्तक से)

परिशिष्ट

☐ वक्तृत्वकला के बीज

भाग ६ और ७ में

उद्धृत ग्रन्थों व व्यक्तियों की नामावली

ग्रन्थ-सूची :

१. अंगुत्तरनिकाय
२. अत्रिसंहिता
३. अथर्ववेद
४. अध्यात्मकल्पद्रुम
५. अन्ययोगव्यवच्छेद—
द्वात्रिंशिका
६. अपरोक्षानुभूति
७. अभिज्ञानशाकुन्तल
(शाकुन्तल)
८. अभिधानचिन्तामणि
(हेमकोष)
९. अभिधानराजेन्द्रकोष
१०. अमितगति-श्रावकाचार
११. अमूल्यशिक्षा
१२. अष्टकप्रकरण-(वादाष्टक)
१३. अष्टाङ्गहृदय
१४. आइने-अकबरी
१५. आकर्षणशक्ति
१६. आचारांग-चूर्णि
१७. आचारांगसूत्र
१८. आचार्यशिवनारायण की
रिपोर्ट
१९. आत्मविकास
२०. आत्मानुशासन
२१. आपस्तम्बस्मृति
२२. आवश्यकनिर्युक्ति
२३. आवश्यकसूत्र
२४. इतिहासतिमिरनाशक
२५. इष्टोपदेश
२६. इस्लामधर्म क्या कहता है?
२७. उज्ज्वलवाणी
२८. उत्तररामचरित
२९. उत्तराध्ययनसूत्र
३०. उद्भटसागर
३१. उर्दू शेर
३२. उपदेशतरंगिणी
३३. उपदेशप्रासाद
३४. उपदेशसुमनमाला
३५. ऋग्वेद
३६. ऋषिभाषित
३७. ऐतरेयब्राह्मण
३८. ओघनिर्युक्ति
३९. औपपातिकसूत्र
४०. कठोपनिषद्

४१. कथासरित्सागर
४२. कल्पतरु
४३. कल्याण—संत अंक
४४. कल्याण—बालकअंक
४५. कहावतें—
(क) अंग्रेजी कहावत
(ख) इटालियन ,,
(ग) इरानी ,,
(घ) उर्दू ,,
(ङ) गुजराती ,,
(च) चीनी ,,
(छ) जापानी ,,
(ज) पंजाबी ,,
(झ) पारसी ,,
(ञ) बंगला ,,
(ट) मराठी ,,
(ठ) राजस्थानी ,,
(ड) संस्कृत ,,
(ढ) हिन्दी ,,
४६. कात्यायनस्मृति
४७. किरातार्जुनीय
४८. किशनबावनी
४९. कुमारसंभव
५०. कुारनशरीफ
५१. केनोपनिषद्
५२. कौटलीय-अर्थशास्त्र
५३. खुले आकाश में
५४. गणधरवाद
५५. गरुडपुराण
५६. गीता (श्रीमद्भगवद्गीता)
५७. गुरुग्रन्थसाहिब
५८. घटखर्पर का नीतिसार
५९. चन्दचरित्र (संस्कृत)
६०. चरकसंहिता
६१. चरकसूत्र
६२. चाणक्यनीति
६३. चाणक्यसूत्र
६४. छान्दोग्य-उपनिषद्
६५. जातक
६६. जीवनलक्ष्य
६७. जैन पाण्डव-चरित्र
६८. जैन-भारती
६९. जैनसिद्धान्त-दीपिका
७०. ज्ञानप्रकाश
७१. ज्ञानार्णव
७२. तत्त्वामृत
७३. तत्त्वार्थसूत्र
७४. तन्दुलवैचारिक-प्रकीर्णक
७५. ताओ-उपनिषद्
(ताओतेह किंग)
७६. तात्त्विक त्रिशती
७७. तीन बात
७८. तैत्तिरीय-उपनिषद्
७९. त्रिषष्ठिशलाका पुरुषचरित्र

८०. थेरगाथा
८१. दक्षस्मृति
८२. दशकुमारचरित्र
८३. दशवैकालिकचूलिका
८४. दशवैकालिक-निर्युक्ति
८५. दशवैकालिकसूत्र
८६. दशाश्रुतस्कन्ध
८७. दीघनिकाय
८८. दृष्टान्तशतक
८९. देवीभागवत
९०. देश-विदेश की अनोखी प्रथाएं
९१. दोहा-द्विशती
९२. दोहा-संदोह
९३. धम्मपद
९४. धर्मकल्पद्रुम
९५. धर्म के नाम पर
९६. धर्मयुग (साप्ताहिक)
९७. नन्दीटीका
९८. नलविलास
९९. नवभारत टाइम्स (दैनिक)
१००. नालन्दा-विशालशब्दसागर
१०१. नियमसार
१०२. निशीथ-भाष्य
१०३. निश्चयपञ्चाशत्
१०४. नीतिवाक्यामृत
१०५. नीतिसार
१०६. नैषधीयचरित्र (नैषध)
१०७. न्युयार्क ट्रिब्यून हेराल्ड
१०८. पंचतंत्र
१०९. परमात्म-द्वात्रिंशिका
११०. पराशरस्मृति
१११. पहेलवी टैक्स्ट्स
११२. पातंजलयोगदर्शन
११३. प्रकरणरत्नाकर
११४. प्रज्ञापना
११५. प्रशमरति
११६. प्रसंगरत्नावली
११७. प्रास्ताविकश्लोकशतक
११८. बृहत्कल्पभाष्य
११९. बृहत्कल्प-सूत्र
१२०. बृहदारण्यकोपनिषद्
१२१. बृहन्नारदीय-पुराण
१२२. बृहस्पतिस्मृति
१२३. बाइबिल
१२४. ब्रह्मवैवर्त पुराण
१२५. ब्रह्मानन्दगीता
१२६. भक्तिसूत्र
१२७. भक्तामर-विवृति
१२८. भगवतीसूत्र
१२९. भर्तृहरि-नीतिशतक
१३०. भर्तृहरि-वैराग्यशतक
१३१. भर्तृहरि-शृंगारशतक
१३२. भवभूति के गुणरत्न

१३३. भारतज्ञान-कोष
१३४. भारतीय अर्थशास्त्र
१३५. भाषाश्लोकसागर
१३६. भोज-प्रबन्ध
१३७. मज्झिमनिकाय
१३८. मनुस्मृति
१३९. मनोनुशासन
१४०. मरुभारती
१४१. महाभारत
१४२. मारवाड़ी-भजनमाला
१४३. मिदरास निर्गमन रब्बा (यहूदी धर्मग्रन्थ)
१४४. मुक्तिकोपनिषद्
१४५. मुण्डकोपनिषद्
१४६. मुद्राराक्षसनाटक
१४७. मुनिश्रीजंवरीमलजी का संग्रह
१४८. मृच्छकटिक
१४९. मेघदूत
१५०. मोक्षपाहुड
१५१. यजुर्वेद
१५२. याज्ञवल्क्यस्मृति
१५३. यालकत शिमेओ P R O (यहूदी धर्मग्रन्थ)
१५४. यू. एन. डेमोग्राफिक इयर बुक-१९६९ तथा १९७०-७१
१५५. यू० री० पी० डी० ज
१५६. योगदर्शनभाष्य
१५७. योगवाशिष्ठ
१५८. योगशास्त्र
१५९. योगशिखोपनिषद्
१६०. योगसार
१६१. रघुवंश
१६२. रश्मिमाला
१६३. राजप्रश्नीयसूत्र
१६४. रामचरितमानस
१६५. लघुयोगवाशिष्ठसार
१६६. लघुवाक्यवृत्ति
१६७. लूका (बाइबिल)
१६८. लोकप्रकाश
१६९. लोकोक्तियाँ—
(क) अरबी लोकोक्ति
(ख) चेक ,,
(ग) लैटिन ,,
(घ) स्पेनिश ,,
१७०. वायु पुराण
१७१. वाल्मीकिरामायण
१७२. विक्रमोर्वशीय-नाटिका
१७३. विचित्रा (त्रैमासिक)
१७४. विज्ञान के नये आविष्कार
१७५. विदुरनीति
१७६. विवेकचूड़ामणि
१७७. विवेकविलास
१७८. विशेषावश्यक
१७९. विश्वज्ञानकोष

१८०. विश्वदर्पण

१८१. वीरअर्जुन

१८२. वेद

१८३. वेदान्तदर्शन

१८४. व्यवहारभाष्य

१८५. व्याख्यान का मसाला

१८६. व्यासस्मृति

१८७. व्रताव्रत की चौपाई

१८८. शंकरप्रश्नोत्तरी

१८९. शतपथ ब्राह्मण

१९०. शान्तसुधारस

१९१. शार्ङ्गधर

१९२. शिशुपालवध

१९३. शुक्रनीति

१९४. सुश्रुत

१९५. श्राद्धविधि

१९६. श्रीमद्भागवत (भागवत)

१९७. श्री विलक्षणअवधूत–स्वरोदयअंग

१९८. श्वेताश्वतरोपनिषद्

१९९. संयुक्तनिकाय

२००. संवेगद्रुमकन्दली

२०१. सभातरंग

२०२. समयसार

२०३. समवायांगसूत्र

२०४. समाधिशतक

२०५. सरलमनोविज्ञान

२०६. सरिता

२०७. सवैयाशतक

२०८. सहलतस्तरी

२०९. साँख्यकारिका

२१०. सामायिकसूत्र

२११. सिन्दूर प्रकरण

२१२. सुभाषितरत्नखण्ड-मंजूषा

२१३. सुभाषितरत्न-भाण्डागार

२१४. सुभाषित संचय

२१५. सूक्तरत्नावलि

२१६. सूत्रकृताँगसूत्र

२१७. सोरठा-संग्रह

२१८. सोवियत भूमि

२१९. स्कन्धपुराण

२१०. स्थानांगसूत्र

२२१. स्याद्वादमंजरी

२२२. स्वरशास्त्र

२२३. हजरत बुखारी और मुस्लिम

२२४. हठयोगप्रदीपिका

२२५. हरितस्मृति

२२६. हर्षचरित

२२७. हितोपदेश

२२८. हिन्दी मिलाप (दैनिक)

२२९. हिन्दुस्तान (दैनिक)

२३०. हिन्दुस्तान (साप्ताहिक)

व्यक्ति नामावली :

१. अकबर
२. अक्खाभक्त
३. अमरमुनि
४. अरविन्दघोष
५. अरस्तू
६. अशोन-द-चाँसेल
७. अष्टावक्र
८. आचार्यतुलसी
९. इकबाल
१०. इब्बेसिना
११. ई. एच. चेपिन
१२. ईसरदास
१३. ईसा
१४. एक युवक सन्यासी
१५. एच. जी. बोन
१६. एच. डब्ल्यू. वीचर
१७. एडविन मार्कहम
१८. एडीसन
१९. एमी एल
२०. एम. जी. लीश्वर
२१. एमर्सन
२२. एपिक्टेट्स
२३. एरियन यूनानी
२४. एलकाट (अलकाट)
२५. कन्फ्यूसियस (कांगफ्यूत्सी)
२६. कबीर
२७. कवि कृपाराम
२८. कवि गंग
२९. कवि घासीराम
३०. कवि देवीदास
३१. कवि दीन
३२. कवि नाथूलाल
३३. कवि बांकीदास
३४. कविराज हरनामदास
३५. कार्डिनल
३६. कार्लमार्क्स
३७. कार्लाइल
३८. कालीदास
३९. कालूगणि
४०. किडलीयर
४१. किसनिया
४२. कुसुमदेव
४३. कोल्टन
४४. कोलम्बस

४५. गांधी
४६. गुरुनानक
४७. गुरुवशिष्ठ
४८. गेटे
४९. गोवर्धनाचार्य
५०. चकवस्त
५१. चाणक्य
५२. चेम्फर्ट
५३. चेस्टर फील्ड
५४. जगन्नाथ
५५. जर्मीटेलर
५६. जवाहरलाल नेहरू
५७. जानलोक
५८. जानसन
५९. जी. गफ
६०. जेम्जगार फील्ड
६१. टसर
६२. टाल्पेज
६३. टी कोगन
६४. टेनीशन
६५. टैगोर
६६. डा. हेराल्ड व्हीलर
६७. डार्विन
६८. डिकेन्स
६९. डिजरायली
७०. डेलकारनेगी
७१. डेविस ग्रेसन
७२. डैनियल
७३. ड्राइडेन
७४. तिरुवल्लुवर
७५. तुलसीदास
७६. थामसपेन
७७. थियोग्निस
७८. थ्यू फ्रास्टस
७९. दांते
८०. दादा धर्माधिकारी
८१. दिनकर
८२. देवेश्वर
८३. धनमुनि
८४. धूमकेतु
८५. ध्रमसीह
८६. नरसी भगत
८७. नलिन
८८. नेपोलियन
८९. पंडित श्रद्धारामजी
९०. पीथागोरस
९१. पेट्रार्च
९२. प्रेमचन्द
९३. पुरुषोत्तमदास टंडन
९४. प्लूटार्च
९५. प्लेटो
९६. पैट्रार्क
९७. पोप
९८. फीनेलन

९९. फ्रैंकलिन
१००. बटलर
१०१. बर्नार्डशा
१०२. बाइल्ड
१०३. बुल्लवर लिटन
१०४. बृहस्पति
१०५. बेकन
१०६. भूदरदास
१०७. मयाराम
१०८. म. नेकर
१०९. महात्मा बुद्ध
११०. महेन्द्रकुमार वशिष्ठ
१११. मान्टेस्क्यू
११२. मिकावर
११३. मिल्टन
११४. र्‌यूफस कोयेट
११५. रस्किन
११६. रहीम
११७. राजिया
११८. रामकृष्ण परमहंस
११९. रामतीर्थ
१२०. रामानन्द दोषी
१२१. रोमसिन
१२२. रोबर्ट क्लाईज
१२३. रोशफूको
१२४. लांग थेले
१२५. ला. फांते
१२६. लाबुयेर
१२७. लायड जार्ज
१२८. लावेल
१२९. लीटन
१३०. लुई ब्लेक
१३१. लुकमान हकीम
१३२. लूथर
१३३. लैसिंग
१३४. वरले
१३५. वर्क
१३६. वर्डसवर्थ
१३७. व्यास
१३८. वाल्टेयर
१३९. विक्टरह्यूगो
१४०. विज्म
१४१. विनोबा भावे
१४२. विलियम पेन
१४३. विवेकानन्द
१४४. विशपकम्बर लैंड
१४५. वीरजी
१४६. वृन्दकवि
१४७. वेदव्यास
१४८. शंकराचार्य
१४९. शार्ङ्गधर
१५०. शुक्राचार्य
१५१. शुभचन्द्राचार्य
१५२. शेक्सपियर

१५३. शेखसादी
१५४. शोपेन हॉवर
१५५. श्रीमद् राजचन्द्र
१५६. संत अगस्त
१५७. संत मेथ्यू
१५८. संत रैदास
१५९. सर अर्नेस्ट बोर्न
१६०. सर जान हरशल
१६१. सर पी सिन्डनी
१६२. सवेन्टिस
१६३. सिडनी स्मिथ
१६४. सिसरो
१६५. सी. सिमन्स
१६६. सुकरात
१६७. सुबन्धू
१६८. सुभाषचन्द्र बोस
१६९. सूरदास
१७०. सेनेका
१७१. सेन्टपाल
१७२. सेमुएल जानसन
१७३. स्टर्नर
१७४. स्वेट मार्टन
१७५. हक्सले
१७६. हजरत मसीद
१७७. हरिभद्रसूरि
१७८. हरिभाऊ उपाध्याय
१७९. हली बटेन
१८०. हार्वर्ट
१८१. हिटलर
१८२. हुट्टन
१८३. हेनरी वार्ड वीचर
१८४. होमर
१८५. व्हिट मैन
१८६. व्हैटले

लेखक की अप्रकाशित रचनाएँ :

□ **संस्कृत**

१. देवगुरुधर्म-द्वात्रिंशिका
२. प्रास्ताविक-श्लोकशतकम्
३. एकाह्निक-श्रीकालुशतकम्
४. श्री कालुगुणाष्टकम्
५. श्री कालुकल्याणमन्दिरम्
६. भाविनी
७. ऐक्यम्
८. श्री भिक्षुशब्दानुशासन-लघुवृत्तितद्धितप्रकरणम्

□ **गुजराती**

९. गुर्जरभजनपुष्पावली
१० गुर्जव्याख्यानरत्नावली

□ **हिन्दी**

११. वैदिकविचारविमर्शन
१२. संक्षिप्त-वैदिक विचारविमर्शन
१३. अवधान-विधि
१४. संस्कृत बोलने का सरल तरीका
१५. दोहा-संदोह
१६. व्याख्यानमणिमाला
१७. व्याख्यानरत्नमंजूषा
१८. जैन महाभारत—जैन रामायण आदि बीस व्याख्यान
१९. उपदेशसुमनमाला
२०. उपदेशद्विपञ्चाशिका
२१. पच्चीस बोल का सरल विवेचन

● **राजस्थानी**

२२. धनबावनी
२३. सवैयाशतक
२४. औपदेशिक ढालें
२५. प्रास्ताविक ढालें
२६. कथाप्रबन्ध
२७. छः बड़े व्याख्यान
२८. ग्यारह छोटे व्याख्यान
२९. सावधानी रो समुद्र

● **पञ्जाबी**

३० पञ्जाब-पच्चीसी

लेखक की प्रकाशित रचनाएँ :

☐ हिन्दी

१. सच्चा-धन
२. प्रश्न-प्रकाश
३. लोक-प्रकाश
४. ज्ञान-प्रकाश
५. श्रावक धर्म-प्रकाश
६. मोक्ष-प्रकाश
७. दर्शन-प्रकाश
८. चारित्र-प्रकाश
९. मनोनिग्रह के दो मार्ग
१०. चौदह नियम
११. भजनों की भेंट
१२. ज्ञान के गीत
१३. एक आदर्श आत्मा
१४. चमकते चांद
१५. जैन-जीवन
१६. सोलह सतियां
१७ से २३ वक्तृत्वकला के बीज (१ से ७ भाग तक)

☐ गुजराती

२४. तेरापंथ एटले शुं ?
२५. धर्म एटले शुं
२६. परीक्षक बनो !

☐ संस्कृत

२७. गणिगुणगीतिनवकम्

☐ उर्दू

२८. जीवन-प्रकाश
२९. सच्चा धन

●

वक्तृत्व कला के बीज

कृति और कृतिकार

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ युग प्रधान आचार्य श्री तुलसी के नेतृत्व में आज प्रगति-शिखर पर पहुँच रहा है। मुनि श्री धनराज जी 'प्रथम' (श्री धनमुनि) इस धर्म-संघ के बहुश्रुत विद्वान, सरस कवि, लेखक कुशल संग्रहकार, मधुर-प्रवक्ता और सु-योग्य शिक्षक संत हैं। आप संघ के सर्व-प्रथम शतावधानी हैं। वि० सं० २००४ माघ कृष्णा १४ रविवार को बम्बई में सर्व-प्रथम आपने शतावधान का प्रयोग कर लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया। संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी तथा उर्दू आदि भाषाओं में आपने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया है।

प्रस्तुत कृति वक्तृत्वकला के बीज आपकी एक श्रमसाध्य अद्वितीय कृति है। वक्तृत्व एवं लेखन के योग्य इतना उपयोगी विशाल संग्रह सम्भवतः किसी भी भाषा में अब [illegible] हुआ होगा। यह [illegible] कोश 'Encyclope[illegible]

इस मह[illegible]

श्री धनम[illegible]

जन्म - वि[illegible]

दीक्षा - वि[illegible]

कृतियां - लगभग [illegible]

रविवार को बम्बई में
आपने शतावधान का प्रयोग
को आश्चर्यचकित कर दिया
[illegible]त, हिन्दी, राजस्थानी, गुजरा[illegible]
[illegible] तथा उर्दू आदि भाषाओं में आ[illegible]
ग्रन्थों का प्रणयन किया है।
[प्र]स्तुत कृति वक्तृत्वकला के [illegible]
एक श्रमसाध्य अद्वितीय
[illegible]वं लेखन के योग्य

आवरण पृष्ठ के मुद्रक : मोहन मुद्रणालय, आगरा-२